राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 असदुद्दनी ओवैसी का फडणवीस पर हमला, बोले- हमारे पूर्वज.....

मैच गंवाकर बोले सूर्यकुमार यादव अभी 2 गेम बाकी हैं..... 11

वर्ष : 15 | अंक : 206 | नई दिल्ली, मंगलवार, 12 नवंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

हेमंत ने चंपई सोरेन को अपमानित किया, बदला लेगी झारखंड की जनता : शाह

सरायकेला, एजेंसी

सरायकेला। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने सोमवार को झारखंड की सरायकेला सीट पर पूर्व सीएम और भाजपा प्रत्याशी चंपई सोरेन के लिए वोट मांगे। उन्होंने कहा कि चंपई सोरेन ने लंबे समय तक शिबू और हेमंत सोरेन के साथ वफादारी के साथ काम किया, इसके बाद भी उन्हें अपमानित कर निकाल दिया। चंपई सोरेन भ्रष्टाचार बंद करवाना चाहते थे, पर वे इसके लिए तैयार नहीं थे। जब चंपई सोरेन ने घुसपैठ का मुद्दा उठाया तो हेमंत सोरेन ने कहा कि आप मुख्यमंत्री की गद्दी छोड़ दीजिए। उन्हें जिस दिन से निकाला गया, उसी दिन से झारखंड में हेमंत सरकार की उल्टी गिनती शुरू हो गयी। भाजपा चंपई सोरेन का सम्मान करेगी। केंद्रीय गृह मंत्री ने जेएमएम-कांग्रेस-राजद की सरकार को पूरे देश में सबसे ज्यादा भ्रष्ट सरकार करार दिया। उन्होंने कहा कि झारखंड के कांग्रेस सांसद के घर से 350 करोड़ रुपए मिले। रुपए गिनने के लिए लाई गईं 27 मशीनें थक गईं। आलमगीर आलम यहां की सरकार में मंत्री थे। उनके पीए के घर से 30 करोड़ रुपए पकड़े गए। हेमंत सोरेन और कांग्रेस ने इसपर कुछ भी नहीं कहा। गृह मंत्री ने पूछा कि यह किसका पैसा था? फिर उन्होंने कहा कि यह झारखंड के युवाओं का पैसा था, जो कांग्रेसी खा गए। अमित शाह ने कहा कि जिन्होंने भी झारखंड के युवाओं का पैसा लूटा है, उनसे भाजपा की सरकार बनते ही पाई-

पाई वसूला जाएगी। जिन्होंने भी भ्रष्टाचार किया है, उनकी जगह पीएम नरेंद्र मोदी के शासनकाल में जेल की सलाखों के पीछे हैं। शाह ने कहा कि इन्होंने एक हजार करोड़ का मनरेगा घोटाला, 600 करोड़ का जमीन घोटाला, 1000 करोड़ का खनन घोटाला और हजारों करोड़ का शराब घोटाला किया है। ये लोग सेना की जमीन तक खा गए। ये घोटाला करने वाली सरकार है। वहीं, मोदी जी गरीब बहनों को लखपति दीदी बनाने का काम करते हैं। उन्होंने लोगों से कहा कि हेमंत सोरेन की गारंटी कभी पूरी नहीं होती। जबकि मोदी की गारंटी पत्थर की लकीर होती है। उन्होंने कहा कि दस साल तक केंद्र में सोनिया मनमोहन की सरकार चली। उन्होंने झारखंड को मात्र 84 हजार करोड़ रुपये दिए। पर पीएम मोदी ने 3 लाख 90 हजार करोड़ रुपए दिए। लालू यादव, कांग्रेस और झामुमो के लोग मोदी जी का भेजा हुआ पैसा खा गए। शाह ने लोगों का आह्वान करते हुए कहा कि आप झारखंड में भाजपा की सरकार बनाएं, मोदी जी उनके खाते में 2100 रुपये भेजेंगे। हम 500 में गैस सिलेंडर देंगे। हेमंत ने युवाओं को बेरोजगारी भत्ता देने का वादा किया था, पर नहीं दिया। आप भाजपा की सरकार बनाओ, राज्य में दो लाख 85 हजार सरकारी नौकरियां भरी जायेंगी। राज्य के ऐसे लोग जो प्रधानमंत्री आवास बनायेंगे, उसमें फ्री बालू मिलेगा। आदिवासियों के कल्याण के लिए रिसर्च सेंटर बनायेंगे। शाह ने कहा कि कांग्रेस ने महाराष्ट्र में वादा किया है कि वे मुसलमानों को आरक्षण देंगे। अगर आरक्षण देंगे तो आदिवासियों और पिछड़ों का आरक्षण काट कर देना होगा। हम आदिवासियों और दलितों के आरक्षण में कटौती नहीं होने देंगे। संथाल परगना में बांग्लादेशी घुसपैठ के मुद्दे पर केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि घुसपैठिए झारखंड के युवाओं की नौकरी खा रहे हैं। वे आदिवासी बच्चियों से शादी कर दानपत्र के जरिए उनकी भूमि हड़प रहे हैं। हम यह कानून बदल देंगे। हमारी सरकार बनेगी तो सरहद के उस पार से परिंदा भी पर नहीं मार पाएगा। एक-एक घुसपैठिए को चिन्हित करने के लिए कमेटी बनेगी और उन्हें निकालेंगे। उन्होंने कांग्रेस पर आदिवासियों का अपमान करने का आरोप लगाते हुए कहा, 75 साल में कभी आदिवासी राष्ट्रपति नहीं बना। जब पीएम मोदी आए तब देश में आदिवासी की बेटी राष्ट्रपति बनी।

मौसम

अधिकतम तापमान 32.0°C

न्यूनतम तापमान 23.0°C

बाजार

सोना 80,405

चांदी 1,1000

सेंसेक्स 80,220

निफ्टी 24,472

संक्षिप्त खबरें

उपराष्ट्रपति मंगलवार को उज्जैन और लुधियाना जाएंगे

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ मंगलवार को मध्य प्रदेश के उज्जैन और पंजाब के लुधियाना का दौरा करेंगे। उपराष्ट्रपति सचिवालय के अनुसार उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ 12 नवंबर को उज्जैन (मध्य-प्रदेश) के एक दिवसीय दौरे पर जाएंगे। अपने इस दौरे पर उपराष्ट्रपति बतौर मुख्य अतिथि उज्जैन स्थित कालिदास संस्कृत अकादमी में आयोजित अखिल भारतीय कालिदास समारोह के उद्घाटन सत्र को संबोधित करेंगे। इसके अलावा उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ 12 नवंबर को पंजाब के लुधियाना के एक दिवसीय दौरे पर जाएंगे। उपराष्ट्रपति अपनी यात्रा के दौरान, लुधियाना के पंजाब कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा संक्रमण के मद्देनजर कृषि खाद्य प्रणालियों में परिवर्तन विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 2024 के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि होंगे।

तीर्थयात्रियों से भरी बस को ट्रक ने मारी टक्कर, 38 लोग घायल

सुलतानपुर। जिले के लम्भुआ थाना क्षेत्र में तीर्थयात्रियों से भरी एक बस को ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी, जिससे बस में सवार 38 लोग घायल हो गए। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि महाराष्ट्र के कल्याण जिले से 50 से अधिक तीर्थयात्रियों को लेकर आई टूरिस्ट बस को रविवार रात लगभग एक बजे अनियंत्रित ट्रक ने टक्कर मार दी। उन्होंने कहा कि इस हादसे में बस में सवार 38 लोग घायल हो गए जिनमें महिलाएं भी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि सभी घायलों को स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया जहां से नौ लोगों को गंभीर हालत के चलते सुलतानपुर के राजकीय मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। क्षेत्राधिकारी लम्भुआ अब्दुस सलाम के अनुसार, लगभग 15 दिन पहले महाराष्ट्र से तीर्थयात्रियों को लेकर बस मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश के तीर्थस्थलों के लिए रवाना हुई थी।

सत्तारूढ़ गठबंधन ने रोटी, बेटी और माटी पर वार किया इसलिए झारखंड की जनता बदलाव को संकल्पित : मोदी

रांची/नई दिल्ली, एजेंसी

रांची/नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को कहा कि झारखंड की जनता इस बार विधानसभा चुनाव में बदलाव को संकल्पित है और इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि सत्तारूढ़ गठबंधन ने राज्य की रोटी, बेटी और माटी पर वार किया है। मेरा बूथ, सबसे मजबूत कार्यक्रम के अंतर्गत नमो एप के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की झारखंड इकाई के कार्यकर्ताओं से संवाद करते हुए प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि वह जिस गति से झारखंड को आगे ले जाना चाहते हैं, उसके लिए वहां डबल इंजन सरकार की बहुत जरूरत है। उन्होंने कहा, झारखंड इस बार बदलाव करने को संकल्पित हो गया है। इसका सबसे बड़ा कारण तो ये भी है कि झामुमो, कांग्रेस व राजद ने झारखंड की रोटी, बेटी और माटी पर वार किया है। पिछले पांच साल इन्होंने बड़ी-बड़ी बातें कीं, लेकिन आज झारखंड के लोग देख रहे हैं कि इनके ज्यादातर वादे झूठे हैं। भाजपा झारखंड में रोटी, बेटी और माटी के मुद्दे को जोर-शोर से उठा रही है। इसके माध्यम से वह आदिवासी अस्मिता का सवाल उठाकर बांग्लादेशी घुसपैठियों द्वारा आदिवासी महिलाओं का कथित उत्पीड़न, धर्मांतरण, जमीन पर कब्जा और धोखा देकर विवाह करने तथा इसके परिणामस्वरूप आदिवासियों की संख्या में लगातार कमी आने का मुद्दा उठा रही है। राज्य में झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो), कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) की गठबंधन सरकार है। मोदी ने कहा कि राज्य में चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने महसूस किया कि लोगों में भ्रष्टाचार और परिवारवाद को लेकर भी भारी गुस्सा है। उन्होंने कहा, परिवारवादी पार्टियां, भष्टाचारी तो होती ही हैं। साथ ही समाज के प्रतिभाशाली नौजवानों के रास्ते में सबसे बड़ी दीवार होती हैं। झामुमो के परिवारवादियों ने कांग्रेस के शाही परिवार से ऐसी गंदी चीजें सीखी हैं, जिसमें उन्हें कुर्सी और खजाना इन दो ही चीजों की चिंता रहती है। नागरिकों की उन्हें परवाह ही नहीं होती है। उन्होंने कहा कि इसलिए इस बार के विधानसभा चुनाव में झामुमो गठबंधन की सत्ता से विदाई तय है। उन्होंने कहा, इसकी उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। प्रधानमंत्री ने झामुमो और कांग्रेस पर चुनावों के दौरान जनता से झूठे वादे करने और उन्हें ठगने का भी आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि पिछले विधानसभा चुनाव में भी सत्तारूढ़ गठबंधन के दलों ने बड़ी-बडी बातें कीं लेकिन आज झारखंड के लोग देख रहे हैं कि उनके सारे वादे अधूरे पड़े हैं। उन्होंने कहा, कांग्रेस जहां-जहां सत्ता में है, वहां के लोगों को उसने ऐसे ही ठगा है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खरगे जी (मल्लिकार्जुन खरगे) तो खुद कहते हैं कि इनकी पार्टी ने झूठी गारंटियां दी है। मोदी ने भाजपा कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे लोगों के बीच जाएं और कांग्रेस और उसके साथियों की सच्चाई बताएं और साथ ही उन्हें यह भी बताएं कि कैसे झूठे वादे करके सरकार बनाने के बाद उसने राज्यों को बर्बाद कर दिया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की सरकारें गारंटियों को पूरा करने के लिए आखिरी साल का इंतजार नहीं करतीं और वह उन्हीं गारंटियों को चुनावी वादे के रूप में पेश करती हैं, जिन्हें वह पूरा कर सकती हैं। इस क्रम में मोदी ने कहा कि छत्तीसगढ़ और ओडिशा में भाजपा की सरकार बनने के कुछ ही माह में जनता से किए कई वादों को पूरा कर दिया गया। प्रधानमंत्री ने कहा कि झारखंड वन व खनिज संपदा से भरपूर और समृद्ध राज्य है लेकिन यहां के लोगों को गरीब रखा गया। उन्होंने कहा, समृद्धि होने के बावजूद यहां विकास का अभाव और बेरोजगारी चरम पर है। इसका सबसे बड़ा कारण भ्रष्टाचार व झारखंड की अमूल्य प्राकृतिक संपदा की बेतहाशा लूट है। उन्होंने कहा, आप जानते हैं कि सबका साथ-सबका विकास के मंत्र में झारखंड का विकास मेरी प्राथमिकता है। हम विकास की कोशिश कर रहे हैं, राज्य सरकार के असहयोग के बावजूद हम बहुत कुछ करने का प्रयास करते हैं।

पीएम नरेंद्र मोदी ने किया मेरा बूथ सबसे मजबूत संवाद कार्यक्रम

रांची। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झारखंड में पहले चरण के मतदान से पहले भाजपा के मेरा बूथ सबसे मजबूत अभियान के तहत बूथ कार्यकर्ताओं के साथ सीधा संवाद किया। इस दौरान पीएम ने कहा कि, चुनाव कोई भी हो कार्यकर्ता ही चुनाव लड़ते हैं। उन्होने कहा कि भाजपा कार्यकर्ताओं की मेहनत ने झामुमो, कांग्रेस और राजद की नींद उड़ा दी है। पीएम मोदी ने कहा कि, हमारा उद्देश्य कुशासन से झारखंड को मुक्त करना है, इसमें कार्यकर्ताओं की भूमिका बहुत बड़ी है। जब भी झारखंड आया आपसे और महिला कार्यकर्ताओं से बात करने की मौका मिला। उन्होने कहा कि, उत्साह के साथ महिला कार्यकर्ता लोगो से जुड़ रही है। पीएम ने कहा कि, झारखंड की संपदा को लूटा जा रही है। पीएम ने कहा, झारखंड में असीम संभावनाएं हैं, हिंदुस्तान के कई प्रदेश के लोग रोजी-रोटी के लिए प्रदेश आते हैं। पीएम ने कहा कि, हमारा नारा है सबका साथ- सबका विकास और इसी नारे के साथ भाजपा झारखंड का भी विकास करेगी। झारखंड को अन्य राज्यों के विकास की श्रेणी में लाना है इसलिए डबल इंजन की सरकार लाना जरूरी है। झारखंड इस बार बदलाव करने के लिए संकल्पित। उन्होंने कहा कि, इंडी गठबंधन की सरकार ने रोटी-बेटी और माटी पर वार किया है। गठबंधन के वादे अधूरे रहे हैं, कांग्रेस जिस जिस राज्य में सत्ता में है वहां के लोगों को ऐसे ही ठगा है। पीएम मोदी ने कहा कि, झारखंड में सरकार बनने के बाद भाजपा ने जो वादे किया है उसे पूरा करने में की जान से जुट जाएगी। मतदान करने समय उत्साह के साथ जाए, उत्सव है मतदान भी बढ़ता है।

डोनाल्ड ट्रंप की जीत से दुनिया के कई देशों में घबराहट, भारत पर इसका असर नहीं

- जयशंकर ने कहा-पीएम मोदी ने ट्रंप ही नहीं कई अमेरिकी राष्ट्रपतियों से बनाया तालमेल

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव जीतने के बाद कई देशों में घबराहट पैदा हो गई है, लेकिन भारत का इसका असर नहीं है। मुंबई में एक कार्यक्रम में जयशंकर ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी ने ट्रंप ही नहीं कई अमेरिकी राष्ट्रपतियों के साथ तालमेल बनाया है। एस जयशंकर ने कहा कि दूसरे देशों के विपरीत भारत ट्रंप की चुनावी जीत के बाद चिंतित नहीं है। उन्होंने कहा कि अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत के बाद कई देश चिंतित हैं, लेकिन भारत नहीं है। उन्होंने कहा कि जब पीएम मोदी पहली बार वाशिंगटन गए थे, तब बराक ओबामा राष्ट्रपति थे, फिर डोनाल्ड ट्रंप और फिर जो बिडेन। जिस तरह से वे इन संबंधों को बनाते आए हैं, उसमें कुछ स्वाभाविक है...मुझे पता है कि आज कई देश अमेरिका को लेकर चिंतित हैं, लेकिन ईमानदारी से कहें तो हम उनमें से नहीं हैं। जयशंकर ने कहा कि ट्रंप ने कमला हैरिस को उच्च-दांव वाले चुनाव में हरा दिया है। पीएम मोदी ने कहा था कि वे भारत-अमेरिका साझेदारी को और मजबूत करने के लिए अपने सहयोग को नवीनीकृत करने के लिए उत्सुक हैं। पीएम मोदी ने डोनाल्ड ट्रंप से मध्य पूर्व संघर्षों और रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा देने का भी आग्रह किया है। पीएम मोदी ने एक्स पर पोस्ट किया था जिसमें लिखा था-मेरे मित्र डोनाल्ड ट्रंप को ऐतिहासिक जीत पर हार्दिक बधाई। जैसा कि आप अपने पिछले कार्यकाल की सफलताओं को आगे बढ़ा रहे हैं, मैं भारत-अमेरिका व्यापक वैश्विक और रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए हमारे सहयोग को नवीनीकृत करने के लिए उत्सुक हूं। आइए हम सब मिलकर अपने लोगों की बेहतरी के लिए और वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए काम करें। जयशंकर ने कहा कि भारत की दुनिया को एक्सप्लोर करने की इच्छा बढ़ी है, चाहे वह पर्यटन, शिक्षा या काम के अवसरों के क्षेत्र में हो। उन्होंने कहा कि बाहरी दुनिया और हमारे राष्ट्रीय प्रयासों के बीच यह गहरा संबंध हमें विकसित भारत की दिशा में तेजी से आगे बढ़ने के अवसर देता है। वास्तव में हम इसे इतनी गंभीरता से लेते हैं कि मैं कह सकता हूं कि अब विदेश नीति का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा तय करने के अलावा राष्ट्रीय विकास को आगे बढ़ाना है।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में कम नहीं हो रहा वायु प्रदूषण, 347 दर्ज किया गया औसत एक्यूआई, स्थिति लगातार खराब बनी हुई

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में वायु प्रदूषण की स्थिति लगातार खराब बनी हुई है। सोमवार को यहां का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 347 दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण एवं नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार राजधानी दिल्ली में सोमवार सुबह 7:30 बजे तक औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक 347 दर्ज किया गया है। जबकि दिल्ली एनसीआर के शहर फरीदाबाद में एक्यूआई 165, गुरुग्राम में 302, गाजियाबाद में 242, ग्रेटर नोएडा में 271 और नोएडा में 237 बना हुआ है। वहीं, दिल्ली के जहांगीरपुरी में एक्यूआई सबसे अधिक 409 दर्ज किया गया। राजधानी दिल्ली के अधिकांश इलाकों में एक्यूआई का स्तर 300 से 400 के बीच में बना हुआ है, जिसमें आनंद विहार में 378, अलीपुर में 397, अशोक विहार में 389, बवाना में 400, बुराड़ी क्रॉसिंग में 352, मथुरा रोड में 316, द्वारका सेक्टर 8 में 356, डॉ करणी सिंह शूटिंग रेंज में 344, डीटीयू में 311 और आईजीआई एयरपोर्ट में 336 एक्यूआई दर्ज किया गया। इसके अलावा आईटीओ में 338, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 216, लोधी रोड में 308, मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में 369, मुंडका में 389, मंदिर मार्ग में 344, नरेला में 352, नेहरू नगर में 368, नॉर्थ कैंपस डीयू में 363, नजफगढ़ में 356, पटपड़गंज में 366, ओखला फेस 2 में 339, एनएसआईटी द्वारका में 369, आरके पुरम में 368, रोहिणी में 384, शादीपुर में 383, सिरी फोर्ट में 337, विवेक विहार में 372 और वजीरपुर में 391 एक्यूआई दर्ज किया गया। पूर्वी जिले की गीता कॉलोनी के आसपास एक्यूआई 325 मापा गया। यहां पर सड़कों पर पानी द्वारा छिड़काव किया जा रहा है, जिससे सड़कों पर उड़ने वाली धूल वहीं पर जम जाए और हवा में ना फैले। धूल के कण हवा में फैलने से लोगों को खासकर बच्चों और बूढ़ों को सांस लेने में परेशानी का सामना करना पड़ता है।

न्यायमूर्ति संजीव खन्ना बने उच्चतम न्यायालय के 51 वें मुख्य न्यायाधीश

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सोमवार को न्यायमूर्ति संजीव खन्ना को उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ दिलाई। श्रीमती मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में शीर्ष अदालत के वरिष्ठतम न्यायाधीश न्यायमूर्ति खन्ना को 51वें मुख्य न्यायाधीश के पद की शपथ दिलाई। वह 13 मई 2025 को सेवानिवृत्त होंगे। इस अवसर पर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, शीर्ष अदालत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ के अलावा मौजूदा और पूर्व न्यायाधीश, कई केंद्रीय मंत्री और अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ रविवार 10 नवंबर को शीर्ष अदालत के 50 वें मुख्य न्यायाधीश के पद से सेवानिवृत्त हो गए। उन्होंने अक्टूबर में केंद्र सरकार को पत्र लिखकर न्यायमूर्ति खन्ना को शीर्ष अदालत का अगला मुख्य न्यायाधीश नियुक्त करने की सिफारिश की थी। इसके बाद राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद 24 अक्टूबर 2024 को केंद्र सरकार के विधि एवं न्याय मंत्रालय के न्याय विभाग ने न्यायमूर्ति खन्ना के मुख्य न्यायाधीश नियुक्त करने से संबंधित एक अधिसूचना जारी की। न्यायमूर्ति खन्ना 2018 की 'चुनावी बॉन्ड योजना' को रद्द करने वाली पांच सदस्यीय पीठ में शामिल थे। न्यायमूर्ति खन्ना को 18 जनवरी 2019 को शीर्ष न्यायालय के न्यायाधीश के पद पर पदोन्नत किया गया था, तब वह दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे। उन्हें 2005 में दिल्ली उच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया और एक साल बाद उन्हें यहां स्थायी न्यायाधीश के तौर पर पदोन्नत किया गया था। न्यायमूर्ति खन्ना संविधान के अनुच्छेद 370 का प्रभाव जम्मू कश्मीर से हटाने और सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट (नई संसद भवन और इसके आसपास के क्षेत्रों का पुर्नविकास) हरी झंडी देने वाली पीठ सहित कई महत्वपूर्ण फैसलों के हिस्सा थे। उनकी अगुवाई वाली पीठ ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल को दिल्ली आबकारी नीति मामले से जुड़े प्रवर्तन निदेशालय के एक मामले में अंतरिम जमानत दी थी। न्यायमूर्ति खन्ना का जन्म 14 में 1960 को एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। वह अपने चाचा सर्वोच्च न्यायालय न्यायमूर्ति हंस राज खन्ना की उल्लेखनीय वंशावली और विरासत को आगे ले जा रहे हैं। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति संजीव खन्ना के पिता देव राज खन्ना दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे। वह 1985 में सेवानिवृत्त हुए थे। उनकी मां सरोज खन्ना दिल्ली के लेडी श्री राम कॉलेज में हिंदी की लेक्चरर थीं। न्यायमूर्ति खन्ना ने दिल्ली विश्वविद्यालय के 'कैंपस लॉ सेंटर' से विधि में स्नातक (एलएलबी) की पढ़ाई पूरी करने के बाद 1983 में दिल्ली बार काउंसिल में अधिवक्ता के रूप में पंजीकरण कराया। उन्होंने शुरूआत में दिल्ली के तीस हजारी परिसर में जिला न्यायालयों में और बाद में दिल्ली उच्च न्यायालय और न्यायाधिकरणों में संवैधानिक कानून, प्रत्यक्ष कराधान, मध्यस्थता, वाणिज्यिक कानून, कंपनी कानून, भूमि कानून, पर्यावरण कानून और चिकित्सा लापरवाही जैसे विविध क्षेत्रों में वकालत की।

संबोधन क्या उन्होंने गेरुआ वस्त्र प्रधानमंत्री की तरह झूठ बोलने के लिए पहना है.....

साधु के वस्त्र पहनते हैं, भाषा टेररिस्टों की बोलते हैं : खड़गे

पलामू, एजेंसी

पलामू। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और असम के सीएम हिमंता बिस्वा सरमा का नाम लेकर उन पर बड़ा जुबानी हमला किया। झारखंड की छतरपुर विधानसभा सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी के पक्ष में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री खुद को बैकवर्ड का बेटा बताते हैं, लेकिन वह फॉरवर्ड को सपोर्ट करते हैं। वह बैकवर्ड को कुचलने वालों को सपोर्ट करते हैं। खड़गे ने योगी आदित्यनाथ पर निशाना साधते हुए कहा कि वे साधु का ड्रेस पहनते हैं, पर लोगों के बीच आकर ह्यबंटेंगे तो कटेंगेह्ण जैसी बात बोलते हैं, क्या ये साधु का काम है? ऐसा कोई टेररिस्ट बोल सकता है, साधु नहीं बोल सकते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष यहीं नहीं रुके, उन्होंने योगी को लक्ष्य करते हुए कहा कि क्या उन्होंने गेरुआ वस्त्र प्रधानमंत्री की तरह झूठ बोलने के लिए पहना है? साधु तो करुणामय होते हैं। उन्होंने बहुत के घरों को बुलडोजर लगाकर तोड़ दिया। जब राजीव गांधी को मानव बम से उड़ाया गया तो उनके टुकड़े-टुकड़े हो गए। टुकड़े जोड़कर उनकी अंतिम क्रिया की गई। ऐसा करने वाले लोगों को सोनिया गांधी ने माफ कर दिया। इसे करुणामय कहते हैं। भाजपा पर विभाजनकारी राजनीति का आरोप मढ़ते हुए खड़गे ने कहा कि ये हमें हिन्दू-मुसलमान में बांटने का काम कर रहे हैं। ह्यबंटोगे तो कटोगेह्ण बोलने वाले खुद ही लोगों को बांट और काट रहे हैं। भाजपा के लोगों ने कुछ किया नहीं, पर देश को डराते फिरते हैं। वो चुनाव के समय हमारे लोगों को ईडी और

इनकम टैक्स की रेड से डरा रहे हैं। असम के सीएम ने झारखंड में हमारे कार्यकताओं को धमकी दी। लेकिन, हम डरने वाले नहीं हैं। यहां की जनता जब अंग्रेजों से नहीं डरी, तो इनसे क्या डरेंगे। हमारा स्लोगन एक ही है, हम डरेंगे तो मरेंगे, इसलिए हम डरेंगे नहीं। समाज को बांटने वाले लोग फिर समाज को बांटने में लगे हैं। उन्होंने कहा कि मोदी और शाह लोगों को बहुत डराते हैं। शाह को डराने का पावर मोदी जी ने दिया है। उन्हें सहकारिता मंत्रालय भी दिया गया है। क्या और कोई काबिल नहीं है? कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, ह्यमोदी जी हमेशा ये कहते हैं कि भगवान ने मुझे आपकी सेवा के लिए भेजा है। वे ये नहीं बोलते कि मैं मां के पेट से पैदा हुआ हूं। वे कहते हैं कि मैं ऊपर से आया हूं। वे गुजरात से आकर वाराणसी में एमपी बने। लोग उनके उसूलों से नफरत करते हैं, इसलिए उनका वोट प्रतिशत घटा है। वे झूठ बोलने में माहिर हैं। खड़गे ने आगे कहा, ह्यपहले चुनाव में उन्होंने काला धन वापस लाकर हरेक व्यक्ति के खाते में 15 लाख देने का वादा किया था। पर ये उनका झूठ था। उन्होंने दो करोड़ नौकरियां हर साल देने का वादा किया था, पर ये भी झूठ है। किसानों की आमदनी दोगुनी करने का वादा भी उनका झूठा निकला। वे बेटियों की सुरक्षा की बात करते थे, पर मणिपुर में रोज बेटियों से रेप हो रहे हैं। राहुल गांधी मणिपुर गए, पर वहां जाने की हिम्मत पीएम में क्यों नहीं है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि वे झूठ बोलते हैं। उनकी पोल खुल गई है। इसलिए उनका ग्राफ गिर गया है। इनका झूठ ऐसा है कि अगर आसमान में चील उड़ रहा है, तो ये बोलेंगे कि देखो भैंस उड़ रही है। खड़गे ने कहा कि झारखंड विधानसभा ने राज्य में पिछड़ों, एससी और एसटी का आरक्षण बढ़ाने के लिए प्रस्ताव पास कर भेजा है। यह गवर्नर के पास पड़ा है। वे आदिवासियों, दलितों और पिछड़ों का भला नहीं चाहते। उन्होंने शायराना अंदाज में कहा, ह्यसुना है समंदर को बड़ा गुमान आया है, उधर ही ले चलो कश्ती जिधर तूफान आया है।

वायनाड को वैश्विक पर्यटन केंद्र बनाएंगे: राहुल

वायनाड, एजेंसी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने वायनाड लोकसभा सीट पर होने जा रहे उपचुनाव के प्रचार के अंतिम दिन, सोमवार को अपनी बहन प्रियंका गांधी वाद्रा के साथ लोगों को संबोधित किया और वायनाड को विश्व के प्रमुख पर्यटन स्थलों की श्रेणी में लाने का वादा किया। पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी इस उपचुनाव में संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) की उम्मीदवार हैं। राहुल ने यहां सुल्तान बाथरी में असम्पशन जंक्शन से चुंगम जंक्शन तक प्रियंका के साथ रोड शो करने के बाद एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, एक चुनौती के रूप में, मैं वायनाड को दुनिया का सबसे अच्छा पर्यटन स्थल बनाने में उनकी (प्रियंका गांधी की) मदद करूंगा। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने कहा कि वायनाड के लोगों ने उन्हें सिखाया कि राजनीति में प्रेम शब्द का बड़ा महत्व है। उन्होंने कहा, ह्यमैंने उस शब्द का प्रयोग नहीं किया, लेकिन वायनाड के लोगों ने मुझे सिखाया कि राजनीति में इस शब्द का बड़ा स्थान है। कांग्रेस नेता ने यह भी कहा कि नफरत और क्रोध से लड़ने के लिए प्रेम और स्नेह ही एकमात्र हथियार हैं। सुल्तान बाथरी में असम्पशन जंक्शन से चुंगम जंक्शन तक सड़क के दोनों ओर लोगों की भारी भीड़ दिखी। वायनाड लोकसभा सीट पर उपचुनाव 13 नवंबर को होगा। हाल के लोकसभा चुनाव में रायबरेली में अपनी जीत के बाद राहुल गांधी ने वायनाड सीट से इस्तीफा दे दिया था, जिसके चलते इस सीट पर उपचुनाव आवश्यक हो गया।

संक्षिप्त समाचार

12 लाख रुपये से बनी पुलिया दोनों तरफ से बैठी, आवागमन में परेशानी

रूड़की, एजेंसी। करीब 12 लाख रुपये की लागत से बनी पुलिस लाइन रोशनाबाद पुलिया दोनों तरफ से बैठ गई है। इससे दोनों तरफ से ही आने जाने वाले वाहन चालकों को परेशानी उठानी पड़ रही है। लोगों ने पुलिया निर्माण की गुणवत्ता पर सवाल खड़े करते हुए जल्द पुलिया निर्माण की मांग उठाई है। दो साल पूर्व लोक निर्माण विभाग ने पुलिस लाइन रोशनाबाद में 12 लाख रुपये की लागत से 30 फीट चौड़ी पुलिया का निर्माण किया। पुलिया से पुलिस लाइन एवं जेल में बंद कैदियों से मिलने आने वाले लोग और पुलिस लाइन में हल्के वाहन ही आवागमन करते हैं। स्थानीय लोग भी पुलिया से ही आते जाते हैं। लेकिन अब पुलिया के दोनों तरफ के हिस्से बैठ चुके हैं। इससे लोगों को आवागमन करने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का आरोप है कि पुलिया निर्माण में गुणवत्ता का ध्यान नहीं रखा गया। जिस कारण पुलिया के दोनों तरफ के हिस्से ही बैठ चुके हैं। विभागीय अधिकारी भी तरफ ध्यान नहीं दे रहे हैं। मामले में लोक निर्माण विभाग के अवर अभियंता जितेंद्र सिंह पंवार ने बताया कि पुलिया के दोनों हिस्से बैठ चुके हैं इसकी जानकारी उन्हें नहीं है। उनके पास इस संबंध कोई शिकायत नहीं आई है। मौके का निरीक्षण कर पुलिया की मरम्मत करवाई जाएगी।

पुलिस ने 17 लोगों के खिलाफ की कार्रवाई

रूड़की, एजेंसी। पुलिस ने रविवार को नगर में बिना सत्यापन किराये पर रखने वाले मकान मालिकों, होटल-ढाबों, बाहरी व्यक्तियों, फड़-फेरी व कोल्हू वालों के विरुद्ध कार्रवाई की। अभियान चलाकर 235 व्यक्तियों के सत्यापन किए गए और 17 व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई की गई। कोतवाल राजीव रौथाण ने बताया कि लक्सर क्षेत्र में अलग-अलग पुलिस टीमें गठित कर होटल, ढाबों व कोल्हू मालिक व उसमें कार्य करने वाले बाहरी व्यक्तियों की चेकिंग के लिए अभियान चलाया गया। इस दौरान 235 व्यक्तियों का सत्यापन किया गया। इसके अलावा एक का चालान कर 10 हजार रुपये जुर्माना वसूला गया और 16 लोगों के चालान 81 पुलिस एक्ट के तहत किए गए। उनसे चार हजार रुपये जुर्माना वसूला गया। पुलिस टीम ने गश्त के दौरान एक व्यक्ति को पांच लीटर कच्ची शराब समेत पकड़ लिया। पुलिस टीम शनिवार को बसेड़ा और सेठपुर मार्ग पर गश्त कर रही थी। इसी दौरान संदिग्ध व्यक्ति दिखाई दिया। उसे रुकने का इशारा किया तो वह भागने लगा। पुलिसकर्मियों ने उसका पीछा कर उसे पकड़ लिया। कोतवाल राजीव रैथाण ने बताया कि पकड़े गए आरोपी सुनीत कुमार निवासी पीतमपुर से पांच लीटर कच्ची शराब बरामद हुई है। उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

हाईवे पर गन्ने से लदे ट्रक में लगी अचानक भीषण आग, खाना बनाने के दौरान हुआ हादसा

हरिद्वार , एजेंसी। गन्ने से लदे एक ट्रक में आग लग गई। मौके पर दमकल की टीम पहुंची, जिसने बमुश्किल आग पर काबू पाया। हरिद्वार श्यामपुर थाना क्षेत्र में हाईवे पर गन्ने से लदे हुए एक ट्रक में आग लग गई। पुलिस और दमकल विभाग कर्मियों ने मौके पर पहुंचकर आग को बुझाया। मिली जानकारी के अनुसार खाना बनाने के दौरान आग लगी थी।

जेल में बंद आरोपी के परिजनों पर मारपीट का आरोप, मुकदमा दर्ज

रूड़की, एजेंसी। जेल में बंद आरोपी के परिजनों ने पीड़ित परिवार पर फैसले का दबाव बनाते हुए मारपीट कर दी। मारपीट के दौरान एक ही परिवार के कई लोग घायल हो गए। पुलिस ने तहरीर के आधार पर महिला समेत पांच आरोपियों को नामजद करते हुए पांच अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी व्यक्ति ने पुलिस को बताया कि 26 नवंबर 2021 को एक आरोपी ने सात वर्षीय बच्ची के साथ दुष्कर्म किया था। पुलिस ने तहरीर के आधार पर आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया था।

उत्तराखंड हाईकोर्ट ने दिया ऐतिहासिक निर्णय: कहा- पति गंभीर बीमार तो पत्नी अभिभावक बनने की हकदार

नैनीताल, एजेंसी। हाईकोर्ट ने राज्य में गंभीर बीमार पति की चिकित्सा रिपोर्ट और प्रशासनिक रिकॉर्ड की जांच के बाद पत्नी को अभिभावक बनने की अनुमति प्रदान कर दी। ऐसे व्यक्ति के लिए अभिभावक नियुक्त करने का कोई कानून नहीं है।

नैनीताल हाईकोर्ट ने राज्य में गंभीर बीमार पति की चिकित्सा रिपोर्ट और प्रशासनिक रिकॉर्ड की जांच के बाद पत्नी को अभिभावक बनने की अनुमति प्रदान कर दी। ऐसे व्यक्ति के लिए अभिभावक नियुक्त करने का कोई कानून नहीं है। केरल हाईकोर्ट के एक ऐसे ही मामले में निर्णय दिया था।

न्यायमूर्ति पंकज पुरोहित की एकलपीठ के समक्ष नैनीताल निवासी एक कॉलेज में स्पोर्टस टीचर महिला ने जून 2023 से कोमा में अपने 42 वर्षीय पति मुकेश जोशी का संरक्षक बनने की अनुमति प्रदान करने को याचिका दायर की थी।

अभिभावक के रूप में महिला किसी भी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने की हकदार होगी। कोर्ट ने साफ किया है कि यदि महिला के पति की तबीयत ठीक हो जाती है, या अधिकार का दुरुपयोग या वित्तीय अनियमितता होती है,यदि उपचार के संबंध में देखभाल, संरक्षण, सहायता की आवश्यकता होती है तो इस अनुमति को रद किया जा सकता है।

रात में पारा माइनस : कड़ाके की ठंड की बीच पुनर्निर्माण कार्यों ने पकड़ी रफ्तार, जुटे हैं 700 मजदूर

रुद्रप्रयाग, एजेंसी। पैदल मार्ग से केदारनाथ तक पुनर्निर्माण कार्यों ने रफ्तार पकड़ी है। धाम में सरस्वती नदी पर अंतिम चरण में निर्माण कार्य है। पैदल मार्ग को पूरी तरह सुरक्षित किया जा रहा है। तस्वीरों में देखिए किस तरह कड़ाके की ठंड में 700 मजदूर यहां काम में लगे हैं।

केदारनाथ धाम में दिनोंदिन ठंड़ बढ़ रही है। धाम में पुल, अस्पताल, बीकेटीसी भवन सहित अन्य भवन कार्य को इस वर्ष तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही केदारनाथ-गौरीकुंड पैदल मार्ग को भी दुरस्त किया जा रहा है। पैदल मार्ग पर हिमखंड जोन पर सुरक्षा के इंतजाम किए जा रहे हैं, जिससे आगामी यात्राकाल में सुरक्षित यात्रा संचालन हो सके।

धाम से लेकर पैदल मार्ग पर 700 से अधिक मजदूर काम कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट के तहत केदारनाथ में तीन चरणों में पुनर्निर्माण कार्य किया जा रहा है। इन दिनों दूसरे चरण के तहत भवन सहित पुल, सीवर लाइन, एसटीपी प्लांट आदि कार्य किए जा रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग का तीन मंजिला अस्पताल, श्रीबदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति

का भवन सहित कई कार्य अंतिम चरण में हैं, जिन्हें इस वर्ष पूरा किया जाना है।

इधर, बीते बीते 3 नवंबर को केदारनाथ धाम के कपाट बंद होने के बाद कार्यों को तेजी से किया जा रहा है। पैदल मार्ग से भी घोड़ा-खच्चरों से प्रतिदिन कई क्विंटल निर्माण सामग्री धाम पहुंचाई जा रही है। केदारनाथ क्षेत्र में सीवर लाइन बिछाने का काम भी चल रहा है।

मंदिर मार्ग से लेकर अन्य स्थानों पर सीवर लाइन बिछाई जा रही है, जिससे वहां के सभी भवन जोड़े जा रहे हैं। बेस कैंप के समीप सीवर ट्रीटमेंट प्लांट का कार्य भी अंतिम चरण में पहुंच गया है।

दूसरी तरफ इस वर्ष जुलाई में अतिवृष्टि से प्रभावित केदारनाथ-गौरीकुंड पैदल मार्ग को भी सुरक्षित और सुलभ बनाया जा रहा है। जिन स्थानों पर रास्ता पूरी तरह से ध्वस्त हो गया था, वहां पर आरसीसी पुश्तों का निर्माण किया जा रहा है। साथ ही पानी की निकासी के लिए स्कपर बनाने के साथ ही नाली बनाई जा रही है। हिमखंड जोन में पुलिया निर्माण किया जा रहा है।

केदारनाथ धाम ठंड बढ़ने के साथ ही तापमान में भी गिरावट दर्ज की जा रही है। यहां देर शाम से तापमान मानइस में पहुंच रहा है। साथ ही सुबह के समय ठंड अधिक हो रही है। लोनिवि के अनुसार, रात को तापमान माइनस 4 डिग्री तक पहुंच रहा है।

कपाट बंद होने के बाद केदारनाथ धाम से लेकर पैदल मार्ग पर पुनर्निर्माण कार्यों में तेजी आ गई है। इस वर्ष के आखिर तक कई कार्य पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसके हिसाब से धाम से पैदल मार्ग पर 700 से अधिक मजदूर काम कर रहे हैं।

रील बनाने के चक्कर में युवक पहुंचा थाने, पुलिस ने कर दी कार्रवाई, हो गया भारी नुकसान

हल्द्वानी, एजेंसी। रील बनाने का क्रेज युवाओं के सिर चढ़कर बोल रहा है। इसके लिए युवा कुछ भी करने को तैयार बैठे हैं। चंपावत का युवक हल्द्वानी के नैनीताल रोड पर अर्धनग्न होकर बाइक दौड़ाकर रील बनाने लगा। पुलिस उसे पकड़कर थाने ले गई। बाइक सीज कर दी है और युवक को चेतावनी देकर छोड़ दिया है।

शनिवार रात नैनीताल रोड पर एक युवक अर्धनग्न होकर बाइक से स्टंट कर रहा था, जिस कारण लोगों को हादसे का खतरा होने का डर था। युवक के दोस्त उसका वीडियो बना रहे थे। मामले की शिकायत लोगों ने 112 पर कर दी। पुलिस पहुंची तो युवक भाग खड़ा हुआ। सीसीटीवी की मदद से पुलिस ने स्टंटबाज युवक को ढूंढ लिया।

कोतवाल राजेश कुमार यादव ने बताया कि युवक की पहचान रीठा साहिब चंपावत निवासी श्याम सिंह के रूप में हुई, जिसे बाइक समेत थाने लाया गया।

पूछताछ में युवक ने बताया कि इंस्टाग्राम पर लाइक्स के चक्कर में वह स्टंट कर रहा था। युवक को माफीनामा देने पर छोड़ दिया है। बाइक को मोटर वाहन अधिनियम की धाराओं में सीज कर दिया गया है।

बनभूलपुरा में रहने वाले पेंटर को लकवा क्या हुआ, पैसे कमाने के लिए वह स्मैक तस्करी करने लगा, लेकिन पुलिस से बच नहीं सका। उसे 12.02

ग्राम स्मैक के संग पकड़कर जेल भेज दिया गया है।

बनभूलपुरा थानाध्यक्ष नीरज भाकुनी ने बताया कि शनिवार की रात टीम क्षेत्र में चेकिंग कर रही थी। इस बीच एक युवक को पकड़ा गया। तलाशी लेने पर युवक के पास से 12.02 ग्राम स्मैक बरामद हुई। पूछताछ में उसने अपना नाम नई बस्ती बनभूलपुरा निवासी अरशद हुसैन बताया। युवक ने पुलिस को बताया कि वह पेशे से पेंटर है। कुछ समय पहले उसे लकवा हो गया था, जिससे शरीर के बाएं हिस्से ने काम करना बंद कर दिया। इस कारण उसने स्मैक का धंधा शुरू कर दिया। बनभूलपुरा के एक व्यक्ति से वह स्मैक खरीदता था, जिसे बाद में युवकों को बेचता था। पुलिस ने आरोपित के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कर लिया है।

चिन्मय पंड्या करेंगे संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में देश का प्रतिनिधित्व, खोजेंगे समाधान

हरिद्वार, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में पर्यावरण से जुड़े अहम मुद्दों पर विचार-विमर्श कर उनका समाधान ढूंढ जाएगा। डॉ. चिन्मय पंड्या भी इस सम्मेलन में हिस्सा लेंगे।

जलवायु परिवर्तन जैसी व्यापक चुनौती से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की ओर से 4 से 22 नवंबर तक अजरबैजान की राजधानी बाकू में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन आयोजित होने जा रहा है। इसमें दुनियाभर के नेता और विशेषज्ञ शामिल होंगे। देश से प्रतिनिधि के तौर पर इस सम्मेलन में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पंड्या प्रतिभाग करेंगे। इस विशेष सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण से जुड़े कई अहम मुद्दों पर विचार-विमर्श कर उनका समाधान ढूंढना है। पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन जैसे ज्वलंत मुद्दों पर डॉ. चिन्मय पंड्या के नेतृत्व में गायत्री परिवार लंबे समय से कार्य कर रहा है। हाल ही में डॉ. चिन्मय पंड्या ने भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित नदी संरक्षण शिखर सम्मेलन, राष्ट्रीय नदी संगम, भारत जल सप्ताह जैसे कई महत्वपूर्ण आयोजनों में पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों को गायत्री परिवार के प्रतिनिधि के तौर पर पुरजोर तरीके से उठाया था।

उत्तराखंड में खुदाई के दौरान मिला रहस्यमयी शिवलिंग, पहले यहां निकले थे नागराज अब भोलेनाथ, हर कोई हैरान

अल्मोड़ा, एजेंसी। देवभूमि उत्तराखंड के कई रहस्य आज भी अनसुलझे हुए हैं। इसलिए यहां आज भी चमत्कार होते रहते हैं। ऐसा ही देखने को मिला जागेश्वर धाम के निकट कोटेश्वर गांव में। जहां हरुजाग के पास दीवार निर्माण की खुदाई के समय जमीन से अचानक नाग निकल आया।

जब वहां से मिट्टी को हटाया गया तो वहां शिवलिंग प्रकट हुआ। अब पुरातत्वविद इसके प्राचीन इतिहास की जानकारी जुटाने में लग गया है।

विश्व प्रसिद्ध जागेश्वर धाम से कुछ ही दूरी पर कोटेश्वर गांव में हरुजाग के पास खेत की दीवार निर्माण का काम चल रहा था। खुदाई शुरु करते हुए एक नाग यहां से बाहर निकल गया। नाग को देख वहां से लोग भाग खड़े हुए और दीवार का कार्य रोक दिया गया।

रविवार को स्थानीय जागरुक युवा शेखर भट्ट के नेतृत्व में गिरीश, अशोक, नाथू, किरन आदि ने मौके पर मिट्टी का टीला हटाने का काम शुरू किया। खुदाई होते ही भीतर से पहले एक विशालकाय शिवलिंग उभरकर सामने आ गया।

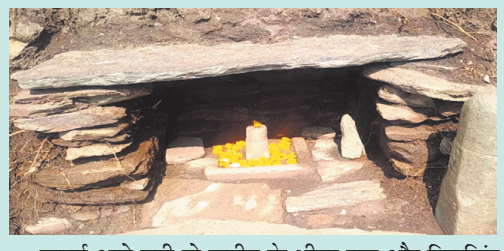

खुदाई आगे बढ़ी तो जमीन के भीतर एक और शिवलिंग व एक मंदिर देख युवा चौंक पड़े। लोगों ने मंदिर में पूजा-अर्चना शुरू कर दी थी। इस रहस्यमय घटना को लोग भगवान का चमत्कार मान रहे हैं। पुरातत्वविदों के मुताबिक शिवलिंग हजारों वर्ष पुराना हो सकता है।

कोटेश्वर गांव का जागेश्वर धाम के मंदिरों से सीधा संबंध बताया जाता है। डेढ़ हजार साल पहले जागेश्वर के मंदिरों के निर्माण के लिए कोटेश्वर से ही पत्थरों लाए गए थे। कोटेश्वर में नदी किनारे कोटलिंग नामक एक रहस्यमय स्थान आज भी मौजूद है। यहां खुदाई करते ही जमीन से प्राचीन शिवलिंग निकलते हैं।

स्कूल से घर लौट रहे बच्चों के सामने आया तेंदुआ

अल्मोड़ा, एजेंसी। रानीखेत तहसील के सालीखेत में शनिवार को छुट्टी के बाद घर लौट रहे स्कूल के बच्चों के सामने अचानक झाड़ियों से तेंदुआ आ धमका। इससे वहां पर चीखपुकार मच गई। ग्रामीण और शिक्षक दौड़े और शोर मचाया। इसके बाद तेंदुआ जंगल की ओर भाग खड़ा हुआ।

रानीखेत तहसील के सालीखेत में पिछले कई दिनों से तेंदुए की दहशत बनी हुई है। शनिवार को छुट्टी के बाद घर लौट रहे जूनियर हाईस्कूल और प्राथमिक विद्यालय सालीखेत के बच्चों के सामने अचानक झाड़ियों से तेंदुआ आ धमका। इससे वहां पर चीखपुकार मच गई।

कार खाई में गिरी, छह पर्यटक घायल, पुलिस की मदद से घायलों को बाहर निकाला; एसटीएच किया रेफर

नैनीताल , एजेंसी। कैंची धाम से दर्शन कर लौट रहे गुरुग्राम के पर्यटकों की इनोवा कार प्रिय बैंड के पास सड़क पर अनियंत्रित होकर 100 मीटर गहरी खाई में गिर गई। हादसे में छह लोग घायल हो गए।

कैंची धाम से दर्शन कर लौट रहे गुरुग्राम के पर्यटकों की इनोवा कार प्रिय बैंड के पास सड़क पर अनियंत्रित होकर 100 मीटर गहरी खाई में गिर गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को कालाढूंगी अस्पताल पहुंचाया। दुर्घटना की सूचना पर एसडीएम कालाढूंगी रेखा कोहली ने अस्पताल पहुंचकर घायलों का हाल-चाल जाना। प्राथमिक इलाज के बाद सभी को हल्द्वानी सुशीला तिवारी अस्पताल रेफर कर दिया गया।

जानकारी के अनुसार गुरुग्राम से दोस्तों का दल नैनीताल घूमने आया था। रविवार रात शशि कुमार, अभिषेक कुमार, पारस बत्रा, कुशल खंडेलवाल, साकेत सत्यम, तरुण कुमार अपनी इनोवा कार से बाबा नीम करौली के दर्शन कर लौट रहे थे। रात करीब 9:30 बजे के आसपास उनकी कार प्रिया बैंड के पास अनियंत्रित होकर सड़क से 100 मीटर नीचे गहरी खाई में गिर गई। घटना की सूचना पर एसआई रमेश पंत ने अन्य पुलिसकर्मियों की मदद से सभी घायलों को खाई से बाहर निकलकर कालाढूंगी अस्पताल पहुंचाया। प्राथमिक इलाज के बाद सभी मामूली घायलों को एसटीएच हल्द्वानी रेफर कर दिया गया। बताया जा रहा है कि सभी दोस्त कंपनी कर्मचारी थे।

जल जीवन मिशन : ग्रामीणों ने किया विरोध तो अफसर बोले- ये संभावित तारीखें थीं, दिसंबर में होगा काम पूरा

हल्द्वानी , एजेंसी। जल जीवन मिशन के कई गांवों में लगे बोर्ड गवाही दे रहे हैं कि वहां पेयजल योजना का काम पूरा हो चुका है। मगर हकीकत दूसरी है। बोर्ड पर काम पूरा होने के आठ-नौ महीने पहले की तारीखें लिखी हैं। इसका ग्रामीणों ने विरोध किया है।

जल जीवन मिशन के कई गांवों में लगे बोर्ड गवाही दे रहे हैं कि वहां पेयजल योजना का काम पूरा हो चुका है। मगर हकीकत दूसरी है। बोर्ड पर काम पूरा होने की आठ-नौ महीने पहले की तारीखें लिखी हैं। इस खेल का जब ग्रामीणों और ग्राम प्रधान ने विरोध किया तो विभागीय अधिकारियों ने इसे संभावित तिथि बताकर पल्ला झाड़ दिया।

अफसर अब दिसंबर तक काम पूरा होने का दावा कर रहे हैं। सवाल है कि अभी तक यदि तारीखें संभावित थीं तो पहली बात तो इतनी देरी क्यों हो गई। दूसरा तकनीकी दिक्कतें आईं तो एक-दो मामले में आतीं। बमेठा बंगर केशवदत्त, खीमा, हरिपुर लच्छी में न लाइनें बिछी है, न कनेक्शन का काम पूरा हुआ है और न ओवरहेड टैंक बन पाए हैं। वहीं सड़कें उधड़ी पड़ी हैं। हर घर पानी पहुंचाने की व्यवस्था को विभाग की ढिलाई और ठेकेदार की लापरवाही का खामियाजा लोगों को भुगतना पड़ रहा है। वहीं कार्य पूर्ण होने के बोर्ड ग्रामीणों के मुंह चिढ़ा रहे हैं। तीसरा सवाल यह भी है कि संभावित तारीख आगे बढ़ती नजर आई तो उसे अंकित क्यों नहीं किया गया।

बमेठा बंगर केशवदत्त गांव के राधाबंगर और हरिपुर बच्ची में वर्तमान में करीब डेढ़ हजार से अधिक परिवार रहते हैं। इन्हें बमेठा बंगर सिंचाई नलकूप हनुमान मंदिर और गंगापुर कबडवाल स्थित ट्यूबवेल से पानी मिलता है। बमेठा बंगर केशवदत्त के लिए जल जीवन मिशन से दो योजनाएं बनाई गई। इसमें राधाबंगर में पेयजल ट्यूबवेल और ओवरहेड टैंक बनना है। दूसरी योजना में नारायणपुरम में ओवरहेड टैंक बनाना शामिल है। साथ ही पेयजल लाइन बिछनी है। राधाबंगर में तो अभी तक पेयजल ट्यूबवेल तक नहीं चला है। लाइन से लोगों के कनेक्शन तक नहीं हुए हैं। उधर ओवरहेड टैंक अभी तक नहीं बन पाया है।

गाड़ी के लिए खरीदा महंगा नंबर, लाखों में लगी 0002 की बोली

हल्द्वानी , एजेंसी। परिवहन विभाग ने यूके 04 एपी सीरीज के लिए वाहनों के रजिस्ट्रेशन नंबर की नीलामी का पहला चरण रविवार को पूरा कर लिया। इस दौरान आठ लाख 61 हजार की सबसे मंहगी बोली 0002 नंबर के लिए लगी।

परिवहन विभाग ने यूके 04 एपी सीरीज के लिए वाहनों के रजिस्ट्रेशन नंबर की नीलामी का पहला चरण रविवार को पूरा कर लिया। तीन दिन तक चली प्रक्रिया में रविवार तक 23 रजिस्ट्रेशन नंबरों की नीलामी हुई। इस दौरान आठ लाख 61 हजार की सबसे मंहगी बोली 0002 नंबर के लिए लगी।

दूसरी मंहगी बोली 9999 नंबर के लिए दो लाख 30 हजार पर खत्म हुई। वहीं 0001 और 0005 नंबर के आवंटन में तकनीकी समस्या आई। इस कारण इन दोनों नंबरों की बोली होल्ड कर दी गई। विभाग ने शुक्रवार को नई सीरीज के लिए ऑनलाइन

नीलामी शुरू की थी। इसमें वीआईपी नंबर लेने वालों ने खूब उत्साह से भाग लिया।

सबकी निगाहें 0001 नंबर पर थीं, मगर वह होल्ड होने के कारण 0002 नंबर ने फिलहाल सबसे बड़ी नीलामी का खिताब जीत लिया। रविवार को 23 रजिस्ट्रेशन नंबरों की नीलामी हुई, इसी में 0002 नंबर ने सर्वोच्च स्थान बनाया। इसके नंबर के लिए नीलामी 25 हजार रुपये से शुरू हुई थी। सबसे कम बोली वीआईपी नंबरों में से 9000 नंबर और 0777 नंबर पर 10,000 रुपये की रही। सीरीज का अगला चरण 15 नवंबर को शुरू होगा।

नीलामी के दौरान 0001 और 0005 की नीलामी रुक गई। नीलामी का समय खत्म होने से छह मिनट पहले ही आवेदकों की लैपटॉप की स्क्रीन पर लिखकर आने लगा- 'अब बोली नहीं बढ़ाई जा सकती'। तब तक 0001 की बोली 4,86,000 रुपये और 0005 नंबर की बोली एक लाख रुपये तक पहुंची थी। लोगों ने परिवहन विभाग से शिकायत की। इसके बाद दोनों नंबर होल्ड किया जाना बता दिया गया। अनुमान लगाया जा रहा था कि 0001 नंबर की बोली 10 लाख रुपये तक जा सकती थी।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com
राष्ट्रीय दैनिक प्रात:किरण
नई दिल्ली, मंगलवार, 12 नवंबर, 2024

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर केजरीवाल ने कहा, दिल्ली में हमने किया साबित, सरकार न केवल स्कूल चला सकती है, बल्कि उन्हें शानदार भी बना सकती है

यह हमारी आइडियोलॉजी का हिस्सा है कि बिना शिक्षा के किसी भी देश का विकास नहीं हो सकता- केजरीवाल

जानकारी

- अब दिल्ली में संपन्न लोग भी प्राइवेट स्कूलों को छोड़कर सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों का एडमिशन करा रहे हैं - केजरीवाल
- आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर देश के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद को किया याद

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर देश के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद को याद करते हुए उन्हें नमन किया। इस अवसर पर अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मौलाना अबुल कलाम आजाद इस देश में पैदा होने वाले हर बच्चे को अच्छी से अच्छी शिक्षा मुहैया कराने के पक्षधर थे। उनका यह सपना देश की राजधानी दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार ने पूरा करने काम किया है। हमारी सरकार ने दिल्ली में यह साबित किया है कि सरकार न केवल सरकारी स्कूल चला सकती है, बल्कि उन्हें शानदार भी बना सकती है। इसका परिणाम यह है कि आज दिल्ली में संपन्न लोग भी प्राइवेट स्कूलों से अपने बच्चों को निकलकर उनका सरकारी स्कूलों में एडमिशन करा रहे हैं।

देश के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की स्मृति में हर साल 11 नवंबर को मनाए जाने वाले राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के अवसर पर आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर कहा कि जहाँ पहले सरकारी स्कूलों की बात तक नहीं होती थी, आज वहाँ से गरीब परिवारों के बच्चे आईआईटी, जेईई और नीट जैसी परीक्षाएँ पास कर रहे हैं, डॉक्टर, इंजीनियर, अफसर बन रहे हैं। और तो और अब लोग प्राइवेट स्कूल छोड़कर सरकारी स्कूलों में आ रहे हैं।

दिल्ली में हमने साबित किया है कि सरकार न केवल स्कूल चला सकती है, बल्कि उन्हें शानदार भी बना सकती है। देश के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद जी का सपना था कि हर बच्चे को बेहतरीन शिक्षा मिले। आज दिल्ली के सरकारी स्कूल उस सपने को सच कर रहे हैं।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि सब जानते हैं कि शिक्षा हमारी सरकार की सबसे बड़ी प्राथमिकता है। हम इस पर यकीन करते हैं और यह हमारी आइडियोलॉजी का हिस्सा है कि बिना शिक्षा के किसी भी देश का विकास नहीं हो सकता। पहले सरकारें कहती थीं कि सरकारी स्कूल ठीक नहीं हो सकते। सरकार स्कूल नहीं चला सकती, लेकिन हमने दिखा दिया कि सरकार स्कूल चला सकती है।

दिल्ली में फिर फायरिंग की वारदात, भलस्वा डेयरी में दो लोगों पर चलीं गोलियां, एक की हालत गंभीर

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

बाहरी उत्तरी दिल्ली के भलस्वा डेयरी थाना क्षेत्र में रविवार रात फायरिंग की घटना सामने आई है। गोलीबारी में दो लोग घायल हुए हैं, जिसमें एक की हालत गंभीर बताई जा रही है। घायलों के नाम अरविंद और गोलू हैं। अरविंद के दो गोलियां लगी हैं एक छाती पर और एक जांघ पर जबकि गोलू को गोली हाथ से छूकर निकल गई। घटना भलस्वा डेरी थाना इलाके के मुकुंदपुर ऊब्लॉक गली नंबर 20 की बताई जा रही है। भलस्वा डेयरी थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और पांच में से चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है और एक अन्य आरोपी की आरोपी की तलाश जारी है।

रविवार को रात साढ़े 11बजे के करीब फायरिंग : बीती रात करीब 11:30 के बीच अरविंद पास की दुकान से अपने घर के लिए सामान लेने गया था। तभी वहां दुकान के पास खड़े कुछ लड़कों से उसकी किसी बात पर कहासुनी हो गई। दूसरी तरफ मौजूद पांच लड़कों में से एक लड़के ने गोली चलानी शुरू कर दी। अरविंद और उसके साथी को घायल कर बदमाश वहां से से फरार हो गए। कुछ लोगों ने अरविंद की पत्नी को जाकर सूचना दी कि अरविंद घर के बाहर गली में खून से लथपथ पड़े हुए हैं। अरविंद की पत्नी मौके पर पहुंचीं। अरविंद ने घायल हालत में पांच आरोपियों में से तीन के नाम बताए। अरविंद की पत्नी लोगों की मदद से बाबू जगजीवन राम अस्पताल ले गईं, जहां से भलस्वा डेयरी थाना पुलिस को मामले की सूचना मिली। पीड़ित के परिवार की मानें तो अरविंद अभी ट्रॉमा सेंटर में भर्ती हैं और उसके छाती पर लगी गोली अभी तक निकाली नहीं जा सकी है, वहीं उसके साथी गोलू को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है।

फायरिंग की वजह अब तक साफ नहीं : घायल अरविंद का परिवार ने मीडिया को बताया कि वह लंच बॉक्स सप्लाई का काम करते हैं, और अरविंद भी उनके काम में हाथ बंटाता है। अरविंद के डेढ़ साल की बेटी है वह उसी के लिए डायपर्स लेने के लिए रात को घर से बाहर निकाला था। पीड़ित परिवार ने बताया कि गोली मारने वाले शख्स का नाम गेला, मनीष और नवीन बताया जा रहा है, जो कि मुकुंदपुर के ही रहने वाले हैं। वहीं, चौथे आरोपी का राजा है।

फायरिंग के बाद फरार 4 आरोपियों को किया गया गिरफ्तार : घटना में अभी तक 4 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इनकी अरविंद से क्या रंजिश थी या किस बात को लेकर गोली मारी गई, इस बारे में परिवार को कोई जानकारी नहीं है लेकिन जिस तरह से इस गोली कांड को अंजाम दिया गया और घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए। घायलों के बयान के आधार पर मामला दर्ज : फिलहाल, उत्तरी पश्चिमी जिले के डीसीपी निधिन वालसन ने बताया कि भलस्वा डेयरी थाना पुलिस ने घायलों के बयान के आधार पर मामला दर्ज कर पांच में से चार आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाला जा रहा है, जिससे इस गोली कांड की असली वजह साफ हो सके।

संक्षिप्त खबरें

शराब की तस्करी करने वाले चार बदमाश धरे

नई दिल्ली। दक्षिणी जिला पुलिस की स्पेशल स्टाफ टीम ने आठ नवंबर की देर रात शराब तस्करी करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह के चार बदमाशों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों तरुण, सोमबीर, गुड्डू और आशीष के पास से अवैध शराब की बड़ी खेप बरामद हुई है। अलकनंदा मार्केट के पास देर रात आठ दो संदिग्ध वाहनों को देखकर पुलिसकर्मियों ने रुकने का इशारा किया। आरोपियों ने वाहन की रफ्तार बढ़ा दी। पुलिसकर्मियों ने पीछा कर उन्हें दबोच लिया।

चोरी की स्कूटी और बाइक बरामद

नई दिल्ली। सुभाष नगर पुलिस चौकी में तैनात पुलिसकर्मियों ने आठ नवंबर की देर रात एक कुख्यात वाहन चोर को गिरफ्तार किया है। आरोपी चमन पर गंभीर धाराओं में 29 से ज्यादा मामले दर्ज हैं। इसके पास से पुलिस ने चोरी की दो स्कूटी और एक बाइक बरामद की है। सुभाष नगर इलाके से आरोपी को गिरफ्तार किया गया। छानबीन के दौरान पुलिस को पता चला कि राजौरी गार्डन से स्कूटी चुराई गई थी। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर रही है।

द्वारका में सब्जी विक्रेता की हत्या के मामले में दो गिरफ्तार

नई दिल्ली । द्वारका जिले के द्वारका नॉर्थ इलाके में एक सब्जी विक्रेता की हत्या के मामले में पुलिस ने प्रशांत और अमन सिद्दीकी नामक दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है। यह गिरफ्तारी 9 अक्टूबर को की गई। इनके पास से पिस्तौल और जिंदा कारतूस भी बरामद किए गए हैं। द्वारका जिले के डीसीपी अंकित सिंह ने सोमवार को बताया कि 23 अक्टूबर को द्वारका नॉर्थ इलाके में सब्जी विक्रेता को गोली मारी गई थी। हालांकि अस्पताल में उपचार के दौरान सब्जी विक्रेता की मौत हो गई थी। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराने के बाद संबंधित धारा में केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू की। एंटी नारकोटिक्स सेल के इंचार्ज इंस्पेक्टर सुभाष की टीम को भी जांच में लगाया गया। सीसीटीवी फुटेज के विश्लेषण के बाद पुलिस टीम ने आरोपितों की पहचान की। पुलिस टीम ने एक आरोपित प्रशांत को हथियार के साथ रामा पार्क, मोहन गार्डन से गिरफ्तार कर लिया। आरोपित से पूछताछ के बाद पुलिस ने अमन सिद्दीकी को गिरफ्तार किया। आरोपित अमन ने पूछताछ के दौरान बताया कि विक्रेताओं से पैसे ऐंठना चाहता था और इलाके में अपना दबदबा बनाए रखने के लिए उसने आरोपित प्रशांत को सब्जी विक्रेता को गोली मारने के लिए राजी किया। उसके बाद दोनों ने मिलकर सब्जी विक्रेता को गोली मार दी।

ऑनलाइन शिक्षा में चुनौतियों एवं सम्भावनाओं पर कॉलेज विद्या ने किया रिपोर्ट जारी

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

ऑनलाइन शिक्षा के अवसरों को सुगमता से जन-जन तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध संस्था कॉलेज विद्या ने द डिजिटल एजुकेशन फ्रंटियर नामक एक रिपोर्ट जारी की। यह रिपोर्ट विद्यार्थियों एवं कामकाजी व्यक्तियों के बीच ऑनलाइन शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं उनके बीच शिक्षा के इस नवीन स्वरूप की स्वीकार्यता के अध्ययन पर आधारित है। यह रिपोर्ट ऑनलाइन शिक्षा के फायदे, चुनौतियों एवं जन सामान्य में इसके विभिन्न आयामों के प्रति समझ पर आधारित है। इन तमाम पहलुओं के साथ-साथ इस अध्ययन में ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से पठन-पाठन के बदलते स्वरूप को भी चर्चा की गई है।

इस अध्ययन में शामिल 5000 से भी अधिक प्रतिभागियों के अनुसार ऑनलाइन शिक्षा के दो सबसे महत्वपूर्ण फायदे भौगोलिक सीमाओं का खत्म होना एवं समय की बचत है। लगभग 82% विद्यार्थियों एवं 66.2% कामकाजी व्यक्तियों ने अपनी सुविधा अनुसार किसी भी समय एवं किसी भी स्थान से पढ़ाई कर पाने के अवसर की सराहना की है। वही 81% विद्यार्थियों एवं 71.01% कामकाजी व्यक्तियों ने ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से समय के बेहतर प्रबंधन को वरीयता दी। ऑनलाइन शिक्षा के अन्य फायदों में इसकी सामान्य लागत (69% विद्यार्थियों एवं 51.9% कामकाजी व्यक्तियों के द्वारा स्वीकृति), सुविधाजनक उपस्थिति के मानक एवं शिक्षा के वैश्विक संसाधनों तक सुलभता से पहुँच शामिल है।

98% विद्यार्थियों एवं 97% कामकाजी व्यक्तियों ने वर्तमान परिवेश में ऑनलाइन शिक्षा की मौजूदगी को स्वीकार किया। हालांकि इनमें से केवल 53% विद्यार्थियों एवं 46.6% कामकाजी व्यक्तियों ने ही ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण की। ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से सबसे अधिक स्वीकृति ऑनलाइन सर्टिफिकेट की रही जिसकी पुष्टि 93% विद्यार्थियों एवं 85.7% कामकाजी व्यक्तियों ने की। इसके बाद क्रमश: डिप्लोमा और डिग्री का स्थान रहा। कामकाजी व्यक्तियों ने ऑनलाइन शिक्षा की बढ़ती महत्व को स्वीकार किया। उनमें से करीबन 67.53% व्यक्तियों का मानना है कि ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त हो सकते हैं। 38.96% व्यक्तियों ने यह भी स्वीकार किया कि इसके माध्यम से प्रोन्नति और मानदेय में वृद्धि सम्भव है। 66.23% लोगों ने दूर-दराज के क्षेत्रों से भी शिक्षा पूरी कर पाने की सुविधा को महत्वपूर्ण बताया। कॉलेज विद्या के सीओओ रोहित गुप्ता ने कहा, शिक्षा का भविष्य निसंदेह डिजिटल संसाधनों एवं तकनीक पर निर्भर होने वाला है लेकिन फिर भी इसे सभी व्यक्ति तक पहुंचाने एवं इसकी स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए कई चुनौतियों को पार करने की आवश्यकता है। हमारे अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ऑनलाइन शिक्षा के महत्व को प्रतिस्थापित करना के साथ-साथ विद्यार्थियों एवं कामकाजी व्यक्तियों के बीच इसके अवसरों की समझ विकसित करना है। हमारा मानना है कि उचित प्रयासों के माध्यम से हम ऑनलाइन शिक्षा की गुणवत्ता और स्वीकार्यता पूरे देश में बढ़ा सकते है ऑनलाइन शिक्षा की तमाम खूबियों के बावजूद हमारे सामने कई प्रकार की चुनौतियां हैं। हमारे अध्ययन में अधिकतर प्रतिभागी टियर 1 एवं टियर 2 शहरों के थे जहां अभी भी तकनीक एवं इंटरनेट की बाध्यताएं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में यह स्थिति और भी दयनीय है। मोबाइल और इंटरनेट की अनुपलब्धता के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षा की राह में अन्य कई चुनौतियां हैं। 70% विद्यार्थियों एवं 58.4% कामकाजी व्यक्तियों ने माना कि अप्रत्यक्ष रूप से दी गई शिक्षा प्रभावी नहीं होती एवं इसमें प्रायोगिक दक्षता के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। ऑनलाइन शिक्षा के प्रमाण पत्रों की स्वीकार्यता भी सन्देहास्पद रही है। कई प्रतिभागियों को लगता है कि पारंपरिक रूप से मिलने वाले डिग्री की महत्ता ऑनलाइन शिक्षा के प्रमाण पत्रों से ज्यादा है।इन तमाम चुनौतियों के परे इस अध्ययन में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य बहुत है उज्जवल है।

तस्करी के मामले में 18 लोग गिरफ्तार, हथियार और कार बरामद

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने हथियार तस्करी के मामले में 18 लोगों को गिरफ्तार किया है। इनकी पहचान मुल्ला कॉलोनी निवासी अरशद (22), मोहम्मद सुलेमान, अनुज उर्फ मोनी, अर्जुन, आसिफ, सलमान अहमद, अजय, शिवम, रोहित बिसला, गौरव, अभय यादव, अंकित, हरेंद्र, चेतन शर्मा और मदन के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपितों के पास से चार सेमी-ऑटोमैटिक पिस्तौल, आठ देसी कट्टे, एक देसी राइफल, 03 चाकू, 33 जिंदा कारतूस और एक चोरी की कार बरामद की है। गिरफ्तार किए गए आरोपित पहले से हत्या, हत्या का प्रयास, डकैती, लूट, जबरन वसूली, सेंधमारी, दंगा, चोरी, शस्त्र अधिनियम और गैंगस्टर अधिनियम (यूपी) के 50 से अधिक मामलों में शामिल रहे हैं। पुलिस के मुताबिक सभी आरोपितों को गुप्त सूचना के आधार पर गिरफ्तार किया है।

सिख दंगा मामला : टाइटलर ने उच्च न्यायालय से निचली अदालत में सुनवाई पर रोक लगाने का अनुरोध किया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

कांग्रेस नेता जगदीश टाइटलर ने उच्च न्यायालय से 1984 के सिख विरोधी दंगों के दौरान उत्तरी दिल्ली के पुलबंगश इलाके में तीन लोगों की हत्या से जुड़े एक मामले में उनके खिलाफ निचली अदालत की कार्यवाही पर रोक लगाने का सोमवार को अनुरोध किया।

टाइटलर के अधिवक्ता ने कहा कि इस मामले को मंगलवार को एक निचली अदालत में अभियोजन पक्ष के गवाह के बयान दर्ज करने के लिए सूचीबद्ध किया गया है और संबंधित अदालत को यह निर्देश दिया जाए कि जब तक उच्च न्यायालय उनके खिलाफ हत्या एवं अन्य अपराधों के आरोप तय करने को चुनौती देने वाली याचिका पर फैसला नहीं लेता, तब तक मामले में सुनवाई न की जाए।

न्यायमूर्ति मनोज कुमार ओहरी ने पहले टाइटलर को कुछ अतिरिक्त दस्तावेज दखिल करने के लिए वक्त दिया था। उन्होंने कहा कि दस्तावेज दाखिल कर दिए गए हैं लेकिन वे रिकॉर्ड में नहीं हैं। उच्च न्यायालय ने रजिस्ट्री को दस्तावेजों को आज ही रिकॉर्ड में रखने और दोपहर को इस मामले पर सुनवाई करने का निर्देश दिया। टाइटलर की उनके खिलाफ आरोप तय करने को चुनौती देने वाली याचिका पहले ही 29 नवंबर को उच्च न्यायालय में सुनवाई के लिए सूचीबद्ध की जा चुकी है और इसके लंबित रहने के दौरान टाइटलर ने मामले की सुनवाई पर रोक लगाने का अनुरोध करते हुए याचिका दायर की है। याचिका में कहा गया है कि अभियोजन पक्ष की गवाह लोकेंद्र कौर की गवाही निचली अदालत ने दर्ज कर ली है और बचाव पक्ष का वकील 12 नवंबर को उनसे जिरह करेगा।

इसमें कहा गया है, टाइटलर की आपराधिक पुनरीक्षण याचिका अभियोजन पक्ष की मंशा और सीबीआई द्वारा की गई जांच पर पर्याप्त सवाल उठाती है। इसलिए, इस अदालत से निचली अदालत को पुनरीक्षण याचिका पर सुनवाई पूरी होने तक मामले में आगे सुनवाई न करने का आदेश/निर्देश देना न्याय के हित में उचित है।

पीड़ितों की पैरवी कर रहे वरिष्ठ अधिवक्ता एच एस फूलका ने याचिका का विरोध किया और कहा कि गवाह उम्रदराज हैं और विभिन्न बीमारियों से जूझ रही हैं तथा उन्हें कई बार निचली अदालत में पेश होना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि चौथी बार वह मंगलवार को अदालत में पेश होंगी। उच्च न्यायालय ने टाइटलर के वकील से कुछ गवाहों के बयान दाखिल करने के लिए कहा था जिन्हें पहले दर्ज नहीं किया गया।

केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने मामले में टाइटलर के खिलाफ 20 मई 2023 को एक आरोपपत्र दाखिल किया था।सीबीआई ने अपने आरोपपत्र में कहा है कि टाइटलर ने एक नवंबर 1984 को पुलबंगश गुरुद्वारा आजाद मार्केट में एकत्रित भीड़ को कथित तौर पर भड़काया जिसके परिणामस्वरूप गुरुद्वारे को जला दिया गया और सिख समुदाय के तीन लोगों झ ठाकुर सिंह, बादल सिंह और गुरचरण सिंह झ की हत्या कर दी गयी। एक सत्र अदालत ने पिछले साल अगस्त में इस मामले में टाइटलर को अग्रिम जमानत दे दी थी।

दिल्ली में आम आदमी पार्टी को झटका, पूर्व पार्षद ने थामा बीजेपी का दामन

नई दिल्ली। पूर्व निगम पार्षद रहे रामनारायण भारद्वाज ने बीजेपी ज्वाइन कर ली है। उन्होंने दिल्ली भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और सांसद योगेंद्र चंदोलिया की मौजूदगी में अपने बेटे के साथ बीजेपी का दामन थाम लिया है। इस दौरान बीजेपी सांसद योगेंद्र चंदोलिया ने रामनारायण भारद्वाज का पार्टी में स्वागत किया और कहा उनके आने से पार्टी को काफी मजबूती मिलेगी। सभी पार्टी सदस्यों के सहयोग से इस बार दिल्ली में बीजेपी की सरकार बनेगी और दिल्ली का अभूतपूर्व विकास होगा। जॉइनिंग के दौरान रामनारायण ने आम आदमी पार्टी पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि आम आदमी पार्टी पहले जैसी पार्टी नहीं रही है। पहले वह भ्रष्टाचार रहित दिल्ली की बात करते थे लेकिन आज उन्हीं की पार्टी के नेता भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। आप पार्टी में कोई सुनने वाला नहीं है सब अपनी अपनी चलाते हैं। बता दें कि कल ही आम आदमी पार्टी में कांग्रेस के पांच बार के विधायक रहे चौधरी मतीन अहमद शामिल हुए थे। विधानसभा चुनाव के मद्देनजर जारी है दल-बदल का खेल : चौधरी मतीन अहमद का इस तरह पार्टी छोड़ना कांग्रेस के लिए एक बड़ा झटका था क्योंकि कांग्रेस इन दिनों राजधानी में न्याय यात्रा निकाल रही है। ऐसे में उसके बड़े नेता का जाना कांग्रेस के लिए अच्छी बात नहीं है। बता दें कि दिल्ली में आगामी 2025 में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले राजनीतिक दलों में सियासी जुबानी जंग भी तेज हो गई है। आम आदमी पार्टी और बीजेपी सीधे तौर पर एक दूसरे पर हमला बोल रहे हैं और उनके नेता पार्टी छोड़कर भी जा रहे हैं।

एक और मोबाइल स्नैचगि की घटना, अकेले जा रही लड़की से फोन छीना

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नई दिल्ली । लड़की के मोबाइल से डाटा लेने के लिए साथियों के साथ मिलकर मोबाइल छीन लिया। गाजीपुर गांव में हुई इस घटना की जांच करते हुए पुलिस ने चार आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी के पास से एक मोबाइल और वारदात में इस्तेमाल आने वाली मोटरसाइकिल बरामद हुई है। डीसीपी अपूर्वा गुप्ता ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी की पहचान रोहित, अजीम, करण और डेविड के तौर पर हुई है। सभी शाहदरा के रहने वाले हैं। डीसीपी ने बताया कि 6 नवंबर की सुबह एक लड़की गाजीपुर गांव से ऑफिस जा रही थी, तभी एक लड़के ने उसका मोबाइल छीन लिया और भागने लगा कुछ दूर पर इंतजार कर रहे अपने साथी की मोटरसाइकिल पर बैठकर वह भाग निकला। पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया थाना पुलिस ने शिकायत पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की। आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाला गया। सीसीटीवी फुटेज को लड़की को भी दिखाया गया। सीसीटीवी फुटेज में एक आरोपी की पहचान हो गई आरोपीयों में से एक पीड़ित लड़की का जान पहचान का निकला। पूछताछ में पता चला कि आरोपी रोहित मोबाइल का डाटा चाहता था। इसलिए तंग आकर लड़की ने उसे ब्लॉक कर दिया था। वह चाहता था कि लड़की के मोबाइल के डाटा को डिलीट कर दिया जाए। रोहित ने एक प्लान बनाया अपने साथियों के साथ मिलकर मोबाइल छीन लिया।

पुलिस चौकी में घुसकर न्यायाधीश ने बचाई जान, खैर थाने में मामला दर्ज

नोएडा। कुख्यात गैंगस्टर रवि काना के बड़े भाई हरेंद्र प्रधान की हत्या के मामले में सुंदर भाटी और उसके गिरोह से जुड़े लोगों को आजीवन कारावास की सजा सुनाने वाले गौतम बुद्ध नगर जनपद के अपर जिला न्यायाधीश रहे डॉक्टर अनिल कुमार की कार का बोलेरो जीप सवार पांच बदमाशों ने अलीगढ़ जनपद के खैर थाना क्षेत्र में राजमार्ग पर पीछा किया और हथियार दिखाकर उन्हें धमकाने का प्रयास किया। न्यायाधीश ने खुद को घिरता देख सोफा पुलिस चौकी पहुंचकर अपनी जान बचाई और नौ नवंबर को थाना खैर में मामला दर्ज कराया। अलीगढ़ पुलिस के प्रवक्ता ने बताया कि न्यायाधीश अनिल कुमार इस समय फरुर्खाबाद में विशेष न्याढयाधीश (ईसी एक्ट) पद पर तैनात हैं। उन्होंने कहा कि इस घटना के पीछे सुंदर भाटी गिरोह के शामिल होने का शक जताया गया है। पुलिस अधिकारी के अनुसार, यह घटना 14 दिन पहले हुई जब न्यायाधीश नोएडा जा रहे थे। इस घटना से छह दिन पहले ही सुंदर भाटी सोनभद्र जेल से रिहा हुआ था। इस बारे में जांच की जा रही है कि संबंधित घटना के दिन सुंदर भाटी की लोकेशन कहां थी। पुलिस को अलीगढ़ में सुंदर भाटी गिरोह का कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं मिला है। अधिकारी ने बताया कि घटना 29 अक्टूबर को रात 8 बजे के आसपास हुई। उन्होंने कहा कि न्यायाधीश ने इस मामले में सोफा चौकी प्रभारी और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के जनसंपर्क अधिकारी को सूचना दी। पुलिस प्रवक्ता ने कहा कि फोन पर खैर थाना प्रभारी निरीक्षक डीके सिसोदिया को भी सूचना दी गई।

पुरानी दिल्ली के बल्लीमारान में अत्याधुनिक सामुदायिक भवन का उद्घाटन कर केजरीवाल ने कहा, दिल्ली में जो अद्वितीय काम हुआ, उसे रुकने नहीं देना है

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को बल्लीमारान विधानसभा क्षेत्र के बारादरी में नव निर्मित सामुदायिक भवन का उद्घाटन किया। इस दौरान स्थानीय विधायक व कैबिनेट मंत्री इमरान हुसैन भी मौजूद रहे। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली में जो अद्वितीय काम हुआ, उसे रुकने नहीं देना है। आज पूरे देश में दिल्ली के स्कूलों, अस्पतालों और बिजली की चर्चा हो रही है, देश के अंदर एक उम्मीद बनी है, यह उम्मीद अब जारी रहनी चाहिए। हमने दिल्ली में पिछले 10 साल में मिलकर जो काम किए गए हैं, भाजपा उन सभी कामों को बंद करना चाहती है। पहली बार आपने 70 में से 66 सीट दी थी, अगली बार 70 में से 62 सीट दी थी, इस बार उससे कम नहीं होनी चाहिए, भले ही ज्यादा हो जाए।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि पहली बार आपने 70 में से 66 सीट दी थी, अगली बार 70 में से 62 सीट दी थी। अब उससे कम नहीं होनी चाहिए, भले ही ज्यादा हो जाए। दिल्ली में हम लोगों ने मिलकर जो काम पिछले 10 साल में किए हैं, ये भाजपा वाले उन सारे कामों को बंद करना चाहते हैं। हमें इन कामों को बंद नहीं होने देना है, इन कामों को जारी रखना है। जो देश के अंदर एक उम्मीद बनी है, यह उम्मीद अब जारी रहनी चाहिए। आज पूरे देश में दिल्ली के स्कूलों, अस्पतालों और बिजली की चर्चा हो रही है। पूरे देश में ऐसे काम नहीं हो रहे हैं। हमें इसे बंद नहीं होने देना, इसे जारी रखना है। दिल्ली के लोग जिस प्यार और मोहब्बत से रहते हैं, उस प्यार-मोहब्बत को भी हमें कायम रखना है। एक मुट्ठी की तरह हम सबको रहना है।

बल्लीमारान के विधायक एवं कैबिनेट मंत्री इमरान हुसैन ने कहा कि यह सामुदायिक भवन ग्राउंड प्लस तीन मंजिल का अत्याधुनिक भवन है, जिसकी सभी मंजिलें एयर कंडीशंड हैं और लिफ्ट की सुविधा भी उपलब्ध है। यहां मात्र दो हजार रुपए के किराए पर कार्यक्रम आयोजित किया जा सकता है, जिसमें दो हजार रुपए सिक्योरिटी और एक हजार रुपए सफाई शुल्क देना होगा। इस भवन में एक साथ एक हजार से पंद्रह सौ लोगों के कार्यक्रम किए जा सकते हैं। शादी समारोह के लिए दुल्हा-दुल्हन के लिए अलग कमरे और शौचालय की उत्तम व्यवस्था है। दो हजार रुपए में फाइव स्टार जैसी सुविधाएं मिल रही हैं, और इसके लिए वे बल्लीमारान की जनता की तरफ से अरविंद केजरीवाल जी का आभार व्यक्त करते हैं। पहले जब भी इस भवन को बनाने के लिए कोई ठेकेदार आता, तो वह इसे असंभव बताकर मना कर देता था, लेकिन अब यह भवन बनकर तैयार है। दो महीने बाद दिल्ली में चुनाव होने वाले हैं। पहले जनता ने आम आदमी पार्टी को 70 में से 67 सीटें दी थीं, फिर 62 सीटें। इस बार हमें 70 में से 70 सीटें देने का वादा करना होगा। उन्होंने भाजपा पर षड्यंत्र रचने और बदनाम करने के प्रयास का आरोप लगाया, लेकिन अरविंद केजरीवाल की ईमानदारी की तुलना सूरज की रोशनी से करते हुए कहा कि अरविंद केजरीवाल की ईमानदारी पर सवाल उठाना उसी तरह बेबुनियाद है जैसे सूरज की चमक पर शक करना। अरविंद केजरीवाल को सत्ता का कोई मोह नहीं है, वह मुख्यमंत्री का पद छोड़कर जनता की अदालत में आए हैं। हमें उन्हें 70 में से 70 सीटें जितानी है।

दिल्ली यूनिवर्सिटी के छात्र संघ चुनाव की मतगणना को मिली अनुमति

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के लिए हुए चुनाव की मतगणना की अनुमति दे दी है। चीफ जस्टिस मनमोहन की अध्यक्षता वाली बेंच ने दिल्ली यूनिवर्सिटी को निर्देश दिया कि वो 26 नवंबर तक मतगणना की प्रक्रिया पूरी करे। हाईकोर्ट ने कहा कि सार्वजनिक संपत्तियों की एक हफ्ते के अंदर सफाई और पेंटिंग हो। हाईकोर्ट ने कहा कि छात्र संघ का चुनाव लड़ रहे वर्तमान उम्मीदवारों और भविष्य के उम्मीदवारों की ये जिम्मेदारी है कि वो यूनिवर्सिटी के इंफ्रास्ट्रक्टर को साफ और बेहतर बनाकर रखे। बता दें कि दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रसंघ चुनाव की मतगणना पर मतगणना रोक लगी हुई थी, आज दिल्ली हाई कोर्ट में इस पर सुनवाई हुई। चीफ जस्टिस मनमोहन की अध्यक्षता वाली बेंच ने सुनवाई की। इससे पहले हाईकोर्ट ने 28 अक्टूबर को भी मतगणना की अनुमति देने से इनकार कर दिया था। कोर्ट ने सफाई के संबंध में ताजा स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया था। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता और वकील प्रशांत मनचंदा ने हाईकोर्ट को उन उम्मीदवारों की सूची सौंपी थी जिन्होंने चुनाव के दौरान सार्वजनिक संपत्तियों को विरुपित किया था।

हाईकोर्ट ने सभी उम्मीदवारों को निर्देश दिया था कि खराब की गई सार्वजनिक संपत्तियों की सफाई करें। कोर्ट ने उम्मीदवारों को निर्देश दिया था कि वे न केवल कॉलेज और यूनिवर्सिटी कैंपस की ही सफाई करें बल्कि शहर में उन स्थानों की भी सफाई कराएं जहां गंदगी फैलाई गई है। कोर्ट ने सभी उम्मीदवारों को निर्देश दिया था कि वे इस बात का हलफनामा दाखिल करें कि उन्होंने सार्वजनिक संपत्तियों की सफाई कर दी है। उम्मीदवार सफाई संबंधी फोटो भी कोर्ट में दाखिल करें।

कोर्ट का सफाई संबंध में ताजा स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश

इसके अलावा हाईकोर्ट ने सभी उम्मीदवारों को निर्देश दिया था कि वे इस बात का भी हलफनामा दें कि वे भविष्य में सार्येवजनिक संपत्तियों का गंदा नहीं करेंगे। बता दें कि कोर्ट ने 21 अक्टूबर को भी कहा था कि जब तक सार्वजनिक संपत्ति साफ नहीं हो जाती तब तक दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के लिए हुए चुनाव की मतगणना की इजाजत नहीं दी जा सकती है। कोर्ट ने दिल्ली मेट्रो और दिल्ली पुलिस से सफाई के संबंध में ताजा स्टेटस रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया था। क्या है पूरा मामला

सुनवाई के दौरान वकील प्रशांत मनचंदा ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के उस दावे को चुनौती दी थी जिसमें कहा गया था कि 90 फीसदी सार्वजनिक संपत्तियों को साफ कर दिया गया है। तब कोर्ट ने कहा था कि हम उनके खिलाफ कार्रवाई शुरू कर सकते हैं जिन्होंने सार्वजनिक संपत्तियों को गंदा किया है। हाईकोर्ट ने 9 अक्टूबर को भी कहा था कि जब तक सार्वजनिक संपत्ति साफ नहीं हो जाती तब तक दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के लिए हुए चुनाव की मतगणना की इजाजत नहीं दी जा सकती है। कोर्ट ने छात्र नेताओं से कहा था कि हम नतीजे रोक कर रखना नहीं चाहते हैं। आप सार्वजनिक संपत्ति को साफ कर दें, फिर से पेंट करा दें, हम अगले दिन काउंटिंग करा देंगे। सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने कहा था कि दिल्ली यूनिवर्सिटी छात्र संघ चुनाव में मुफ्त खाना बांटा जा रहा था, ऐसा हमने आम चुनाव में भी नहीं देखा। छात्र संघ चुनाव में आम चुनाव से भी ज्यादा पैसा खर्च हुआ है। यह लोकतंत्र का उत्सव है, यह मनी लांड्रिंग का उत्सव नहीं है। 26 सितंबर को हाईकोर्ट ने मतगणना पर रोक लगा दी थी।

दिल्ली यूनिवर्सिटी को करनी होगी भरपाई हाईकोर्ट ने दिल्ली यूनिवर्सिटी और सभी कॉलेज प्रशासन को निर्देश दिया था कि वे मतदान के बाद ईवीएम और बैलेट बॉक्स को अगले आदेश तक सुरक्षित और संरक्षित रखें। हाईकोर्ट ने कहा था कि जितनी भी सार्वजनिक संपत्ति को गंदा किया गया है, उसकी सफाई में आने वाली लागत की भरपाई दिल्ली यूनिवर्सिटी को करनी होगी। हाईकोर्ट ने कहा था कि दिल्ली यूनिवर्सिटी बाद में इस पैसे की भरपाई चुनाव लड़ने वाले उन उम्मीदवारों से कर सकती है

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण

राजधानी किरण

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, मंगलवार, 12 नवंबर, 2024

दिल्ली में 59 लाख पुराने वाहनों का पंजीकरण निरस्त

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली में 59 लाख पुराने वाहनों का पंजीकरण निरस्त, संकट में आए लोग; सामने आई ये सच्चाई

वी के शुक्ला, नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन विभाग ने उम्र पूरी कर चुके 59 लाख पुराने वाहनों का पंजीकरण निरस्त कर दिया है। मगर विभाग ऐसी कोई व्यवस्था नहीं खड़ी कर सका है कि लोग अपने पुराने वाहन को इलेक्ट्रिक में बदल सकें।

हालांकि कहने के लिए विभाग ने 10 साल पुराने डीजल और 15 साल पुराने पेट्रोल इन वाहनों को इलेक्ट्रिक में बदलने का एक विकल्प जनता को दे दिया है, मगर पांच साल बाद भी विभाग जहां का तहां खड़ा है।

लोग पूछ रहे हैं कि कहां लगवाएं अपने पुराने वाहन में इलेक्ट्रिक किट। सच्चाई यह है कि यह पूरा मामला अभी विभाग और कंपनियां के बीच बैठकों तक ही सीमित रह गया है।

परिवहन विभाग ने 2019 में बुलाई थी बैठक

इस योजना को लेकर परिवहन विभाग ने 2019 में बैठक बुलाई थी, तथा इस मुद्दे पर उनकी राय ली थी।उस समय करीब 11 कंपनियों ने इस मुद्दे पर अपनी सहमति जताते हुए आगे आने की बात कही थी।परिवहन विभाग ने इलेक्ट्रिक किट लगाने वाली इन कंपनियां का पैनल बना दिया था।

कारों और दोपहिया में इसका ट्रायल किया गया

कंपनियों ने दावा किया कहा है कि उन्होंने कारों और दोपहिया में इसका ट्रायल किया है जो सफल रहा है।विभाग के अधिकारी ने कहा है कि इस प्रयोग को लेकर सकारात्मक सोचने की जरूरत है। कुछ समय की बात है कि हम कारों को डीजल से इलेक्ट्रिक में करवाना शुरू करवा देंगे।

इसके लिए 11 कंपनियों का पैनल बनाया गया है।कंपनियों के संपर्क नंबर भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं लोग उनसे संपर्क कर जानकारी ली जा सकती है।मगर योजना आगे नहीं बढ़ सकी है।

दिल्ली में बच्चों के लिए स्पेशल बस सेवा शुरू की

दिल्ली के परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने रविवार को बिजवासन के धूलसिरस गांव में दो नए मार्गों 892 रळछ और 892 रढछ पर बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान उन्होंने बस में बैठकर बच्चों के साथ सेल्फी भी ली।

कैलाश गहलोत ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि नए मार्ग 892 रळछ और 892 रढछ पर बसें शुरू कर गई हैं। ग्रामीण क्षेत्रों और बाहरी दिल्ली के निवासियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए उसी दिशा में हम काम कर रहे हैं। इसके अलावा बस रूट 716 पर दो बसें और बढ़ाई गई हैं। हमारा लक्ष्य है दिल्लीवासियों की दैनिक यात्रा को आसान बनाना है।

परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने रविवार को चार बसों का हरी झंडी दिखाई है। 892 रळछ नए रूट पर शुरू की गई बस का प्रबंधन दिल्ली इंटीग्रेटेड मल्टी-मोडल ट्रांजिट सिस्टम करेगा। वहीं दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) रूट 892 रढछ पर बसें संचालित करेगा। बसों के उद्घाटन के दौरान उनके साथ विधायक भूपिंदर सिंह जून भी मौजूद रहे। वहीं कैलाश गहलोत ने लोगों को संबोधित किया।

उन्होंने कहा कि बस रूट 892 रढछ के शुभारंभ का उद्देश्य स्कूली बच्चों को सुरक्षित एवं सुगम परिवहन सुविधा प्रदान करना है जिससे उन्हें स्कूल आने-जाने में कोई कठिनाई न हो।

कोई भी धर्म नहीं सिखाता प्रदूषण फैलाना, दिल्ली में पटाखे फूटने पर सुप्रीम कोर्ट की पुलिस को फटकार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली पुलिस को फटकार लगाई है, क्योंकि पुलिस राष्ट्रीय राजधानी में पटाखों पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने में विफल रही और सिर्फ केवल कच्चा माल ही जब्त किया। कोर्ट ने टिप्पणी करते हुए कहा कि प्रदूषण मुक्त वातावरण में रहने का सभी का मौलिक अधिकार है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हमारा मानना है, कोई भी धर्म ऐसी किसी भी गतिविधि को बढ़ावा नहीं देता है जो प्रदूषण को बढ़ावा देती हो या लोगों के स्वास्थ्य के साथ समझौता करती हो।

पटाखों की बिक्री और निर्माण पर हो रोक जस्टिस अभय एस ओका और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने दिल्ली पुलिस कमिश्नर को निर्देश दिया है कि पटाखों की बिक्री और निर्माण पर रोक सुनिश्चित करें। कोर्ट ने सभी पक्षों को तुरंत सूचित करने का निर्देश दिया है। पटाखों पर प्रतिबंध के काम पूरी तरह से हों कोर्ट ने पुलिस आयुक्त को एक स्पेशल सेल बनाने का निर्देश दिया है, जो सनिश्चित करे कि पटाखों पर प्रतिबंध के कार्यान्वयन पूरी तरह से हों। साथ ही दिल्ली पुलिस कमिश्नर को प्रतिबंध लागू करने लिए उठाए गए कदमों को रिकॉर्ड पर दर्ज करने के लिए एक व्यक्तिगत हलफनामा दायर करने का निर्देश दिया है।

प्रतिबंध लगाने में देरी क्यों हुई?

कोर्ट ने आश्चर्य जताया कि दिल्ली सरकार ने पटाखों पर प्रतिबध लगाने में 14 अक्टूबर तक की देरी क्यों की, जबकि प्रतिबंध का आदेश जारी किया गया था।

पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने पर करें काम सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि दिल्ली सरकार हितधारकों का पक्ष लेकर 25 नवंबर से पहले पटाखों पर पूरी तरह से यानी स्थायी प्रतिबंध लगाने का फैसला करे। दिल्ली के कई इलाकों में घना कोहरा राजधानी दिल्ली के कई इलाकों में आज यानी सोमवार सुबह घना कोहरा छाया रहा। इस दौरान एक्यूआई (अदक) बेहद खराब स्थिति में रहा। उधर, आईजीआई एयरपोर्ट पर सबसे कम विजिबिलिटी दर्ज की गई। आइए आपको बताते हैं कि कहां कितना एक्यूआई दर्ज किया गया है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, दिल्ली भर में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) कई क्षेत्रों में ह्यबहुत खराबह्न श्रेणी में बना हुआ है, जिससे इंडिया गेट और विजय चौक के आसपास के क्षेत्र में धुंध की मोटी परत छाई हुई है।

दिल्ली के इलाकों का एक्यूआई

आनंद विहार में सुबह आठ बजे एक्यूआई 382 दर्ज किया गया है। अशोक विहार में 380 रहा, जबकि बवाना में 401 दर्ज किया गया है। उधर, आईजीआई एयरपोर्ट पर 337 दर्ज किया गया। वहीं, जहांगीरपुरी में और खराब स्थिति देखने को मिली। यहां पर एक्यूआई 411 दर्ज किया गया है। एनएसआईटी द्वारिका में 381 दर्ज किया गया है। पंजाबी बाग में 389 अदकदर्ज किया गया है।

एक साथ जली पांच चिताएं, हर आंख हुई नम

नोएडा। जिले के थाना नॉलेज पार्क क्षेत्र में कल रविवार को हुए एक सड़क हादसे में जान गंवाने वाले, एक ही परिवार के पांच लोगों का सोमवार को तड़के परिजनों ने अंतिम संस्कार कर दिया। बड़ी संख्या में लोगों की मौजूदगी में जब एक साथ पांच चिताएं जलीं और रोते-बिलखते परिजन ने अपनों को अंतिम विदायी दी तो हर आंख नम हो गई। नोएडा एक्सप्रेस-वे पर रविवार को सुबह हुए एक सड़क हादसे में एक ही परिवार के इन पांच लोगों की मौत हो गई थी। मृतकों के एक परिजन धर्मेंद्र ने बताया कि शनिवार रात दो वर्षीय बच्चे की तबीयत खराब होने पर उसके इलाज के लिए ये लोग नोएडा-ग्रेटर नोएडा के अलग-अलग प्राइवेट अस्पतालों में गए, लेकिन सभी जगह डॉक्टरों ने बच्चे की हालत खराब बताते हुए दूसरे अस्पताल में जाने को कहा। धर्मेंद्र के अनुसार, एक अस्पताल में परिजन ने बच्चे के इलाज के लिए जोर देते हुए कहा कि वह दिल्ली के अस्पतालों में पता कर बच्चे को वहां ले जाएंगे, तब तक उसका इलाज किया जाए।

दिल्ली में कम नहीं हो रहा वायु प्रदूषण, 347 दर्ज किया गया औसत एक्यूआई

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में वायु प्रदूषण की स्थिति लगातार खराब बनी हुई है। सोमवार को यहां का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 347 दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण एवं नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार राजधानी दिल्ली में सोमवार सुबह 7:30 बजे तक औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक 347 दर्ज किया गया है। जबकि दिल्ली एनसीआर के शहर फरीदाबाद में एक्यूआई 165, गुरुग्राम में 302, गाजियाबाद में 242, ग्रेटर नोएडा में 271 और नोएडा में 237 बना हुआ है। वहीं, दिल्ली के जहांगीरपुरी में एक्यूआई सबसे अधिक 409 दर्ज किया गया।

राजधानी दिल्ली के अधिकांश इलाकों में एक्यूआई का स्तर 300 से 400 के बीच में बना हुआ है, जिसमें आनंद विहार में 378, अलीपुर में 397, अशोक विहार में 389, बवाना में 400, बुराड़ी क्रॉसिंग में 352, मथुरा रोड में 316, द्वारका सेक्टर 8 में 356, डॉ करणी सिंह शूटिंग रेंज में 344, डीटीयू में 311 और आईजीआई एयरपोर्ट में 336 एक्यूआई दर्ज किया गया। इसके अलावा आईटीओ में 338, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 216, लोधी रोड में 308, मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में 369, मुंडका में 389, मंदिर मार्ग में 368, नरेला में 352, नेहरू नगर में 368, नॉर्थ कैंपस डीयू में 363, नजफगढ़ में 356, पटपड़गंज में 366, ओखला फेस 2 में 339, एनएसआईटी द्वारका में 369, आरके पुरम में 368, रोहिणी में 384, शादीपुर में 383, सिरी फोर्ट में 337, विवेक विहार में 372 और वजीरपुर में 391 एक्यूआई दर्ज किया गया।

पूर्वी जिले की गीता कॉलोनी के आसपास एक्यूआई 325 मापा गया। यहां पर सड़कों पर पानी द्वारा छिड़काव किया जा रहा है, जिससे सड़कों पर उड़ने वाली धूल वहीं पर जम जाए और हवा में ना फैले। धूल के कण हवा में फैलने से लोगों को खासकर बच्चों और बूढ़ों को सांस लेने में परेशानी का सामना करना पड़ता है।

दिल्ली दंगे: उच्चतम न्यायालय ने छात्र कार्यकर्ता की जमानत याचिका पर विचार करने से इनकार किया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

उच्चतम न्यायालय ने फरवरी 2020 में उत्तर पूर्वी दिल्ली में हुए दंगों के पीछे बड़ी साजिश के मामले में छात्र कार्यकर्ता गुलफिशा फातिमा की जमानत याचिका पर सुनवाई करने से सोमवार को इनकार कर दिया और दिल्ली उच्च न्यायालय से कहा कि वह उसकी याचिका पर 25 नवंबर को विचार करे। न्यायमूर्ति बेला एम त्रिवेदी और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता इस मामले में चार साल और सात महीने से हिरासत में है।

पीठ ने कहा कि यदि कोई असाधारण परिस्थितियां न हों तो उच्च न्यायालय में लंबित उसकी जमानत याचिका पर 25 नवंबर को सुनवाई की जानी चाहिए। फातिमा की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने शीर्ष अदालत से कहा कि उच्च न्यायालय मामले की सुनवाई नहीं कर रहा है और इसे किसी न किसी बहाने से स्थगित किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि उच्च न्यायालय ने मामले को 24 बार इसलिए स्थगित किया क्योंकि पीठासीन न्यायाधीश छुट्टी पर थे तथा छह बार मामले को अन्य कारणों से स्थगित किया गया।

सिब्बल ने कहा, यह स्वतंत्रता का प्रश्न है। उसके मामले को किसी न किसी बहाने से स्थगित किया जा रहा है। वह चार साल और सात महीने से जेल में है तथा उसका मामला दो साल से उच्च न्यायालय में लंबित है।

पीठ ने कहा कि उचित प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए और वह फातिमा द्वारा अनुच्छेद 32 के तहत दायर की गई याचिका पर विचार नहीं कर सकती। फातिमा सहित कई अन्य लोगों पर आतंकवाद रोधी कानून-गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत मामला दर्ज किया गया है, जिन पर दंगों के मुख्य षड्यंत्रकारी होने का आरोप है। इन दंगों में कम से कम 53 लोग मारे गए थे और 700 से अधिक लोग घायल हुए थे।

नोएडा में सड़क हादसे में एक रिक्शा चालक की मौत

नोएडा। नोएडा के सेक्टर 39 थानाक्षेत्र में सेक्टर 37 के पास सोमवार तड़के सड़क हादसे में एक रिक्शा चालक की मौत हो गयी। पुलिस ने यह जानकारी दी। थाना प्रभारी निरीक्षक जितेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि मोहम्मद इंशुल (59) सुबह अपना रिक्शा लेकर सेक्टर 37 के पास से गुजर रहे थे, तभी एक अज्ञात वाहन उन्हें टक्कर मार दी। उन्होंने बताया कि इस हादसे में मोहम्मद इंशुल गंभीर रूप से घायल हो गये और उन्हें जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां पर डॉक्टर ने उनको मृत घोषित कर दिया। उन्होंने बताया कि पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए ले गयी। थाना प्रभारी ने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। उनके अनुसार मोहम्मद इंशुल बिहार के पूर्णिया जिले के रहने वाले थे और यहां बरौला गांव में रहते थे। वह रिक्शा चलाकर अपना भरण-पोषण करते थे।

जल्द आएगा डूसू चुनाव का रिजल्ट, दिल्ली हाई कोर्ट ने दी मतगणना शुरू करने की इजाजत

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ (डूसू) चुनाव के मतों की गिनती शुरू करने का निर्देश दिया। दिल्ली हाई कोर्ट ने 26 नवंबर या उससे पहले मतगणना की प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दिया है। मुख्य न्यायाधीश की अगुवाई वाली पीठ ने कहा कि यह तभी आगे बढ़ सकता है, जब विश्वविद्यालय इस बात से संतुष्ट हो जाए कि चुनाव अभियान के दौरान जिन सार्वजनिक और निजी संपत्तियों को नुकसान पहुंचाया गया था, उन्हें एक सप्ताह के भीतर साफ कर दिया गया है और उनका रंग-रोगन कर दिया गया है। डीयू और संबंधित छात्र 10 दिनों के भीतर रिपोर्ट दें इसके अलावा, अदालत ने दिल्ली विश्वविद्यालय और संबंधित छात्रों को 10 दिनों के भीतर हाईकोर्ट की रजिस्ट्री में एक रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया, जिसमें पुष्टि की गई हो कि अदालत के निर्देशों के अनुसार संपत्तियों को बहाल कर दिया गया है।

आप के पूर्व पार्षद राम नारायण भारद्वाज भाजपा में शामिल हुए

नई दिल्ली । आम आदमी पार्टी (आप) के पूर्व पार्षद राम नारायण भारद्वाज सोमवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की दिल्ली इकाई के कार्यालय में पार्टी में शामिल हो गए। भाजपा की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और उत्तर-पश्चिम दिल्ली के सांसद योगेंद्र चंदोलिया ने समारोह में भारद्वाज का पार्टी में स्वागत किया और उन्हें पटका और मिठाई भेंट की। सचदेवा ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में कहा कि भारद्वाज 2017-2022 के दौरान उत्तरी दिल्ली नगर निगम के बाकानेर वार्ड से आप पार्षद थे।

छात्रों ने देखी जामिया की प्रयोगशाला

नई दिल्ली। आईपी यूनिवर्सिटी से संबद्ध कॉलेज आईआईटीएम के छात्रों ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कंप्यूटर विज्ञान विभाग में बिग डेटा, आईओटी और क्लाउड कंप्यूटिंग प्रयोगशाला के एक सूचनात्मक शैक्षिक दौरे में भाग लिया। इस ज्ञानवर्धक अनुभव वाले शैक्षिक भ्रमण के दौरान छात्रों का मार्गदर्शन आईआईटीएम के सहायक प्रोफेसर डॉ. मंजूर अंसारी ने किया। जामिया के कंप्यूटर विज्ञान विभाग के प्रो. मनसफ आलम ने इस प्रयोगशाला को विकसित किया था।

मोबाइल चोरी कर भाग रहे युवक को पकड़ा

नई दिल्ली। चाणक्यपुरी इलाके में बस से मोबाइल चोरी कर भाग रहे युवक को ट्रैफिक पुलिस के दो सिपाहियों ने पकड़ लिया। सिपाही राजकुमार और मीना ने आरोपी के पास से चोरी का मोबाइल बरामद कर लिया है। ट्रैफिक पुलिस के अनुसार सोमवार सुबह चाणक्यपुरी इलाके में सिपाही राजकुमार और मीना नेहरा यातायात व्यवस्था संभाल रहे थे। इसी दौरान उन्होंने आरोपी को भागते हुए देखा। इसके बाद उसका पीछा कर उसे दबोच लिया।

बदमाशों ने लाखों की नगदी पर हाथ साफ की

नई दिल्ली। लाजपत नगर इलाके में आठ नवंबर को बदमाशों ने एक घर से लाखों की नगदी और ज्वैलरी चोरी कर ली। वारदात के समय महिला डॉक्टर के पास दवाई लेने के लिए गई थी। घर वापस लौटने पर उन्हें चोरी की जानकारी हुई। इसके बाद मामले की सूचना पुलिस को दी गई। लाजपत नगर थाना पुलिस ने महिला के पति नवीन के बयान पर केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। मामले में सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है।

हफ्ता वसूली के लिए सब्जी विक्रेता को गोली मारी

नई दिल्ली। द्वारका नॉर्थ इलाके में हफ्ता वसूली और डर फैलाने के लिए दो बदमाशों ने एक सब्जी विक्रेता की गोली मारकर हत्या कर दी। द्वारका जिला पुलिस की एंटी नारकोटिक्स सेल ने नौ नवंबर को दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों प्रशांत और अमन सिद्दीकी के पास से पिस्तौल और जिंदा कारतूस बरामद हुई है। पुलिस उपायुक्त अंकित सिंह ने बताया कि 23 अक्तूबर को द्वारका नॉर्थ इलाके में सब्जी विक्रेता पर फायरिंग की सूचना मिली थी। पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो पता चला कि सब्जी विक्रेता को अस्पताल ले जाया गया है। अस्पताल में उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। सीसीटीवी फुटेज के विश्लेषण के बाद पुलिस टीम ने आरोपियों की पहचान की। पुलिस ने एक आरोपी प्रशांत को हथियार के साथ रामा पार्क से गिरफ्तार कर लिया। आरोपी से पूछताछ के बाद पुलिस ने अमन सिद्दीकी को भी गिरफ्तार कर लिया।

विश्वास है कि न्यायमूर्ति खन्ना विशिष्टता के साथ न्यायपालिका की सेवा करेंगे : खरगे

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने न्यायमूर्ति संजीव खन्ना के भारत के 51वें प्रधान न्यायाधीश के रूप में शपथ लेने के बाद उन्हें सोमवार को शुभकामनाएं दीं तथा कहा कि व्यापक अपेक्षाओं के कारण यह पद उन पर और जिम्मेदारी डालेगा। खरगे ने विश्वास जताया कि न्यायमूर्ति खन्ना इस जिम्मेदारी का भार उठा पाएंगे और न्यायपालिका की विशिष्टता के साथ सेवा करेंगे।

कांग्रेस अध्यक्ष ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, ह्यह्यन्यायमूर्ति संजीव खन्ना को भारत के 51वें प्रधान न्यायाधीश के तौर पर शपथ लेने के लिए शुभकामनाएं देता हूं। भारत के प्रधान न्यायाधीश का पद व्यापक अपेक्षाओं के कारण निस्संदेह उनके कंधों पर अधिक बोझ डालेगा। उन्होंने कहा, मुझे विश्वास है कि अपने लंबे और विशिष्ट अनुभव के कारण वह इस जिम्मेदारी का भार उठा पाएंगे और विशिष्टता के साथ न्यायपालिका की सेवा करेंगे। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना ने सोमवार को भारत के 51वें प्रधान न्यायाधीश के रूप में शपथ ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में न्यायमूर्ति खन्ना को पद की शपथ दिलाई। 14 मई, 1960 को जन्मे न्यायमूर्ति खन्ना छह महीने से कुछ अधिक समय तक भारत के मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य करेंगे और 65 वर्ष की आयु पूरी होने पर 13 मई, 2025 को सेवानिवृत्त हो जाएंगे। उन्होंने न्यायमूर्ति डी. वाई. चंद्रचूड़ का स्थान लिया है। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ 65 वर्ष की आयु पूरी होने पर रविवार को सेवानिवृत्त हो गए।

टाटा पावर डीडीएल को मिला इंटरनेशनल स्मार्ट ग्रिड एक्शन नेटवर्क का एक्सीलेंस अवॉर्ड

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

नॉर्थ दिल्ली में 7 मिलियन से अधिक की आबादी के लिए बिजली सप्लाई करने वाली अग्रणी पावर यूटिलिटी टाटा पावर-डीडीएल ने अपने प्रोजेक्ट - एन्हान्सिंग ग्रिड रेजिलिएंस थ्रू एंड-यूजर बिहेवियरल डिमांड रेस्पॉन्स के लिए इंटरनेशनल स्मार्ट ग्रिड्स एक्शन नेटवर्क अवार्ड फॉर एक्सीलेंस 2024 जीतकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मान हासिल किया है। यह पुरस्कार समारोह हाल ही में ब्राजील में आयोजित किया गया था जिसमें टाटा पावर-डीडीएल के इस प्रोजेक्ट को चुनींदा कंपनियों के बीच उत्कृष्ट योगदान के लिए ह्यमानद उल्लेख भी प्राप्त हुआ। इस पुरस्कार के लिए विजेताओं का चयन अत्यंत विशिष्ट इंटरनेशनल जूरी द्वारा ग्लोबल स्मार्ट एनर्जी फेडरेशन (जीएसईएफ) के सहयोग से किया गया। समारोह 1-3 अक्टूबर के दौरान 15वीं क्लीन एनर्जी मिनिस्ट्रियल मीटिंग (उएट15/टक-9) के तहत आयोजित किया गया था। इस ग्लोबल फोरम का मकसद वैश्विक स्तर पर क्लीन एनर्जी इकनॉमी

को अपनाने की दिशा में जारी मौजूदा नीतियों एवं प्रोग्रामों तथा श्रेष्ठ कार्य प्रथाओं को साझा करना है।

आईएसजीएएन अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस दुनियाभर में लागू स्मार्ट ग्रिड्स प्रोजेक्ट्स में से उत्कृष्ट की पहचान करने के साथ-साथ स्मार्ट ग्रिड्स में लीडरशिप एवं इनोवेशन का लाभ उठाते हुए श्रेष्ठ कार्य प्रथाओं के वैश्विक स्तर पर आदान-प्रदान में तेजी लाने के लिए प्रयासरत है। साथ ही, यह अन्य मार्केट्स, देशों एवं क्षेत्रों में संबंधित अवधारणाओं को बढ़ावा देने एवं उनको अपनाने के लिए भी प्रेरित करता है। टाटा पावर-डीडीएल अपने शानदार और नवाचारी एनर्जी सॉल्यूशंस के लिए अपनी पहचान बना चुका है। डिस्कॉम ने ग्रिड की स्थिरता और कार्यकुशलता को प्राथमिकता देते हुए भरोसेमंद बिजली सप्लाई और बेहतर ग्रिड स्थिरता के मामले में इंडस्ट्री में नए मानक रचे हैं।

इस पुरस्कार को जीतने पर श्री गजानन एस काले, चीफ एग्जीक्युटिव ऑफिसर, टाटा पावर-डीडीएल ने कहा, हम इस पुरस्कार को प्राप्त कर सम्मानित महसूस कर रहे हैं। स्मार्ट ग्रिड टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में प्रगति को बढ़ावा देने के लक्ष्य पर कार्यरत टाटा पावर-डीडीएल के लिए यह इंटरनेशनल सम्मान ग्रिड क्वालिटी और रेजिलिएंस में उसकी नेतृत्व क्षमता का सूचक है जो एनर्जी के क्षेत्र में अक्षय ऊर्जा के स्त्रोतों की ओर प्राथमिकता को दशार्ता है। यह पुरस्कार हमें स्मार्ट ग्रिड के क्षेत्र में एक्सीलेंस और इनोवेशन के लिए प्रयास जारी रखने को प्रेरित करेगा।

यह पुरस्कार इस बात का भी सूचक है कि टाटा पावर-डीडीएल ने बिहेवियरल डिमांड रिस्पॉन्स (बीडीआर) प्रोग्राम के जरिए एक उल्लेखनीय पहल शुरू कर स्वयं को भारत में ग्रिड रेजीलिएंस के अग्रणी मोर्चे पर ला खड़ा किया है। पीक आवर्स के दौरान बिजली की बढ़ती मांगों को पूरा करने के मकसद से तैयार बीडीआर प्रोग्राम रिहाइशी तथा कमर्शियल दोनों ही वर्गों के उपभोक्ताओं को अपने-अपने स्तरों पर बिजली का अधिक कुशलतापूर्वक उपयोग करने की दिशा में सशक्त बनाता है, जिससे ग्रिड पर भी दबाव कम करने, पर्यावरण पर असर घटाने, और एनर्जी सस्टेनेबिलटी को बढ़ावा देने में मदद मिलती है। बीडीआर प्रोग्राम को वित्व 22 में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर लॉन्च किया गया था। टाटा पावर-डीडीएल का बीडीआर प्रोग्राम एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य के साथ शुरू किया गया था झ्र यह था उपभोक्ताओं को, खासतौर से पीक डिमांड पीरियड में, प्रोएक्टिव एनर्जी मैनेजमेंट से जोड़ना।

शालीमार बाग विधानसभा पहुंची कांग्रेस की न्याय यात्रा, देवेंद्र यादव ने चुनाव में जीत का किया दवा

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

राजधानी दिल्ली में कांग्रेस की तरफ से दिल्ली न्याय यात्रा निकाली गई है। जिसकी शुरूआत राजघाट से की गई थी, जो 70 विधानसभाओं में होते हुए करीब 360 किलोमीटर का सफर तय करेगी। आज यात्रा के चौथे दिन दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने हैदरपुर गांव, शालीमार बाग विधानसभा में यात्रा की शुरू करने से पहले राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि राजधानी में महंगाई और बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है जिस पर नियंत्रण करने में भाजपा और आम आदमी पार्टी पूरी तरह से विफल साबित हुई है। कांग्रेस न्याय यात्रा में दिल्ली वालों की परेशानियों को जनता के साथ मिलकर, चर्चा करके, उनके समर्थन से खत्म करने के लिए रास्ते बनाए जाएंगे। दिल्ली न्याय यात्रा के दौरान कार्यकर्ता ह्यह्यदिल्ली की ललकार, चाहिए कांग्रेस की सरकारह्नह्न के नारे लगा रहे है। दिल्ली के लोग बदलाव चाहते है और 2025 के विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को नकार कर कांग्रेस की सरकार बनाने के लिए अग्रसर है। ध्वजारोहण कार्यक्रम के दौरान दिल्ली कांग्रेस सेवादल की टीम प्रतिदिन पूरी सक्रियता से कांग्रेस की ऐतिहासिक परम्परा अनुसार नियमों के तहत दिल्ली न्याय यात्रा को सफल बनाने में अहम भूमिका निभा रहे है। आज की यात्रा का समापन माडल टाउन विधानसभा में गुजरांवाला टाउन में हुआ। यात्रा के दौरान रास्तें में पड़ने वाले मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च सभी में प्रार्थना करके प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव परेशान और प्रताड़ित दिल्ली वालां की खुशहाली, समृद्धि और विकास की कामना भी कर रहे है। यात्रा के दौरान जगह-जगह देवेन्द्र यादव सहित यात्री योद्धाओं को भव्य स्वागत किया जा रहा है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि यात्रा में महिलाएं, युवा बढ़चकर हिस्सा ले रहे है, गांव वाले, झुग्गियों वालों की की समस्याओं पर चर्चा हो रही है। औद्योगिक क्षेत्र की एसोसिएशन भी यात्रा में बढ़चढ़ कर यात्रा का स्वागत कर रही है। लोगों के बढ़चढ़कर दिल्ली न्याय यात्रा में जुड़ने से साबित हो गया है कि यात्रा को निश्चित ही अप्रत्याशित समर्थन मिल रहा है, लोग अपनी समस्याए साझा कर रहे है। उन्होंने कहा कि हमें खुशी भी होती है और दर्द भी होता है। जिस उम्मीद के साथ लोगों ने भाजपा और आम आदमी पार्टी को चुना था वो लोगों की वो उम्मीद पूरी तरह खत्म हो चुकी है। यात्रा के दौरान कूड़े के ढ़ेर भी लगे हुए है, जिस पर चिंता जताते हुए श्री यादव ने कहा कि सरकारें पूरी तरह फेल साबित हुई है। श्री यादव ने कहा कि आज बेरोजगारी बड़ी समस्या है और यूपीए सरकार में रहे मंत्री श्री अजय माकन ने जो वेंडिंग पालिसी बनाई थी ताकि दिल्ली के 5 लाख से अधिक रेहड़ी पटरी वालों की अजीविका सुचारु रुप से चल सके और उन्हें निगम, पुलिस और प्रशासन तंग न कर सके। परंतु पिछले 11 वर्षो में वेडिंग पालिसी पर कोई काम न करने वाले पूर्व मुख्यमंत्री 3 दिन पहले यहां आकर कहा कि सरकार ने वेंडिग पालिसी जारी कर दी है। मैं पूछना चाहता हूॅ केजरीवाल कब तक जनता के बीच झूठ बोलेंगे। उन्होंने कहा कि वेंडिग पालिसी लागू होने के बाद लोगों को रोजगार मिलेगा, युवा शराब की ओर नही जाऐंगे। महंगाई पर भी नियंत्रण किया जा सकेगा। दिल्ली में महंगाई सबसे ज्यादा है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि आम आदमी पार्टी को शासन चलना नही आता है या फिर इन्हें दिल्ली की जनता की चिंता नही है। लगातार बढ़ते भ्रष्टाचार के कारण दिल्ली चौतरफा बदहाल हो गई है। प्रदूषण इतना गंभीर स्तर पर पहुच गया है कि लोगों को सांस लेने तक में परेशानी झेलनी पड़ रही है। उन्होंने कहा कि रेहड़ी पटरी, खोमचा, मोची, नाई, सब्जीवाला, रिक्शा वाला सभी परेशान है इनको रोज डंडे पड़ते है, रोजगार चलाने पर प्रताड़ित किया जा रहा है। बुजुर्गो को पेंशन नही मिल रही है, गरीब का राशन कार्ड नही बन रहा है। बिजली महंगी, गंदा पानी से जनता परेशान है। लोगों को पानी खरीद कर पीना पड़ रहा है।

छंद विधान विशेष पर लिखी हुई पुस्तक हिंदी छंद मंजूषा का हुआ लोकार्पण

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन के द्वारा छंद के विद्वान आचार्य अनमोल की पुस्तक का लोकार्पण हिंदी भवन नई दिल्ली में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार इंदिरा मोहन ने की। कार्यक्रम में सारस्वत अतिथि के रूप में वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष एवं हिंदी भाषा के मर्मज्ञ अनिल जोशी उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के साहित्य विभाग के प्रोफेसर बी नंदा उपस्थित रहे। इसी अवसर पर अमेरिका से पधारे हुए प्रसिद्ध छंद कवि एवं साहित्य मंच के अध्यक्ष इंद्रदेव मिश्र ह्यदेवह्न उपस्थित रहे। सम्मानित अतिथि के रूप में अंतरराष्ट्रीय कवि गजेंद्र सोलंकी का सामीप्य मिला तथा कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो० जगदेव कुमार शर्मा उपस्थित रहे। इसी अवसर पर हिंदी भवन के सचिव डॉ गोविंद व्यास भी मंच पर उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है छंद शास्त्र के विद्वान आचार्य अनमोल द्वारा लिखित छंद विधान की पुस्तक हिंदी छंद मंजूषा वर्तमान समय में छंद शास्त्र सीखने के लिए तथा छंद प्रेमियों को मार्गदर्शन देने के लिए बहुत ही प्रासंगिक है। वास्तव में ऐसी पुस्तक वर्तमान समय में या तो लिखी नहीं जा रही अथवा थोड़े से विषय को लेकर ही लिखी जा रही हैं। इस पुस्तक में आचार्य अनमोल ने छंद लेखन के ज्ञान को उदाहरण सहित लिखकर गागर में सागर भर दिया है। इस ग्रंथ के प्रारंभ में शब्द शक्ति, काव्य में आने वाले दोषों का परिहार, कविता और गीत में मौलिक अंतर आदि को बड़े विस्तार के साथ बताया गया है। विषय के वर्णन में उन्होंने काव्य में प्रयोग होने वाले 80 छंदों का वर्णन अपने ही उदाहरण द्वारा किया है। मुक्त छंद और छंदोबद्ध कविता के अंतर को बड़े ही प्रामाणिक ढंग से बताया है। आचार्य अनमोल ने स्पष्ट कहा है की जितनी काव्य की गरिमा और काव्य शक्ति छंदोबद्ध कविता में होती है, उतनी मुक्त छंद, नई कविता, अकविता और प्रयोगवादी कविता में नहीं होती। इसीलिए छंद में लिखी हुई कविता को लोग आज घरों में गुनगुनाते हुए मिल जाते हैं। पुस्तक के लेखक आचार्य अनमोल ने आगे बताया है कि कुछ ऐसे स्वयंभू छंद हैं, जिन्हें कुछ तथाकथित कवि अनावश्यक रूप से बढ़ावा दे रहे हैं। ग्रंथ के आखिरी में लेखक ने नवोदित कवियों को संबोधित करते हुए एक सारगर्भित लेख लिखा है।

तिहाड़ में यासीन मलिक की भूख हड़ताल खत्म

नई दिल्ली। तिहाड़ जेल अधिकारियों ने सोमवार को दिल्ली उच्च न्यायालय को सूचित किया कि अलगाववादी नेता और सजायाफ्ता यासीन मलिक ने आठ नवंबर को अपनी भूख हड़ताल समाप्त कर दी है। उन्हें आवश्यक चिकित्सा दी जा रही है। दरअसल, मलिक ने अपने कथित बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण एम्स में भर्ती होने की मांग की है। इसपर केंद्र सरकार ने जवाब दाखिल करने से पहले जेल अधिकारियों द्वारा चिकित्सा स्थिति रिपोर्ट की समीक्षा करने के लिए अतिरिक्त समय का अनुरोध उच्च न्यायालय से किया। न्यायमूर्ति जसमीत सिंह की पीठ ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद इस मामले में अगली सुनवाई 18 नवंबर के लिए निर्धारित की है। इस बीच पीठ ने जेल अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि मलिक को जेल नियमावली के अनुसार उचित चिकित्सा मिले। पेश मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय ने बीते शुक्रवार को यासीन मलिक द्वारा दायर याचिका पर केन्द्र सरकार, तिहाड़ जेल के महानिदेशक और अन्य संबंधित अधिकारियों को नोटिस जारी किया था। मलिक ने याचिका में दावा किया है कि आवश्यक चिकित्सा उपचार से कथित इनकार के कारण वह एक नवंबर से भूख हड़ताल पर हैं। मलिक के वकील की तरफ से पेश दलीलों पर विचार करने के बाद पीठ ने संबंधित जेल अधीक्षक से मलिक की चिकित्सा स्थिति रिपोर्ट मांगी। दरअसल, इस साल की शुरूआत में यासीन मलिक ने अपर्याप्त इलाज, गंभीर हृदय और गुर्दे की समस्याओं का हवाला देते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था।

एआई कैमरे की मदद से वाहन चोर पकड़ा

नई दिल्ली। पश्चिमी जिला पुलिस ने नौ नवंबर को चोरी के तीन दोपहिया वाहन के साथ एक वाहन चोर को गिरफ्तार किया है। आरोपी गुरदीप सिंह उर्फ पाजी पर 16 आपराधिक मामले दर्ज हैं। स्मार्ट मॉनिटरिंग टूल्स की मदद से इंस्पेक्टर मनीष चौधरी की टीम ने वाहन चोरी के एक मामले में सीसीटीवी फुटेज की मदद से वाहन चोर की पहचान की और उसका फोटो एआई कैमरों में फीड किया। इसके बाद विष्णु गार्डन से आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया।

संक्षिप्त खबरें

टेटिया बम्बर थाना में पदस्थापित पुलिसकर्मी नशे में हुआ गिरफ्तार

हवेली खड़कपुर (मुंगेर)। बिहार सरकार के शराब बंदी कानून को अमली जामा पहनाने वाले ही अगर शराब के नशे में हो, तो शराब बंदी की सफलता का अनुमान लगाया जा सकता है ताजा उदाहरण टेटिया बंबर थाना का है जहां शनिवार की शाम शराब के नशे में धूत एक पुलिसकर्मी राजेश कुमार को थाने से ही गिरफ्तार किया गया है । राजेश कुमार की जांच ब्रेथ इन लाइजर की गई । जिसमें शराब पीने की पुष्टि हो गई जानकारी देते हुए हवेली खड़गपुर एसडीपीओ चंदन कुमार ने बताया कि सूचना मिली कि थाने में ही शराब के नशे में है जिस पर थाना अध्यक्ष मुकेश कुमार को निर्देशित किया गया कि उसे हिरासत में लेकर शराब पीने की जांच करवाई जाए। डीएसपी के निर्देश के आलोक में थाना अध्यक्ष मुकेश कुमार ने त्वरित कार्रवाई करते हुए ब्रेथ एनालिसिस से जांच की जिसमें शराब पीने की पुष्टि हो गई इसके बाद उसे गिरफ्तार कर सक्षम न्यायालय में भेज दिया गया।

चुनाव को लेकर ईसीआरकेयू की हुई बैठक, महामंत्री हुए मौजूद, 4,5,6 दिसम्बर को होगा गुप्त मतदान

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] आगामी 4, 5, 6 दिसम्बर को रेलवे में मान्यता प्राप्ति को लेकर होने वाले रेल यूनियन की चुनाव को लेकर एक तरफ अलग अलग यूनियन के द्वारा रेलकर्मियों के बीच पहुंचकर रेलकर्मियों से सम्पर्क साध रहे हैं तो वही दूसरी ओर ईस्ट सेंट्रल रेलवे कर्मचारी यूनियन(ईसीआरकेयू) की ओर से सोमवार को रेलवे कोठी संख्या 1में बने यूनियन कार्यालय में यूनियन के पदाधिकारियों, रेलकर्मियों के बीच बैठक की गई। जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में यूनियन के महामंत्री एसएनपी श्रीवास्तव उपस्थित हुए। बैठक में यूनियन नेता बीके सिंह, यूनियन नेता मनोज कुमार, रवि चक्रवती, झाझा शाखा के यूनियन अध्यक्ष भारत भूषण, सचिव राजेश कुमार सिन्हा, सहायक सचिव नीलेश चौधरी,शाखा पार्षद रविकांत माथुरी,मनोहर कुमार, मंटू गुप्ता, अमित कुमार, उपेंद्र कुमार, राजेश कुमार, संजय कुमार रजक, सहित अन्य लोग शामिल थे। महामंत्री ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ईसीआरकेयू सबसे बड़ी और पुरानी यूनियन है । हमलोगों की जितनी मजबूती होगी उतनी वर्तमान सरकार से अपनी मांगों की लड़ाई लड़ी जाएगी। महामंत्री ने आगे कहा कि यह यूनियन हमेशा रेलकर्मियों के हित के लिए कार्य कर रही है। इसलिए तीन दिनों तक होने वाली चुनाव में हमलोगों को बड़ी जीत दर्ज करनी होगी। महामंत्री ने बताया कि इस बार का चुनावी मुद्दा यह है कि रेलवे के खाली पड़े 2.5 लाख पद को भरा जाए। उन्होंने कहा कि आज रेल की पटरी बढाई जा रही है, विद्युतीकरण किया जा रहा है, ट्रेन बढ़ रही है लेकिन रेलकर्मियों की बहाली नही हो रही है जिसके रेल पटरी, ट्रेन आदि का मरम्मत नही हो रहा है जिसके कारण आये दिन दुर्घटना हो रही है। वही बॉक्स पोर्टर हटाने पर उन्होंने कहा कि हमारी यूनियन ने फिलहाल इस मुद्दे पर आवाज उठाकर इज नियम को स्थगित करवाया है। एनपीएस के विरुद्ध भी ईसीआरकेयू ने लगातार प्रदर्शन किया । वही सेवानिवृत्त रेलकर्मियों के बच्चों को रेलवे में भर्ती की मांग भी किया जा रहा है और उसपर यूनियन प्रयासरत है। महामंत्री ने कहा कि इस बार ईसीआरकेयू की जीत होने पर रेलवे में कई बदलाव रेलकर्मियों के हित के लिए किया जाएगा। मौके पर ईसीआरकेयू महिला संगठन से भी कई लोग मौजूद थे।

पीएम के आगमन को लेकर भाजपा के लोगों ने की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] आगामी 15 नवंबर को जमुई जिला के खैरा प्रखंड में बिरसामुण्डा की 150 वीं जयंती कार्यक्रम में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन को लेकर सोमवार को झाझा मुख्य बाजार स्थित गोयल भवन में भाजपा की ओर से एक बैठक आयोजित की गई जिसमे नगर, प्रखंड के पार्टी पदाधिकारी शामिल हुए। बैठक की अध्यक्षता पार्टी के नगर अध्यक्ष सूरज सिंह ने किया। बैठक में लोगों के बीच पीएम के होने वाले कार्यक्रम में अधिक से अधिक लोगों को जमुई ले जाने पर चर्चा किया गया। बैठक में मंडल अध्यक्ष कृष्णनंदन राय ,सुरेन्द्र यादव, विजय अग्रहरी, बिंदेश्वरी प्रसाद साव, सतनारायण तुरी, कंचन देवी, शंभू नाथ प्रजापति, शैलेश कुमार आदि ने चर्चा करते हुए कहा कि नगर और प्रखंड में जो भी पार्टी के पदाधिकारी बूथ स्तर तक के है वह बड़ी संख्या में लोगों को लेकर जमुई जाना है ताकि पीएम के कार्यक्रम को सफल बनाया जा सके। बैठक में कार्यक्रम को लेकर अन्य कई बिंदुओ पर भी लोगों के बीच चर्चा हुई।

ट्रैक्टर बुजुर्ग पर चढ़ा, स्थिति बनी नाजुक , खड़ी ट्रैक्टर में गियर दबा देने से हुआ हादसा

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] लक्ष्मीपुर थानाक्षेत्र के दिग्घी मोहनपुर गांव में खेत मे खड़े एक बुजुर्ग पर ट्रैक्टर चढ़ गया जिससे वह गम्भीर रूप से घायल होगा। घायल की पहचान 65 वर्षीय महेंद्र यादव के रूप में हुई। जिसे परिजनों ने झाझा के एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया जहां उसका इलाज हुआ और उसके बाद उसे रेफरल अस्पताल झाझा 1 बजे लाया गया जहां डॉक्टर ने इलाज करने के बाद घायल की स्थिति नाजुक रहने पर उसे बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया। घायल बुजुर्ग का भतीजा गणेश यादव ने बताया कि सोमवार की मेरे बड़े पापा खेत पर खड़ा था और उसी जगह ट्रैक्टर से खेत जुताई का काम हो रहा था जिसके बाद खेत जुताई का काम खत्म कर ट्रैक्टर खड़ा था तभी गांव का एक बच्चा ट्रैक्टर पर चढ़कर गियर दबा दिया जिससे ट्रैक्टर सीधे बड़े पापा के ऊपर चढ़ गया। जिसके बाद उन्हें घायल अवस्था मे उठाकर झाझा के हड्डी रोग डॉक्टर के क्लिनिक में भर्ती करवाया गया जहां 20 हजार रुपए लिया और इलाज किया लेकिन स्थिति नाजुक ही बनी हुई अवस्था मे हमलोगों को मरीज ले जाने के लिए कहा। जिसके बाद हमलोगों ने सरकारी अस्पताल लाया। वही घायल बुजुर्ग की स्थिति काफी नाजुक बनी हुई है।

भौराटांड़ में खोला गया निःशुल्क शिक्षण संस्थान

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। प्रखंड के रतनपुर पंचायत के भौराटांड़ गांव में समग्र सेवा जमुई द्वारा 14 से 22 आयु वर्ग के किशोरियों एवं युवतियों को बी बॉस दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से मैट्रिक की परीक्षा की तैयारी एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था को लेकर भौराटांड़ गांव में मुफ्त शिक्षण संस्थान का वार्ड सदस्य अजीत कुमार यादव द्धारा फीता काट कर निःशुल्क शिक्षण संस्थान का शुभारंभ किया गया।उक्त संस्थान का शुभारंभ भौराटांड़ महादलित टोला के नव सृजित प्राथमिक विधालय में किया गया है। इस मौके पर कार्यक्रम में मौजूद समग्र सेवा के पुजा कुमारी वार्ड सदस्य अजीत कुमार यादव,पिंकी कुमारी आदि मौजूद थी।इस मौके पर संस्था के सदस्यों ने बताया कि जिले के विभिन्न प्रखंडों में कुल 12 सेंटर संचालित हैं,जिसमें संस्था के प्रयास से 220 छात्र-छात्राएं मुफ्त शिक्षा अर्जन कर रहे हैं।वहीं कार्यक्रम के अवसर पर छात्र-छात्राओं को स्टडी मेटेरियल उपलब्ध कराया गया।इस मौके पर दर्जनों की संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

खेती-किसानी- खेतों में धान पक कर तैयार पर कटनी के लिए नहीं मिल रहे हैं मजदूर

- मजदूरों के पलायन से धान कटनी में देरी

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। प्रखंड क्षेत्र के किसान के खेतों में धान की फसल पककर तैयार हो चुका है। धान की फसलों को कटनी का इंतजार है। जबकि मजदूरों के पलायन के कारण धान कटनी के लिए मशीन ही एकमात्र विकल्प है और खेतों में अत्यधिक नमी के कारण मशीन का खेत में पहुंचना मुश्किल हो रहा है। बता दें कि अधिकांश कमाऊ युवा मजदूर दूसरे प्रदेशों के ईट भट्टे पर चले गए हैं। जबकि खेतों में पककर तैयार धान की फसल कटनी का इंतजार कर रही है। किसान कहते हैं कि अग्रिम वैरायटी की फसल कटनी में देर के कारण धीरे-धीरे झुलसने लगा है। कुछ फसल रोगग्रस्त होने लगे हैं। इस बार लगातार पानी तथा पर्याप्त वर्षा से खेतों में अच्छी फसल है। लेकिन लगातार पानी रहने के कारण खेतों में नमी अभी भी बरकरार है। जिस कारण हार्वेस्टिंग मशीन से संभव नहीं हो पा रहा है। धान कटनी में विलंब का मुख्य कारण क्षेत्र से मजदूरों का वृहत पैमाने पर पलायन होना है। दुर्गा पुजा के उपरांत मजदूरों का पलायन शुरू हो गया।अब स्थिति है कि हजारों की आबादी वाले अनुसूचित टोले में कुछ वृद्ध दिव्यांग मजदूर ही शेष बचे हैं। जिनसे कटनी संभव नहीं है। प्रखंड के कुछ गांवों के साधन संपन्न किसानों के पास धान कटनी के लिए हार्वेस्टर मशीन उपलब्ध है। बावजूद किसानों को मजदूरों की कमी खल रही है। खेतों में नमी से हार्वेस्टिंग प्रभावित इस वर्ष अच्छी बारिश के कारण क्षेत्र में मानसून के अलावे नहर पानी खेतों को मिलते रहा है। फलतः फसल के पक जाने पर भी खेतों में नमी की अधिकता से हार्वेस्टिंग करने में परेशानी हो रही है। रतनपुर के ग्रामीण किसान बेनी यादव,दरोगी पासवान, अर्जुन यादव,बासकी मंडल, विजय मंडल आदि लोगों कहते हैं कि अगर ससमय धान की कटनी नहीं हुई तो निश्चित समय पर रवि की बोआई संभव नहीं हो पायेगा। क्षेत्र लोगों का मानना है कि सरकार को मजदूरों के पलायन रोकने के लिए स्थाई तौर पर रोजगार मुहैया कराने की व्यवस्था करनी चाहिए। सिर्फ मनरेगा के भरोसे,पलायन रुकने वाला नहीं है। क्योंकि मजदूरों के लिए बनाई गई मनरेगा योजना में मजदूर की जगह मशीन कार्य करता है।किसानों को कभी मानसून की दगाबाजी,तो कभी अतिबृष्टि या तूफानी हवा के प्रभाव से फसलों को क्षति होती है। किसान के खेतों में जब फसल कुछ ठीक-ठाक होती है, तब मजदूरी की कमी से फसल बर्बाद होता है। जिसका समाधान सरकार को ढूंढना चाहिए।

ई रिक्शा पलटने से चालक सहित चार लोग हुए घायल, रेफर

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] धमाना मोड़ के पास सोमवार की दोपहर में एक ई रिक्शा पलटने से चालक सहित उसपर सवार दम्पति और उसकी घायल हो गया। घटना की जानकारी रेफरल अस्पताल को मिलने पर सभी घायलों को घटना स्थल से एम्बुलेंस से उठाकर इलाज के लिए रेफरल अस्पताल झाझा लाया गया जहां डॉक्टर नबाब ने सभी घायलों का इलाज किया। घायल की पहचान थानाक्षेत्र के डुमरमोह गांव के रहने वाले बाबूलाल मराण्डी, उसकी पत्नी बड़की मराण्डी, पुत्री पार्वती मुर्मू एवं उसी गांव के ई रिक्शा चालक सुनील साह के रूप में हुई है। सभी घायलों गहरी चोट लगने के कारण सभी की स्थिति नाजुक बनी हुई थी जिसका डॉक्टर ने प्राथमिकी उपचार करने के बाद बेहतर इलाज के लिए तुरंत सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया। घायल बाबूलाल मरांडी का छोटा भाई मुन्ना मराण्डी ने बताया कि भईया, भाभी और भतीजी अपने रिश्तेदार के घर गुड़ियारा गया था और ई रिक्शा से वापस डुमरमोह गांव ई रिक्शा से लौट रहा था कि धमाना मोड़ के पास अचानक ई रिक्शा अनियंत्रित हो गया और ई रिक्शा पलट गया। जिसके बाद हमलोगों को भी स्थानीय लोगों के द्वारा सूचना दी गई। घटना की जानकारी पुलिस को मिलने के बाद पुलिस अस्पताल पहुंची और घायल के परिजनों से घटना के संदर्भ में पूरी जानकारी लेते हुए आगे की कार्रवाई में जुट गई।

निःशुल्क सेवा शिविर सह रोगी परामर्श के साथ दवा वितरण

प्रात : किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)। भारतीय रैड क्रास शाखा मुंगेर के सौजन्य से पैरु मंडल टोला मोड़ के समीप निःशुल्क सेवा शिविर सह रोगी परामर्श के साथ साथ दवा वितरण किया गया। इस अवसर पर पियरलैश फोण्डेशन के चिकित्सिक डा आकाश कुमार, आयुश चिकित्सक डा नेहा अग्रवाल, मुंगेर सोसाइटी से डा बेद प्रकाश, डा हेमन्त कुमार, डा अनील सागवानी ,डा अंकित कुमार के द्वारा 250 रोगीयों का निबंधन किया गया सभी रोगीयों के स्वास्थ्य जॉच कर उचित सलाह के साथ साथ मुफ्त में दवा उपलब्ध कराया गया। रोगियों में से अधिक तर चौटील्य के साथ साथ हड्डी चर्म रोग के रोगी पाये गये। जिन्हें उचित सलाह देकर बिदा किया गया।

धरहरा में एक व्यक्ति का अपहरण

मुंगेर। ललियाटांड़ थाना क्षेत्र के बनवारसा गांव में एक व्यक्ति के अपहरण कर हत्या करने का मामला प्रकाश में आया है अज्ञात व्यक्ति बनबर्षा गांव निवासी सचिदानंद यादव उर्फ हेलो यादव है। उनकी पत्नी जालौर देवी ने इस संबंध में लड़ाइयांटाड थाना को आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाई है उन्होंने थाना को दिए आवेदन में बताया कि शुक्रवार को उनके पति महेशपुर गांव निवासी अनित यादव के घर भोज खाने गए थे उसी दिन से लापता थें।

अलीगंज मे पैक्स चुनाव को लेकर नामांकन शुरू कई उम्मीदवारों ने भरा अपना नामांकन पर्चा

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः--अलीगंज प्रखंड में प्राथमिक कृषि साख समिति (पैक्स) के अध्यक्ष एवं प्रबंध समिति के सदस्यों के लिए, प्रथम चरण 26 नवंबर को मतदान किया जाएगा, इसको लेकर सोमवार को अलीगंज प्रखंड कार्यालय परिसर में,कई उमीदवारो ने अपना नामांकम पर्चा भरा,पैक्स चुनाव की प्रशासनिक तैयारियां पूरी कर नामांकन प्रकिर्या शुरू की गई, प्रत्याशियों ने निवार्ची पदाधिकारियों के समक्ष नामांकन पत्र दाखिल किया,नामांकन को लेकर संबंधित प्रखंड मुख्यालय में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई,वहीं प्रखंड निवार्ची पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी अभिषेक भारती ने जानकारी देते हुए बताया की अलीगंज प्रखंड मे कुल 11 पंचायतो मे चुनाव होना है, इसको लेकर नामांकन प्रकिर्या शुरू हो गई,11 पंचायतो के नामांकन हेतु दो अलग अलग जगह,किसान भवन एवं प्रखंड आपूर्ति कार्यालय मे नामांकन कॉन्टेर लगाया गया,जहाँ सहायक निवार्ची पदाधिकारी सन्नी कुमार दिवाकर, संजय कुमार,धर्मेन्द्र कुमार,नामांकन पत्रों की जांच की गई,इसके बाद नाकामांक प्रकिर्या किया गया,वहीं निवार्ची पदाधिकारी ने जानकारी देते हुऐ बताया की नामांकन के पहले दिन कुल 33 प्रत्याशियों का नामांकन किया गया जिसमे, अध्यक्ष पद के पांच उम्मीदवार एवं कार्यकारिणी सदस्य के 28 उम्मीदवारों ने नामांकन पर्चा भरा, नामांकन की प्रक्रिया 11 नवंबर नवंबर से 13 नवंबर तक चलेगी, 14 से 16 नवम्बर तक संवीक्षा की जाएगी, 19 नवंबर तक नाम वापसी एवं चिन्ह आवंटन किया जाएगा, वहीं कैयार पंचायत से अध्यक्ष पद के के लिए सबसे पहले रिंकू देवी पति राजेश सिंह ने अपना नामांक,न पर्चा भरा, समर्थकों ने गाजियाबाद एवं फुल मामला एवं जिंदाबाद के नारों के साथ स्वागत किया, मौके पर कैयार पंचायत के मुखिया ललन सिंह,पूर्व मुखिया मनोज सिंह, सरपंच त्रिपुरारी सिंह,शशि कुमार,सहित सैकड़ो समर्थक मौजूद थे

अपराधियों का शहर बना कासिम बाजार थाना श्रेत्र

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर।अपराधियों का शहर बना कासिम बाजार थाना अंतर्गत फौजदारी बाजार में जमीन विवाद में गोलीबारी की घटना घट हुई। प्रॉपर्टी डीलर बिट्टू तांती एक खरीद की जमीन पर जेसीबी से सफाई करवा रहा था। वहीं मोटरसाइकिल पर सवार तीन चार अपराधियों ने अंधाधुन फायरिंग कर दिया । इस घटना में प्रॉपर्टी डीलर बिट्टू तांती जान बचाकर वहां से भाग निकले अपराधियों ने लगभग 6 से 7 चक्र गोली चलाई जिससे आसपास के लोग भयभीत हो गए हैं। गोलीबारी की घटना देखकर मजदूर और जेसीबी ड्राइवर गाड़ी छोड़कर भाग निकले अपराधियों के निकल जाने के बाद चालक जेसीबी लेकर वहां से निकल गया गोली बारी की सूचना पर मौके पर पहुंची कासिम बाजार थाना की पुलिस घटनास्थल से तीन खोखा और 7.65 एमएम का एक जिंदा कारतूस बरामद किया है ।घटना की पुष्टि कासिम बाजार थाना पुलिस ने की है।

डीएम ने कृषि विभाग के कार्यों की सराहना

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। जिला स्तरीय रबी कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सोमवार को सफियाबाद स्थित कृषि विभाग के संयुक्त कृषि भवन में जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह की अध्यक्षता में हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन जिलाधिकारी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। जिलाधिकारी ने कृषि विभाग के पदाधिकारियों के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि कृषि सबसे महत्वपूर्ण विभाग है तथा यहां कार्यरत सभी पदाधिकारियों द्वारा अपने कार्यों को स-समय निष्पादन करते हुए किसानों एवं अन्य लाभूकओं को कृषि संबंधित सभी योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। उन्होंने कृषि पदाधिकारी एवं कर्मियों को निदेश देते हुए कहा कि सभी किसानों के हित में तन-मन से काम करें एवं किसानों के लिए हमेशा उपलब्ध रह कर सरकार की योजनाओं का लाभ जिले के सूदूर गांव के सभी किसानों तक पहुंचाएं। योजनाओं में बिचैलिए की भूमिका को समाप्त करें तथा लघु एवं सीमांत किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाए। आज भारत में भी कृषि अत्यंत ही आधुनिक हो गयी है तथा किसान भी अत्याधुनिक खेती कर नई नई तरह के फसलों के उत्पादन के साथ ही कई तरह के प्रयोग कर फसलों की भारी मात्रा में पैदावार बढ़ा रहे हैं। मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाने के लिए इको फ्रेंडली खाद का उपयोग कर रहे हैं। साथ ही कई तरह के उपकरणों से भी फसलों के पैदावार में बढ़ोतरी कर रहे हैं। किसानों को समय समय पर यदि कृषि से संबंधित जानकारी उपलब्ध करायी जाए तो बिहार भी कई फसलों के उत्पादन के मामलों में देश में अग्रणी भूमिका निभाएगा। कार्यक्रम में जिला के जिला कृषि पदाधिकारी ब्रज किशोर ने कृषि विभाग के सभी योजनाओं की जानकारी कर्मी एवं पदाधिकारियों को दी। कार्यक्रम में मुख्यालय से आए राज्य नोडल पदाधाकारी डॉ0 प्रमोद कुमार, संयुक्त निदेशक, पौधा संरक्षण, बिहार, पटना के सभी कृषि पदाधिकारी, मत्स्य पदाधिकारी, पशुपालन पदाधिकारी, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं कृषि विभाग के कर्मी को सम्बोधित किए। कृषि से सबंधित सभी अन्य विभाग अपने अपने योजनाओं की जानकारी कार्यक्रम में दिए। कार्यक्रम से प्रशिक्षण लेकर सभी पदाधिकारी एवं कर्मी किसानों के लिए अच्छे से काम करेंगे। कार्यक्रम में जिला के सहायक निदेशक, प्रक्षेत्र सहायक निदेशक रसायन, सहायक निदेशक पौधा संरक्षण, सहायक निदेशक उद्यान, सहायक निदेशक भूमी संरक्षण, उप निदेशक आत्मा, अनुमंडल कृषि पदाधिकारी सदर मुंगेर एवं तारापुर, सभी प्रखंड कृषि पदाधिकारी, कृषि समन्वयक, प्रखंड तकनिकी प्रबंधक, सहायक तकनिकी प्रबंधक, प्रखंड उद्यान पदाधिकारी, कृषि विभाग के सभी कर्मी आदि उपस्थित थे।

अज्ञात वाहन से कुचलकर बाइक सवार युवक की मौत, परिजनों ने किया सदर अस्पताल में जमकर हंगामा

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के लक्खी चौक के पास रविवार की संध्या अज्ञात वाहन से कुचलकर एक बाइक सवार युवक की घटनास्थल पर मौत हो गई। घटना में बाइक भी पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। आस पास के लोगों को सूचना मिलते ही की भीड़ जमा हो गई। अफरा-तफरी का माहौल हो गया। आनन-फानन में स्थानीय लोगों ने उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया। जहां ड्यूटी में डॉ पीडी शर्मा ने प्राथमिक जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। खबर जैसे ही मौत की सूचना आग की तरह फैलने लगी। परिजनों और रिश्तेदारों की भीड़ उसे देखने के लिए सदर अस्पताल परिसर जमा होने लगी। इलाज के अभाव को लेकर अस्पताल परिसर में परिजनों ने आरोप लगाया। जमकर हंगामा करना शुरू कर दिया। इलाज कराने आए अन्य मरीजों को भी हंगामा के कारण कई घंटों तक परेशानियों का सामना पीडीए इस बीच में करना पड़ा। बताया जाता है कि उसकी पहचान मुफस्सिल थाना क्षेत्र के जितवारपुर हकीमाबाद गांव के बबलू कुमार उम्र 26 वर्ष लगभग बताया जाता है। इसी तरह अस्पताल प्रशासन ने किसी तरह समझा बूझकर मामले को शांत कराया। लेकिन, घटना को लेकर परिजनों ने काफी समय तक अस्पताल परिसर में जमकर हंगामा करते रहे। वार्ड में भर्ती मरीजों में अस्पताल परिसर में हंगामा के कारण तनाव का माहौल बना रहा। घटना की सूचना अस्पताल प्रशासन ने पुलिस को दी है। पुलिस ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। लेकिन, कई घंटे बीत जाने के बाद भी पुलिस घटनास्थल पर या अस्पताल परिसर तक नहीं पहुंची है। इस बात को लेकर भी परिजनों में काफी आक्रोश बना हुआ है। मृतक के बारे में परिजन ने बताया कि वह सुबह ही घर से निकला था। अचानक घटना की सूचना मिलते ही सदमे का माहौल बना हुआ है। गांव में मातम का माहौल बना हुआ है। पुलिस ने बताया कि सभी बिंदुओं पर जांच की जा रही है।

पिस्टल के साथ एक गिरफ्तार

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। टेटिया बंबर पुलिस ने कटियारी गांव से रविवार को हथियार लहराते एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है उसके पास से एक देसी पिस्टल एवं तीन जिंदा कारतूस बरामद किया गया है अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी चंदन कुमार ने बताया कि कटियारी गांव में एक युवक द्वारा पिस्टल लहरायें जाने एवं किसी अप्रिय घटना को अंजाम दिए जाने की सूचना मिली थी टेटिया बंबा थाना अध्यक्ष सशस्त्र बल पुलिस कटियारी गांव पहुंचकर एक व्यक्ति को व्यक्ति पिस्टल जिंदा कारतूस के साथ एक मोबाइल गिरफ्तार किया है ।

60 लीटर देसी शराब बरामद तस्कर गिरफ्तार

मुंगेर । जमालपुर पुलिस थाना ने एक शराब तस्कर को 60 लीटर देसी शराब के साथ गिरफ्तार किया है पुलिस ने बताया कि गुप्त सूचना पर जमालपुर के बलीपुर बाजार के भीतर रोड से तस्कर शराब को खेत से लेकर जमालपुर मुंगेर आता है पुलिस ने पहले से ही रोड पर नाकाबंदी की थी गिरफ्तार तस्कर मुंगेर बासुदेवपुर थाना क्षेत्र के तिकड़मपुर निवासी अटल कुमार है।

अधिवक्ताओं ने देश के प्रथम शिक्षामंत्री मोलाना अबूल कलाम आजाद की जयंती मनाई

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। राष्ट्रीय शिक्षा दिवस पर दरभंगा बारएसोसियेशन भवन में अधिवक्ताओं ने प्रखर पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी सह देश के प्रथम शिक्षामंत्री मोलाना अबूल कलाम आजाद की जयंती मनाई।वरीय अधिवक्ता अरुण कुमार सिन्हा अमर की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अधिवक्ता अरुण कुमार चौधरी ने कहा कि अबूल कलाम आजाद का जन्म मक्का में हुई थी।बाल्यकाल में हीं इनका परिवार भारत में बस गया था।देश के स्वाधीनता संग्राम में इन्होंने अमूल्य योगदान दिया।उन्होंने अल हिलाल और अल बलाग नामक समाचार पत्रों का संपादन किया तथा अपनी लेखनी से स्वतंत्रता की अलख जगाई।वे 1947 से लेकर 1958 तक शिक्षामंत्री रहे।इनके कार्यकाल में आई आई टी,आई आई एससी, और यूजीसी जैसी संस्थाओं की स्थापना हुई जो उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आज भी मील का पत्थर माना जाता है।अध्यक्षीय संबोधन में श्री अधिवक्ता अमर ने कहा कि शिक्षा दिवस के मौके हम सभी स्वतंत्रता सेनानी , प्रखर शिक्षाविद और पत्रकार स्वर्गीय आजाद को नमन करते हैं।

शिक्षामंत्री के रुप में अपनी कृति को लेकर वे आज भी हम सबों के बीच अमर हैं।इनके शिक्षा के क्षेत्र किये गये कार्यों को सम्मानित करने के लिए इनके जन्म दिन 11नवंबर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रुप में मनाया जाता है।

मौके पर स्पेशल पीपी संजीव कुमार कुंवर,विरेन्द्र कुमार सिंह, रामवृक्ष सहनी,कुमार उत्तम,मनोज कुमार, रमणजी चौधरी, मायाशंकर चौधरी,अनीता आनंद, बूलन कुमार झा,नितीश कुमार, अनिल कुमार मिश्रा समेत दर्जनों वकीलों ने मौलाना अबुल कलाम आजाद के तैल चित्र पर पुष्पांजलि कर नमन किया।

भारतीय रेलवे: पहले से कहीं ज्यादा सुरक्षित

भारतीय रेलवे में सुरक्षा पहले से कहीं अधिक बेहतर हो गई है, जिसका श्रेय पिछले दशक में की गई योजनाबद्ध पहलों को दिया जा सकता है। भारतीय रेलवे दुनिया का सबसे व्यस्त यात्री परिवहन नेटवर्क है और रेल-यात्री परिवहन में इसका विश्व में पहला स्थान है। रेलवे हर साल 1 लाख करोड़ यात्री किलोमीटर (पीकेएम) से अधिक की दूरी तय करती है और 685 करोड़ से अधिक यात्रियों को सफर कराती है। यह आँकड़ा चीन से भी काफी बड़ा है, जहाँ अपने विशाल नेटवर्क और आबादी के बावजूद लगभग 300 करोड़ यात्री ही रेल का उपयोग करते हैं। सुरक्षा में इस उल्लेखनीय सुधार का प्रमाण दुर्घटनाओं की घटती संख्या से मिलता है। जहाँ 2000-01 में 473 बड़ी रेल दुर्घटनाएँ हुई थीं, वहीं 2023-24 में यह संख्या घटकर केवल 40 रह गई है। यह गिरावट ट्रैक सुधार, मानव रहित लेवल क्रॉसिंग को हटाने, पुलों की स्थिति की नियमित निगरानी और डिजिटल तकनीक के प्रयोग से संभव हुई है। रेलवे के सुरक्षा प्रयासों को यात्री और पटरियों की लंबाई के आधार पर और भी सराहा जा सकता है। प्रतिदिन 2 करोड़ से अधिक लोग 70, 000 किलोमीटर लंबे नेटवर्क पर यात्रा करते हैं। त्यौहारों के समय यह संख्या 3 करोड़ तक पहुँच जाती है। इसका मतलब है कि भारत में प्रतिदिन लगभग 2% लोग सुरक्षित रूप से रेल से सफर करते हैं, जबकि चीन में यह आँकड़ा 0.58% और अमेरिका में मात्र 0.09% है। भारतीय रेलवे के लिए यात्रियों की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह 2023-24 में सुरक्षा से जुड़ी परियोजनाओं में 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश से स्पष्ट होता है, और चालू वित्त वर्ष में इससे भी अधिक खर्च करने की योजना है। इसका उद्देश्य रेलों, पुलों, पटरियों और संकेत प्रणालियों के रखरखाव में सुधार करना है। साथ ही, ओवर-और अंडर-ब्रिज के निर्माण के माध्यम से पटरियों के निकट की सड़क सुरक्षा में भी सुधार किया जाएगा। रेलवे सुरक्षा प्रदर्शन का एक प्रमुख सूचकांक ह्यप्रति दस लाख ट्रेन किलोमीटर पर दुर्घटना की संख्या (एपीएमटीके) है, जो 2000-01 में 0.65 से घटकर 2023-24 में 0.03 पर आ गया है। यह सुधार अत्याधुनिक तरीकों और उन्नत तकनीकों के उपयोग के कारण संभव हुआ है, जैसे कि बेहतर पटरी रखरखाव, पटरी दोषों का पता लगाने में सुधार, रेल वेल्ड विफलताओं को रोकना और मानवीय त्रुटियों को कम करना। पटरी रखरखाव में सुधार के लिए आधुनिक मशीनों की तैनाती में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जहाँ 2013-14 में केवल 700 मशीनें उपयोग में थीं, वहीं अब यह संख्या बढ़कर 1, 667 हो गई है। इसके अतिरिक्त, परिसंपत्ति की विश्वसनीयता को बढ़ाने के लिए पूरे नेटवर्क में रेल ग्राइंडिंग का भी उपयोग किया जा रहा है। जिससे पटरियों की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार आया है। इसके साथ ही, उपद्रवी गतिविधियों, पटरियों से छेड़छाड़ और पटरियों पर अवरोध वस्तुओं के कारण होने वाले जोखिमों से निपटने के लिए नियमित गश्त की जाती है। यात्रियों की सुरक्षा से आगे बढ़कर, रेलवे अब वन्यजीव और पशुधन की सुरक्षा पर भी ध्यान दे रही है। 2024-25 तक 6, 433 किलोमीटर रेलवे ट्रैक के किनारे बाड़ लगाने का लक्ष्य है, जिसमें से अगस्त 2024 तक 1, 396 किलोमीटर पर काम पूरा कर लिया गया है। इससे मवेशियों के साथ टकराव की घटनाओं में कमी आएगी। इन परिणामों को बनाए रखने और सुधार करने के लिए भारतीय रेलवे ने तकनीकी कार्यक्रमों और लक्षित प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अपनाया है।

चीन से जंग में हार का दोषी नेहरू जी को क्यों न माना जाए?

यह बात उन्होंने खासतौर पर तिब्बत, नेपाल और सिक्किम में चीन की भूमिका को लक्ष्य करते हुए कही थी। साल 1950 में तिब्बत पर चीन के हमले की निंदा करने वालों में डॉ 0 लोहिया अग्रणी रहे। इसके बाद से उन्होंने लगातार चीन की सीमा पर नजर जमाये रखी और नेहरू को खबरदार किया कि चीनी निजाम को उसकी कथनी के हिसाब से देखना-समझना या फिर चीन के साथ सीमाओं को लेकर किसी किस्म के लेन-देन की बातचीत में उतरना ठीक नहीं। साल 1962 में भारत को जो सदमा झेलना पड़ा उसके लिए लोहिया ने नेहरू को बड़ी खरी-खरी सुनायी थी। खैर, नेहरू ने संसद में लंबी बहस के बाद अपना वक्तव्य देना शुरू करते हुए कहा- मुझे दुख और हैरानी होती है।

आर.के. सिन्हा

लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद

भारत और चीन के बीच हाल ही में पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर एक महत्वपूर्ण समझौता हुआ है। इससे या आशा की जाती है कि दोनों देशों के बीच सीमा विवाद को हल करने में मदद मिलेगी। दशकों बाद यह एक सकारात्मक पहल हुई है। सबको पता है कि दोनों मुल्कों के सीमा विवाद के कारण ही 1962 में जंग भी हुई थी। उस जंग में भारतीय सेना के वीर जवानों ने चीन के गले में अंगूठा तो डाल दिया था, पर चीन ने हमारे बहुत बड़े हिस्से पर कब्जा भी कर लिया था। चीन के खिलाफ जंग में भारत के उन्नीस रहने के लिए कौन मुख्य रूप से दोषी था? कांग्रेस नेता और देश के पूर्व विदेश मंत्री के. नटवर सिंह कहते थे कि चीन नीति पर पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की दूरदृष्टि की कमी थी। इसी कारण 1962 में भारत की सेना चीन से हारी थी। उस जंग के समय नटवर सिंह भारतीय विदेश सेवा के एक वरिष्ठ ज़िम्मेदार अफसर थे। वे कहते थे, ह्यजवाहरलाल नेहरू का मानना था कि हम चीन के साथ अच्छे संबंध बना सकते हैं। वे समझ ही नहीं सके कि चीन हमारी पीठ पर छुरा घोंप देगा। दुर्भाग्यवश, उनकी चीन नीति बुरी तरह से गलत साबित हुई। यह लिखा है पूर्व विदेश मंत्री नटवर सिंह ने जो कांग्रेस सरकार में ही मंत्री थे। स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री के रूप में जवाहरलाल नेहरू का कार्यकाल चीन के साथ संबंधों में सदैव उतार-चढ़ाव का ही बना रहा। 1949 में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना से लेकर 1964 में मृत्यु तक, नेहरू का दृष्टिकोण चीन के प्रति विश्वास और आकर्षण से शुरू होकर अंततः चरम उदासीनता में बदल गया था। चीन से स्पष्ट नकारात्मक संकेतों के बावजूद, नेहरू ह्य हिंदी - चीनी भाई-भाई ह्य का नारा बुलंद कर न जाने क्यों संबंध के भ्रम को बनाए रखने के लिए ही उत्सुक थे। वे देश को चीन से जुड़े विवाद को लगातार छिपाते रहे और कृष्णमेनन जैसे कम्युनिस्ट की बात मानकर लगातार देश विरोधी गलत निर्णय लेते रहे। दरअसल नेहरू के साथ एक बड़ी दिक्कत यह थी कि उन्हें लगता था कि सारा बुद्धि- विवेक और समझदारी उन्हीं के पास है। चीन से युद्ध के बाद उनके जन्म दिन (14 नवंबर) को संसद में चीन से युद्ध के परिणामों पर हो रही चर्चा पर उन्हें बोलना था। चर्चा 8 नवंबर, 1962 से ही जारी थी। सभी दलों के नेता अपनी बेबाक राय रख रहे थे। संसद के बाहर भी नेहरू को ही घेरा जा रहा था। लोहिया ने 1949 में ही देश को आगाह कर दिया था कि उत्तरवर्ती सीमाओं से देश पर साम्यवाद का खतरा मंडरा रहा है। यह बात उन्होंने खासतौर पर तिब्बत, नेपाल और सिक्किम में चीन की भूमिका को लक्ष्य करते हुए कही थी। साल 1950 में तिब्बत पर चीन के हमले की निंदा करने वालों में डॉ ० लोहिया अग्रणी रहे। इसके बाद से उन्होंने लगातार चीन की सीमा पर नजर जमाये रखी और नेहरू को खबरदार किया कि चीनी निजाम को उसकी कथनी के हिसाब से देखना-समझना या फिर चीन के साथ सीमाओं को लेकर किसी किस्म के लेन-देन की बातचीत में उतरना ठीक नहीं। साल 1962 में भारत को जो सदमा झेलना पड़ा उसके लिए लोहिया ने नेहरू को बड़ी खरी-खरी सुनायी थी। खैर, नेहरू ने संसद में लंबी बहस के बाद अपना वक्तव्य देना शुरू करते हुए कहा- ह्यमुझे दुख और हैरानी होती है कि अपने को विस्तारवादी शक्तियों से लड़ने का दावा करने वाला चीन खुद विस्तारवादी ताकतों के नक्शेकदम पर चलने लगा। उन्हें सारा सदन पूरी गंभीरता से सुन रहा था। नेहरू जी बता रहे थे कि चीन ने किस तरह से भारत की पीठ पर छुरा घोंपा। पर जब उनके भाषण के बीच किसी सदस्य ने हस्तक्षेप किया तो वे बुरी तरह नाराज हो गए। पहली बार करनाल से सांसद स्वामी रामेश्वरानन्द ने व्यंग्य भरे अंदाज में कहा, ह्यचलो अब तो आपको भी चीन का असली चेहरा दिखने लगा। ह्य इस टिप्पणी पर नेहरू नाराज हो गए। कहने लगे, ह्यअगर माननीय सदस्य चाहें तो उन्हें सरहद पर भेजा जा सकता है। सदन को भी नेहरू की यह बात समझ नहीं आई। नेहरू प्रस्ताव पर बोलते ही जा रहे थे। तब एक और सदस्य एच.वी.कामथ ने कहा, ह्यआप बोलते रहिए। हम बीच में व्यवधान नहीं डालेंगे। अब नेहरू विस्तार से बताने लगे कि चीन ने भारत पर हमला करने से पहले कितनी तैयारी की हुई थी। इसी बीच, स्वामी रामेश्वरानंद ने फिर तेज आवाज में कहा, ह्यमैं तो यह जानने में उत्सुक हूं कि जब चीन तैयारी कर रहा था, तब आप क्या कर रहे थे?ह्य अब नेहरू अपना आपा खो बैठे और कहने लगे, ह्यमुझे लगता है कि स्वामी जी को कुछ समझ नहीं आ रहा। मुझे अफसोस है कि सदन में इतने सारे सदस्यों को रक्षा मामलों की पर्याप्त समझ नहीं है। वे सदन में अंग्रेजी में अपनी बात रख रहे थे। निश्चित रूप से चीन से जंग के कारण वे हताश थे। उन्हें उस जंग की परिणाम ने गहरी चोट पहुंचाई थी। इसलिए वे सदस्यों पर बरसने लगते थे। बहरहाल, चीन के खिलाफ जंग के 62 साल गुजरने के बाद भी देश उस युद्ध में जो कुछ हुआ, उसे भुला नहीं पाया है। हालांकि तब से की कई पीढ़ियां पैदा हुईं और जवान हो गईं। राजधानी दिल्ली में अनेक सड़कों के नाम जंग में देश के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीरों के नामों पर हैं। पर साउथ दिल्ली की ब्रिगेडियर होशियार सिंह मार्ग पहली सड़क थी जो किसी रणभूमि के योद्धा के नाम पर रखी गई थी। यह बात 1963 की है। चीन के साथ हुई जंग के बाद पहले जिस सड़क को लक्ष्मी बाई नगर मार्ग कहा जाता था, वो हो गई ब्रिगेडियर होशियार सिंह मार्ग। ब्रिगेडियर होशियार सिंह ने चीन के खिलाफ 1962 में हुई भीषण जंग में अपने प्राणों का बलिदान दिया था। वे भारतीय सेना की टुकड़ी की अगुवाई कर रहे थे। कड़ाके की ठंड में गर्म कपड़े न होने और युद्ध के लिए आवश्यक शस्त्रों के अभाव को उन्होंने आड़े आने नहीं दिया था। उस समय रणभूमि में ब्रिगेडियर होशियार सिंह की शौर्य गाथासुनकर सारे देश में देशभक्ति की भावना पैदा हो गई थी। इसलिए उस युद्ध की समाप्ति के तुरंत बाद राजधानी की एक खास सड़क का नाम उस महान वीर के नाम पर रख दिया गया। होशियार सिंह मार्ग का नामकरण करने के लिए देश के तत्कालीन रक्षा मंत्री यशवंत राव चव्हाण खुद आए थे। यानी देश ने अपने उस महान शूरवीर की याद में एक कृतज्ञता का भाव प्रकट किया था। अब भी ब्रिगेडियर होशियार सिंह मार्ग से गुजरते हुए उस महान शूरवीर और 1962 की जंग के यादें ताजा होने लगती हैं।

नारे के आगे दो नारे, नारे के पीछे दो नारे

एक जमाने में फिल्म मेरा नाम जोकर के लिए हसरत जयपुरी ने एक पहेलीनुमा गीत लिखा था तीतर के आगे दो तीतर, तीतर के पीछे दो तीतर, बोलो कितने तीतर? आशा भोंसले ने इस गीत को गया था और शंकर जयकिशन ने इसे संगीतबद्ध किया था। ये बात १९७० की है। आज हम २०२४ के आखरी सिरे पर आ गए हैं लेकिन भारतीय राजनीति में जोकरों के लिए तीतर के बजाय नारे पहेलियाँ बन गए है। ये समझना मुश्किल है की आखिर नारों के आगे, नारों के पीछे कितने नारे हैं और कितने जोकर है। मेरा नाम जोकर यदि आज बनाई जाती तो तय है की हसरत जयपुरी साहब को तीतर के आगे दो तीतर गीत के बोल बदलना पड़ते। वे लिखते- नारे के आगे दो नारे, नारे के पीछे दो नारे, आगे नारे, पीछे नारे, बोलो कितने नारे?निश्चित रूप से ये गीत भी लोकप्रिय होता, क्योंकि आज की राजनीति में नेताओं और मुद्दों से जयदा नारे लोकप्रिय हो रहे हैं, समूची राजनीति इन्हीं नारों पर टिकी है। जिस दल के पास नारे नहीं, उसके वारे-न्यारे नहीं। नारे बिना रिजिनिति आभूषणों बिना नारी जैसी है। साल के जाते-जाते भारतीय राजनीति को जो सबसे ज्यादा चर्चित और हिंसक नारा मिला, वो है - बंटोगे तो कटोगे। इस नारे के जनक हैं उत्तरप्रदेश के उत्तरदायी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। उनका ये नारा बड़ा ही कटखना है। ये नारा सबसे ज्यादा पसंद आया राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को। संघ ने इस नारे को अपनी दैनिक प्रार्थना- नमस्ते सदा वतस्ले की तरह अंगीकार कर लिया। सबसे पहले संघ के दो नंबरी नेता दत्तात्रय होंसबोले ने इस नारे के आगे समर्पण किया। उन्हें शायद आत्मग्लानि हुयी की इतना मारक नारा उनकी नागपुर की फैक्ट्री में क्यों नहीं गढ़ा गया? कहते हैं कि योगी के नारे कि गूँज कनाडा में सुनाई दे रही है। उनका नारा बंटोगे तो कटोगे अब वैवाहिक निमंत्रण पत्रों पर भी लिखवाया जा ने लगा है। योगी जी के इस इस नारे की नाव पर सवार होकर भाजपा हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के विधानसभा चुनावों में उतरी। हरियाणा में तो इस नारे से भाजपा की नाव चुनावी वैतरणी पर कर गयी लेकिन जम्मो-कश्मीर में डूब गयी। जम्मू-कश्मीर में कुछ और चला। इस खंडित सूबे में न कोई कटा और न कोई बटा, लिहाजा भाजपा के हाथ सत्ता नहीं लगी। लेकिन न भाजपा निराश हुयी और न माननीय योगी जी। भाजपा, संघ और योगी जी इसी नारे को लेकर महाराष्ट्र और झारखड विधानसभा के चुनाव में जा कूदे। लेकिन यहां योगी की के इस नारे को अंगीकार नहीं किया गया। भाजपा के सहयोगी एनसीपी के अजित पंवार ने ही इस नारे का विरोध कर दिया। उद्धव ठाकरे की शिव सेना भी इस नारे के खिलाफ मुखर हुई तो ध्यानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी को दखल करना पड़ा। माननीय मोदी जी तो राजनीती में नए नारों के जनक हैं, हालाँकि उनसे पहले श्रीमती इंदिरा गाँधी गरीबी हटाओ जैसे अति लोकप्रिय नारे लगा चुकी थी और जनता से लगवा चुकी थीं, लेकिन न गरीब हटे और न गरीबी। उलटे आज देश में 85 करोड़ गरीब मोदी सरकार के हिस्से में है। सबको पांच किलो अन्न मुफ्त में देना पड़ रहा है। मोदी जी भी इंदिरा जी के बताये रस्ते पर चलकर न गरीबी का उन्मूलन कर रहे हैं और न गरीबों का। हालांकि उनका दावा रहता है की उनकी सरकार ने 10 साल में 25 करोड़ गरीबों को गरीबी की रेखा से बाहर निकाला है। बहरहाल बात नारों की चल रही थ। योगी जी के नारे को महाराष्ट्र में लड़खड़ाता देख मोदी जी इसी नारे को नए पैकिंग में लेकर नमूदार हुए। उनका नारा है - एक रहोगे तो सेफ रहोगे। मोदी जी का नारा गांधीवादी नारा है या गोलवलकरवादी नारा अभी तक कम से कम मै तो तय नहीं कर पाया हूँ। महाराष्ट्र की जनता इस नारे से कितनी प्रभावित हुयी है ये भी कहना कठिन है। मोदी जी के इस नारे के जबाब में उद्धव ठाकरे की शिव सेना ने कहा कि महाराष्ट्र तभी तक सेफ है जब तक की यहां भाजपा सत्ता से बाहर रहेगी। झारखण्ड में भी कमोवेश मोदी जी और योगी जी का नारा कारगार होता नहीं दिखाई दे रहा। भविष्य में हो जाये तो मै इसकी गारंटी नहीं दे सकता या ले सकता। योगी जी के नारे के जबाब में उत्तरप्रदेश के उत्तरदायी समाजवादियों ने एक नया नारा गढ़ा है। हर नारे का अपना व्याकरण है। अपनी धार है। अपना असर है। आज की सियासत में मुद्दे नहीं बल्कि नारे प्रधान होते हैं। बिना नारों के सियासत एक कदम आगे नहीं बढ़ सकती। जो राजनीतिक दल नया नारा नहीं गढ़ सकता उसे सत्ता भी आसानी से हासिल नहीं हो सकत।

सार्क की चुनौतियों का समाधान कैसे कर सकता है भारत?

भारत अलग-अलग सार्क सदस्यों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने, विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है जिससे अधिक बहुपक्षीय सफलता मिल सकती है। कनेक्टिविटी और व्यापार पर बांग्लादेश के साथ भारत के हालिया प्रयासों ने सार्क की सीमित प्रगति के बावजूद द्विपक्षीय सहयोग में सुधार किया है। भारत सार्क की निर्णय लेने की प्रक्रिया में सुधार के प्रयासों का नेतृत्व कर सकता है, आम सहमति के बजाय बहुमत आधारित निर्णयों की वकालत कर सकता है, जो अक्सर प्रगति को रोकता है। भारत बिम्सटेक तंत्र के समान सुधारों का प्रस्ताव कर सकता है, जिसने क्षेत्रीय समझौतों में अधिक लचीलापन दिया है।

डॉ. सत्यवान सौरभ

लेखक

सार्क के संस्थापक सदस्य के रूप में भारत ने क्षेत्रीय सहयोग के लिए लगातार पहल की है। हालांकि, भारत के प्रयासों के बावजूद, संगठन अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप पिछले कुछ वर्षों में इसकी प्रभावशीलता सीमित रही है। भारत सार्क के भीतर आर्थिक सहयोग, संपर्क और क्षेत्रीय विकास को आगे बढ़ाने में केंद्रीय भूमिका निभाता रहा है। भारत दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र समझौते में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है, जिसका उद्देश्य अंतर-क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देना था। भारत ने आतंकवाद और सीमा पार खतरों से निपटने के लिए सार्क के प्रयासों का नेतृत्व किया है, जिसमें कई सुरक्षा सहयोग पहलों का प्रस्ताव दिया गया है। भारत ने 1987 में आतंकवाद के दमन पर सार्क क्षेत्रीय सम्मेलन के निर्माण का नेतृत्व किया। हालांकि, इन प्रयासों के बावजूद, कई चुनौतियों के कारण सार्क की प्रभावशीलता सीमित बनी हुई है। साफ्टा के बावजूद, अंतर-सार्क व्यापार 5% से कम बना हुआ है, जो खराब आर्थिक एकीकरण और सार्क की आर्थिक क्षमता को साकार करने में सीमित सफलता को दशार्ता है। आसियान के साथ भारत का व्यापार सार्क देशों के साथ उसके व्यापार से अधिक है, जो महत्वपूर्ण आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने में सार्क की विफलता को रेखांकित करता है। प्रमुख राजनीतिक मतभेदों, विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान के बीच, ने शिखर-स्तरीय सहभागिताओं को बाधित किया है, जिससे निर्णय लेने की प्रक्रिया रुक गई है। भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के कारण 2016 का सार्क शिखर सम्मेलन अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था, जो राजनीतिक सामंजस्य के टूटने का संकेत था। सार्क की निर्णय लेने की प्रक्रिया में आम सहमति की आवश्यकता होती है, जिससे पहल धीमी हो गई है, क्योंकि सदस्य देशों के बीच असहमति अक्सर प्रगति को रोक देती है। पाकिस्तान की आपत्तियों के कारण सार्क मोटर वाहन समझौता लागू नहीं हो पाया है, जिससे क्षेत्रीय संपर्क प्रयास रुक गए हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहे भू-राजनीतिक तनाव ने अक्सर सार्क की पहल को पटरी से उतार दिया है और इसकी समग्र प्रभावशीलता को सीमित कर दिया है। 2016 में उरी हमले के कारण भारत ने सार्क शिखर सम्मेलन का बहिष्कार किया, जिससे क्षेत्रीय सहयोग को और झटका लगा। सार्क सदस्यों, विशेष रूप से भारत और छोटी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापक आर्थिक मतभेदों ने समान आर्थिक सहयोग हासिल करना चुनौतीपूर्ण बना दिया है। भारत का सकल घरेलू उत्पाद पाकिस्तान के सकल घरेलू उत्पाद से आठ गुना अधिक है, जिससे व्यापार वार्ता और अपेक्षाओं में असंतुलन पैदा होता है। राजनीतिक इच्छाशक्ति और क्षमता की कमी के कारण सार्क समझौतों को अक्सर कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण देरी का सामना करना पड़ता है। खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए सार्क खाद्य बैंक का कम उपयोग होने के कारण व्यावहारिक प्रभाव बहुत कम रहा है। कई सार्क देश आर्थिक और रणनीतिक सहायता के लिए चीन जैसी बाहरी शक्तियों पर निर्भर हैं, जिससे सार्क का आंतरिक सहयोग कमजोर हुआ है। नेपाल और श्रीलंका की चीनी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर बढ़ती निर्भरता ने सार्क की क्षेत्रीय एकता को कमजोर किया है। सार्क के पास निर्णयों को लागू करने या अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत सुपरनैशनल निकाय का अभाव है, जिससे यह क्षेत्रीय नीतियों को लागू करने में अप्रभावी हो गया है। यूरोपीय संघ के विपरीत, सार्क के पास निर्णयों को लागू करने या विवादों को हल करने के लिए अधिकार रखने वाले संस्थान नहीं हैं। भारत अलग-अलग सार्क सदस्यों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने, विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है जिससे अधिक बहुपक्षीय सफलता मिल सकती है। कनेक्टिविटी और व्यापार पर बांग्लादेश के साथ भारत के हालिया प्रयासों ने सार्क की सीमित प्रगति के बावजूद द्विपक्षीय सहयोग में सुधार किया है। भारत सार्क की निर्णय लेने की प्रक्रिया में सुधार के प्रयासों का नेतृत्व कर सकता है, आम सहमति के बजाय बहुमत आधारित निर्णयों की वकालत कर सकता है, जो अक्सर प्रगति को रोकता है। भारत बिम्सटेक तंत्र के समान सुधारों का प्रस्ताव कर सकता है, जिसने क्षेत्रीय समझौतों में अधिक लचीलापन दिया है। भारत सार्क ढांचे के भीतर व्यापार सुविधा, संपर्क परियोजनाओं और निवेश को बढ़ाकर गहन आर्थिक एकीकरण के लिए प्रयास कर सकता है। बांग्लादेश, भूटान और नेपाल के साथ परिवहन संपर्क पर भारत की बीबीआईएन पहल पाकिस्तान की अनिच्छा को दरकिनार करती है और उप-क्षेत्रीय सहयोग की क्षमता को प्रदर्शित करती है। भारत सार्क देशों के बीच सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए सांस्कृतिक कूटनीति, शैक्षिक आदान-प्रदान और पर्यटन का लाभ उठा सकता है। सदस्य देशों के छात्रों के लिए भारत की सार्क छात्रवृत्ति ने शैक्षणिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है। भारत को बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में निवेश जारी रखना चाहिए जो पूरे क्षेत्र में संपर्क को बढ़ाते हैं, व्यापार और लोगों से लोगों के बीच संपर्क को सुविधाजनक बनाते हैं। भारत-नेपाल रेल लिंक परियोजना क्षेत्रीय संपर्क को बेहतर बनाने के लिए भारत की प्रतिबद्धता का उदाहरण है, भले ही सार्क-स्तरीय पहल ठप हो गई हो। संगठन की चुनौतियों के बावजूद सार्क में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका सुधार के अवसर प्रस्तुत करती है।

महिलाओं की सुरक्षा और गरिमा के लिए खतरा बनी साइबर की दुनिया

प्रियंका सौरभ

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से उत्पन्न सामग्री के उदय ने डिजिटल स्पेस में महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को और बढ़ा दिया है, जिससे ऑनलाइन उत्पीड़न और गोपनीयता उल्लंघन के नए रूप सामने आए हैं। इसने टेक कंपनियों और सरकारों दोनों को तत्काल कार्यवाही करने की आवश्यकता बताई है। आज जब साइबर क्षेत्र में महिलाओं के लिए खतरे कई गुना बढ़ गए हैं, तो ऐसा कोई सुरक्षित ठिकाना नहीं बचा है, जहाँ वह छुप सकें और न ही कोई कड़ी सुरक्षा वाला इलाका है, जहाँ बैठकर वह अपने सम्मान पर डाका डालने वाले साइबर खतरों के खत्म होने का इंतजार कर सकें। एक वैश्विक सर्वे में पता चला है कि 60 प्रतिशत लड़कियों और महिलाओं ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उत्पीड़न का सामना किया है और इनमें से लगभग 20 प्रतिशत ने इसके चलते या तो सोशल मीडिया को अलविदा कह दिया या फिर उसका इस्तेमाल कम कर दिया। इसी तरह यूएन विमेन ने पाया है कि दुनिया भर में 58 प्रतिशत महिलाएँ और लड़कियों को किसी न किसी तरह के ऑनलाइन शोषण का शिकार होना पड़ा है। इनमें ट्रोलिंग, पीछा करने, डॉक्सिंग और लैंगिकता पर आधारित दूसरे तरह के ऑनलाइन हिंसक बर्ताव हैं, जो डिजिटिल युग के नए खतरों के तौर पर उभर रहे हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग डीपफेक वीडियो और चित्र बनाने के लिए किया जा रहा है, जो महिलाओं को मनगढ़ंत सामग्री के साथ लक्षित करते हैं जो अक्सर प्रकृति में यौन या मानहानिकारक होती है। यू। एस। की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस को 2024 के राष्ट्रपति पद के लिए अपने अभियान के दौरान झूठे और हानिकारक संदर्भों में उन्हें चित्रित करने वाले डीपफेक का सामना करना पड़ा। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल महिलाओं के चरित्र और विश्वसनीयता को कम करने के लिए डिजाइन की गई झूठी कथाएँ या स्त्री-द्वेषी सामग्री फैलाते हैं, विशेष रूप से नेतृत्व की भूमिकाओं में महिलाओं को लक्षित करते हैं। रिपब्लिकन प्राइमरी के दौरान निक्की हेली हेरफेर की गई छवियों और फजी खबरों का शिकार हुईं। महिलाओं को ऑनलाइन वस्तुकरण और यौन रूप से स्पष्ट सामग्री का असंगत स्तर का सामना करना पड़ता है, जो वास्तविक नकली सामग्री बनाने की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्षमता द्वारा बढ़ाया जाता है। इतालवी प्रधान मंत्री जियोर्जिया मेलोनी की आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा बनाई गई स्पष्ट तस्वीरें सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से प्रसारित हुईं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा बनाई गई डीपफेक और बदली हुई तस्वीरें महिलाओं की निजता का उल्लंघन करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर प्रतिष्ठा को काफी नुकसान होता है और मानसिक परेशानी होती है। बांग्लादेशी राजनेता रूमिन फरहाना को चुनावों से पहले डीपफेक सामग्री के साथ निशाना बनाया गया था। तकनीकी कंपनियों और सरकारों द्वारा समस्या को कम करने के लिए कदम। कंपनियों को त्रुटियों को रोकने के लिए मानवीय निगरानी के साथ, हानिकारक सामग्री को व्यापक रूप से प्रसारित होने से पहले सक्रिय रूप से चिह्नित करने और हटाने के लिए उन्नत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डिटेक्शन सिस्टम में निवेश करना चाहिए। मेटा (फेसबुक) ने हाल ही में डीपफेक से निपटने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल की घोषणा की, लेकिन उनका कार्यान्वयन असंगत बना हुआ है। प्लेटफॉर्म को स्पष्ट जवाबदेही उपाय प्रदान करने चाहिए और रिपोर्ट करनी चाहिए कि वे अपनी मॉडरेशन नीतियों के पारदर्शी ऑडिट के साथ फ़्लैग की गई सामग्री को कैसे संभालते हैं। यूरोपीय संघ के डिजिटल सेवा अधिनियम (2022) में डिजिटल प्लेटफॉर्म को सामग्री मॉडरेशन क्रियाओं की रिपोर्ट करना अनिवार्य किया गया है। तकनीकी कंपनियों को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि एल्गोरिदम को इस तरह से डिजाइन किया जाए कि लिंग पूर्वाग्रह कम हो और हानिकारक उद्देश्यों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल का दुरुपयोग रोका जा सके। गूगल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सिद्धांत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के ज़िम्मेदार उपयोग पर प्रकाश डालते हैं, लेकिन अधिक कार्यान्वयन की आवश्यकता है।

संक्षिप्त खबरें

शराब के नशे में पिता ने पुत्र को चाकू मारा, मौत

बिजनौर । शहर की कांशीराम कालोनी में शराब के नशे में झगडे के दौरान पिता ने पुत्र को चाकू मार दिया जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस क्षेत्राधिकारी संग्राम सिंह ने बताया कि रविवार रात यहां कांशीराम कालोनी में घर में शराब पीकर झगड़ा करने के दौरान चतर सिंह ने नशे में अपने 20 वर्षीय पुत्र अक्षय को चाकू मार दिया। उन्होंने कहा कि अस्पताल ले जाने पर अक्षय को मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने बताया कि अक्षय की पत्नी चंद्रा देवी की तहरीर पर मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। बताया जाता है कि अक्षय की सात महीने पहले ही शादी हुई थी।

यौन शोषण मामले में आरोपी को बीस साल की कैद

फरीदाबाद, । नाबालिक लड़की के साथ यौन शोषण मामले में दोषी को अदालत ने सोमवार को 20 साल की कैद व 60 हजार रुपए जुमार्ना की सजा सुनाई है। पुलिस प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्ष 2022 में आकाश निवासी गांव पहलादपुर बडोली फरीदाबाद के खिलाफ सहाबुदीन ने अपनी पुत्री के साथ यौन शोषण की शिकायत दी गई थी, जिस पर महिला थाना सेन्ट्रल में मामला दर्ज किया और 30 सितम्बर को आरोपी आकाश को गिरफ्तार किया गया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए अभियोग को चिंहित अपराध की श्रेणी में रखा गया था। अभियोग की सुनवाई के दौरान फरीदाबाद पुलिस द्वारा तथ्यों व साक्ष्यों आधार पर पैरवी की गई, जिस पर माननीय अदालत श्री हेम राज मित्तल, एएसजे फरीदाबाद ने 11 नवम्बर को आरोपी आकाश को 20 साल की कैद व 60 हजार रुपए के जुमार्ने की सजा सुनाई है। बता दें कि हरियाणा सरकार के गृह विभाग के आदेश पर चिंहित अपराधों में तीव्रता से कार्रवाई के लिए कमेटी बनाई गई है। जिला फरीदाबाद की कमेटी में उपायुक्त फरीदाबाद, पुलिस उपायुक्त मुख्यालय, फरीदाबाद, जेल अधीक्षक व जिला न्यायवादी को नियुक्त किया गया है।

फरीदाबाद में हवा अभी पूरी तरह स्वच्छ नहीं

फरीदाबाद, । फरीदाबाद में वायु की गुणवत्ता में पूरी तरह से सुधार नहीं हो पाया है। जिले में कई दिनों बाद एयर क्वालिटी इंडेक्स (एक्यूआई) का स्तर 200 से नीचे आया है। प्रदूषण यहां मध्यम श्रेणी में दर्ज किया गया है। आज एक्यूआई 140 के आस पास रहा। रविवार की तुलना में ये लगभग 60 अंक कम रहा है। फरीदाबाद में पिछले सप्ताह की शुरूआत से ही फरीदाबाद में हवा की गति कम बनी हुई थी। हवा रुकने से प्रदूषण के कण एक जगह इकट्ठा होने लगे थे और प्रदूषण के स्तर में लगातार वृद्धि हो रही थी। शनिवार तक फरीदाबाद में एक्यूआई 200 से ऊपर बना हुआ था, जो खराब श्रेणी में आता है। रविवार से प्रदूषण स्तर में थोड़ी गिरावट देखने को मिली है। थोड़ी हवा चलने के कारण प्रदूषण कणों में मूवमेंट हुई है और प्रदूषण कम हुआ है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार रविवार को फरीदाबाद में प्रदूषण का स्टार 122 दर्ज किया गया और प्रदूषण की मध्य श्रेणी में आया। पिछले दिनों की तुलना में यह काफी कम रहा अगर आज सोमवार की एयर क्वालिटी की बात करें तो 140 और 190 के बीच की श्रेणी में रहा।

समाधान शिविर में प्रॉपर्टी आईडी, स्ट्रीट लाइट आदि शिकायतों का हुआ मौके पर ही समाधान : डीसी

फरीदाबाद, । नागरिकों की समस्याओं के समाधान के लिए आयोजित किए जा रहे समाधान शिविर समस्याओं के समाधान में कारगर सिद्ध हो रहे हैं। डीसी विक्रम सिंह ने अधिकारियों को नागरिकों की समस्याओं पर सुनवाई करते हुए त्वरित समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। आज सोमवार को नगर निगम के तीनों जोन के कार्यालयों तथा ग्रामीण क्षेत्र के तीनों ब्लॉक के बीडीपीओ कार्यालयों में कुल 22 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से ज्यादातर शिकायतों का मौके पर समाधान करवाया गया। अधिकारियों ने कहा कि शेष आवेदनों पर कुछ औपचारिकताएं पूरी होते ही समाधान हो जाएगा। शिविर के दौरान अतिक्रमण, प्रॉपर्टी आईडी, स्ट्रीट लाइट, बिल्डिंग प्लान आदि से संबंधित समस्याओं का समाधान मौके पर ही करते हुए नागरिकों को राहत दी गई। डीसी ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए समाधान शिविर से नागरिकों का शासन-प्रशासन के प्रति विश्वास बढ़ रहा है। समाधान शिविर में विभिन्न विभागीय सेवाओं से जुड़ी शिकायतों का एक ओर जहां मौके पर ही निवारण किया जा रहा है। वहीं प्रॉपर्टी आईडी आदि से जुड़ी त्रुटियों को यथाशीघ्र दुरुस्त कर आमजन को राहत प्रदान की जा रही है। उन्होंने बताया कि अभी तक समाधान शिविर में पहुंची शिकायतों में से अधिकतर का समाधान किया जा चुका है।

बिना चिंता कराइए उपचार, अस्पताल का पैसा देगी सरकार : आदित्यनाथ

प्रात : किरण, संवाददाता

गोरखपुर, । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए आर्थिक सहायता की मांग करने पहुंचे लोगों को भरोसा दिया कि वे चिंता किये बिना अच्छे से अच्छे अस्पताल में इलाज कराएं तथा उपचार में जो भी खर्च आएगा, उसकी व्यवस्था सरकार करेगी। उन्होंने इस दौरान अधिकारियों को निर्देश दिया कि जिन लोगों के पास आयुष्मान कार्ड नहीं है और उन्हें उपचार में आर्थिक सहायता की आवश्यकता है, उनके इलाज के खर्च के पर्चे बनवाने की प्रक्रिया जल्द पूरा कराकर शासन को उपलब्ध कराया जाए। उनका कहना था कि हर जरूरतमंद को मुख्यमंत्री विवेकाधीन कोष से पर्याप्त सहायता उपलब्ध करायी जायेगी। मुख्यमंत्री रविवार शाम विधानसभा उपचुनाव प्रचार करने के बाद गोरखपुर पहुंचे थे। गोरखनाथ मंदिर में रात्रि प्रवास के बाद सोमवार पूर्वाह्न झारखंड विधानसभा चुनाव के प्रचार के लिए रवाना होने से पहले उन्होंने सोमवार प्रातःकाल गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन में करीब 150 लोगों से मुलाकात की। योगी आदित्यनाथ ने मंदिर परिसर के महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन में लोगों से एक-एक करके समस्याएं सुनीं और निस्तारण के लिए आश्वस्त करते हुए उनके प्रार्थना पत्र संबंधित अधिकारियों को दिये। उन्होंने सभी लोगों को आश्वस्त किया कि किसी को भी परेशान होने या घबराने होने की आवश्यकता नहीं है, हर समस्या का समाधान कराया जाएगा। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे जनता की समस्याओं का पूरी गंभीरता और संवेदनशीलता से संतुष्टिपरक निस्तारण कराएं तथा किसी भी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि यदि कहीं कोई जमीन कब्जा या दबंगई कर रहा हो तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाए। उनका कहना था कि पारिवारिक मामलों के निस्तारण में दोनों पक्षों को साथ बैठाकर संवाद करने को प्राथमिकता दी जाए। जनता दर्शन में हर बार की तरह इस बार भी कई लोग गंभीर बीमारियों में इलाज के लिए आर्थिक मदद की गुहार लेकर पहुंचे थे। योगी ने सभी को भरोसा दिया कि उनकी सरकार किसी भी जरूरतमंद के इलाज में धन की कमी को बाधक नहीं बनने देगी एवं विवेकाधीन कोष से मदद की जाएगी। मुख्यमंत्री ने सभी से आयुष्मान कार्ड के बारे में पूछा और अधिकारियों को निर्देश दिया कि हर पात्र व्यक्ति का आयुष्मान कार्ड बनाया जाना सुनिश्चित किया जाए।

खरगे के मुख्यमंत्री योगी पर दिए बयान का मंत्रियों ने दिया करारा जवाब

प्रात : किरण, संवाददाता

लखनऊ, । कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के वस्त्रों पर दिये गये बयान पर उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्रियों ने करारा जवाब दिया है। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि कांग्रेस के अध्यक्ष के नाते मल्लिकार्जुन खरगे पूरी पार्टी का नेतृत्व करते है। उनका बयान पूरी पार्टी का बयान है, वह अपने बयान के लिए माफी मांगे। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश ने कहा कि कांग्रेस ने सनातन पर हमला किया है। जब-जब सनातन संस्कृति पर हमला हुआ है, तब -तब कांग्रेस उसके समर्थन में खड़ी रही है। कांग्रेस का लक्ष्य देश में तुष्टीकरण की राजनीति करना है। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस डी-रेल हो चुकी है। कांग्रेस के लोगों के पास अब कोई मुद्दा नहीं है। वे एसी कमरे से राजनीति करते है। यही कारण है कि साधु-संतों के वस्त्रों पर टिप्पणी करने लगे है। राज्य के कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर इशारा करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष का बयान बेहद निंदनीय है। कांग्रेस का तो इतिहास रहा है, जिसमें बार-बार झूठ बोलना एवं सनातन संस्कृति का अपमान करना रहा है। कांग्रेस ने लोगों को बांटकर सत्ता हासिल की है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने पूरे प्रदेश के भीतर सत्तर वर्ष में पिछड़ों, दलितों और मुस्लिमों को धोखा दिया है। उत्तर प्रदेश में हासिये पर कांग्रेस के लोग है। साधु-संतों पर टिप्पणी कर के मीडिया पर बने रहना चाहते है। गेरुआ वस्त्र त्याग और बलिदान का प्रतीक है। उसका सभी सम्मान करते हैं। कैबिनेट मंत्री जयवीर सिंह ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष अपने बयानों से सुर्खियां बंटोरने के लिए जाने जाते हैं। उन्हें बयानवीर कहना गलत नहीं होगा। वर्तमान समय में उपचुनाव को ध्यान में रखकर कांग्रेस अध्यक्ष ने बिना नाम लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के वस्त्रों पर जो टिप्पणी की है, वो बेहद शर्मनाक है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को अपने बयान के लिए माफी मांगनी चाहिए। पूर्व उपमुख्यमंत्री डॉ.दिनेश शर्मा ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन का बयान बेहद शर्मनाक है। किसी संत के विरुद्ध बोलने से पहले सोचना चाहिए। साधु-संतों के निर्देश पर यह देश चलता है। सनातन संस्कृति से ही हमारे देश की पहचान है। कांग्रेस अध्यक्ष को अपने बयान पर माफी मांगनी चाहिए।

मेरठ में 14 वर्षीय किशोरी के यौन शोषण के आरोप में मदरसा मैनेजर और शिक्षक गिरफ्तार

प्रात : किरण, संवाददाता

मेरठ, । उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के थाना जानी पुलिस ने 14 वर्षीय किशोरी के यौन शोषण के आरोप में मदरसे के प्रबंधक एवं शिक्षक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। थाना प्रभारी पंकज कुमार सिंह ने बताय कि पकड़े गये आरोपियों की पहचान आदिल (42) और मकसूद (47) हैं। उन्होंने बताया कि आदिल शिक्षक है जबकि मकसूद मदरसे का प्रबंधक है। आरोप है कि इन दोनों ने मिलकर नाबालिग किशोरी का यौन शोषण किया और पीड़ित छात्रा के परिजनों की तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया। थाना प्रभारी के अनुसार आरोपियों की गिरफ्तारी रविवार को जानी कला कट से की गई। पीड़िता के पिता ने पुलिस को बताया कि उसकी 14 साल की बेटी गांव के ही मदरसे में आठवीं कक्षा में पढ़ती है। आरोप है कि मदरसा शिक्षक ने 29 अक्टूबर को छात्रा को कमरे में ले जाकर उसके साथ अश्लील हरकत की। इस पर छात्रा रोने लगी तो आरोपी ने जान से मारने की धमकी दी, इसके बाद छात्रा इतना डर गई कि उसने मदरसे में जाना छोड़ दिया। बाद में पता चलने पर परिजनों ने शनिवार को मामले में पुलिस को तहरीर दी।

पूर्व सांसद सहित 25 लोगों पर आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का मामला दर्ज

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरनगर । मुजफ्फरनगर जिले के रामराज थाने के अंतर्गत लालपुर गांव में मीरापुर विधानसभा क्षेत्र में रविवार को चुनावी सभा के लिए कथित तौर पर सरकारी भवन का इस्तेमाल करने पर पूर्व सांसद कादिर राणा समेत 25 लोगों के खिलाफ आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन का मामला दर्ज किया गया है। एक पुलिस अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। पुलिस क्षेत्राधिकारी (जानसठ) यतेंद्र सिंह नागर ने सोमवार को संवाददाताओं को बताया कि पुलिस ने 10 नामजद समेत 25 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। इन नामजद 10 लोगों में कादिर राणा भी शामिल हैं। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन ने प्रत्याशियों को घर-घर जाकर प्रचार करने की अनुमति दी है, लेकिन पूर्व सांसद कादिर राणा और अन्य ने पंचायत घर में बैठक की और सरकारी भवन का इस्तेमाल किया। मुजफ्फरनगर से 2009 से 2014 तक बसपा के सांसद रहे कादिर राणा अपनी पुत्रवधू और समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी सुम्बुल राणा के लिए चुनावी सभा कर रहे थे। मीरापुर विधानसभा क्षेत्र में आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के लिए कादिर राणा और अन्य पर यह दूसरा मामला दर्ज किया गया है। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि इससे पहले राणा सहित 30 से अधिक लोगों पर मीरापुर विधानसभा उपचुनाव के लिए लागू आदर्श आचार संहिता का कथित उल्लंघन कर मुजफ्फरनगर के चूहापुर गांव में (4 नवंबर को) चुनावी सभा करने को लेकर मामला दर्ज किया गया था। मीरापुर से 11 उम्मीदवार चुनाव मैदान में हैं और यहां पर 20 नवंबर को मतदान होगा। मीरापुर में उपचुनाव की जरूरत इसलिए पड़ी क्योंकि यहां के मौजूदा विधायक रालोद के चंदन चौहान बिजनौर से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए हैं। उत्तर प्रदेश की नौ विधानसभा सीट पर उपचुनाव होंगे। ये हैं अंबेडकर नगर में कटेहरी, मैनपुरी में करहल, मुजफ्फरनगर में मीरापुर, गाजियाबाद, मिजार्पुर में मझवां, कानपुर शहर में सीसामऊ, अलीगढ़ में खैर, प्रयागराज में फूलपुर और मुरादाबाद में कुंदरकी। इनमें से आठ सीट विधायकों के लोकसभा के लिए निर्वाचित होने की वजह से खाली हुई हैं। सीसामऊ सीट पर उपचुनाव इसलिए हो रहा है क्योंकि समाजवादी पार्टी के विधायक इरफान सोलंकी को आपराधिक मामले में दोषी ठहराया गया है।

दिव्यांगजनों के लिए छात्रवृत्ति योजना आवेदन तिथि बढ़ी, 15 नवंबर तक का मौका : डीसी

प्रातः किरण संवाददाता

फरीदाबाद, । उपायुक्त विक्रम सिंह ने बताया कि भारत सरकार का सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय दिव्यांगजनों के शैक्षिक उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, मंत्रालय द्वारा विशेष छात्रवृत्ति योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनके माध्यम से दिव्यांग छात्रों को शिक्षा में प्रोत्साहन और आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। डीसी विक्रम सिंह ने बताया कि इन योजनाओं में प्रमुख रूप से प्री मैट्रिक, पोस्ट मैट्रिक और उच्च श्रेणी की छात्रवृत्तियां शामिल हैं, जो छात्रों की शैक्षणिक यात्रा को सुगम बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई हैं। इन योजनाओं का लाभ दिव्यांग छात्र देशभर में प्राप्त कर सकते हैं, जिससे उन्हें आत्मनिर्भर बनने में सहायता मिलेगी और वे समाज में अपनी एक विशेष पहचान बना सकेंगे। छात्रवृत्ति के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया को भी सरल बनाया गया है। उन्होंने कहा कि सभी श्रेणियों के लिए आवेदन की अंतिम तिथि को अब बढ़ाकर 15 नवंबर कर दिया गया है, जिससे अधिक से अधिक छात्रों को आवेदन का मौका मिल सके। डीसी ने बताया कि वित्त वर्ष 2024-25 के लिए आवेदन प्रक्रिया नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर शुरू हो चुकी हैं। ये योजनाएं ऐसे दिव्यांग छात्रों के लिए हैं, जिनकी दिव्यांगता 40 प्रतिशत या उससे अधिक है। उन्होंने बताया कि आवेदकों के पास सक्षम चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा जारी दिव्यांगता प्रमाण पत्र होना अनिवार्य है। साथ ही, आवेदक के परिवार की वार्षिक आय भी निर्धारित सीमा से अधिक नहीं होनी चाहिए। प्री मैट्रिक, पोस्ट मैट्रिक और उच्च श्रेणी छात्रवृत्ति योजनाओं के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 अक्टूबर 2024 थी, जिसको बढ़ाकर अब 15 नवंबर कर दिया गया है। इच्छुक छात्र एवं छात्राएं आवेदन करने के लिए नेशनल स्कॉलरशिप पोर्टल पर जा सकते हैं। इस योजना के लिए आवेदक के अभिभावक या संरक्षक की वार्षिक आय 2.50 लाख रुपए से अधिक नहीं होनी चाहिए।

24 घंटे अलर्ट मोड पर रहेंगे 220 हाईटेक डीप डाइवर, पानी पर होगा 700 नावों से पहरा

- गोवा, कोलकाता, महाराष्ट्र समेत देश के सबसे चुनिंदा जल पुलिस के जवान पहुंच रहे प्रयागराज
- बिना गैस सिलेंडर 40 फीट गहरे पानी में जाने में सक्षम स्थानीय लोगों की भी ली जा रही मदद

प्रात : किरण, संवाददाता

प्रयागराज, । सनातन धर्म के सबसे बड़े सामूहिक आयोजन महाकुंभ 2025 में योगी सरकार हर आपात स्थिति से निपटने की तैयारी कर रही है। दुनिया के सबसे बड़े सांस्कृतिक कार्यक्रम को सुरक्षा की दृष्टि से सफल बनाने के लिए जल पुलिस, पीएसी, स्वास्थ्य कर्मियों के साथ एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की कई टीमें मिलकर काम कर रही हैं। इसी क्रम में महाकुंभ के दौरान 220 हाईटेक डिप डाइवर समेत एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के सुरक्षाकर्मी 700 नाव पर सवार होकर 24 घंटे अलर्ट मोड पर रहेंगे। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर देश विदेश से महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं की पुख्ता सुरक्षा के लिए हर तरह के इंतजाम किए जा रहे हैं। इसके चलते गोवा, कोलकाता, महाराष्ट्र समेत देश के सबसे चुनिंदा जल पुलिस के जवान प्रयागराज में तैनात किए जा रहे हैं। स्नानार्थियों और साधु संतों के साथ स्नान के दौरान कोई भी अनहोनी न होने पाए इसके लिए पहली बार इतनी बड़ी संख्या में हाईटेक डीप डाइवरों की ड्यूटी लगाई जा रही है। 24 घंटे रहेंगे अलर्ट मोड में किला थाना की जल पुलिस के प्रभारी जनार्दन प्रसाद साहनी ने बताया कि महाकुंभ के दौरान 180 डीप ड्राइवर्स की तैनाती की गई है, जो देश के विभिन्न हिस्सों से यहां आ रहे हैं, जबकि 39 डीप ड्राइवर्स पहले से ही यहां तैनात हैं। इस तरह कुल 220 डीप ड्राइवर्स हर वक्त पानी में सुरक्षा के लिए अलर्ट मोड में रहेंगे। इसके अलावा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों का भी इसमें सहयोग लिया जा रहा है। स्थानीय केवट भी सहयोग में रहेंगे जो बिना गैस सिलेंडर के भी 40 फीट गहराई तक जाने में सक्षम हैं। यही नहीं, स्नानार्थियों की मदद के लिए 10 कंपनी पीएसी, 12 कंपनी एनडीआरएफ और 6 कंपनी एसडीआरएफ भी तैनात की जा रही है जो किसी भी विषम परिस्थित से निपटने में सक्षम होगी। 200 से ज्यादा स्थानीय लोग भी रहेंगे सुरक्षा में तैनात देश दुनिया से महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था के लिए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार 24 घंटे एक्शन मोड में काम कर रही है। सरकार के निर्देश पर कई तरह की सरकारी और गैर सरकारी संस्थाएं भी महाकुंभ के सबसे बड़े सांस्कृतिक महाआयोजन में सहयोग करने के लिए तत्पर हैं। इसी के तहत पीएसी और एनडीआरएफ-एसडीआरएफ के साथ ही गांव के स्थानीय लोग भी इसमें बड़ी संख्या में बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। ऐसे ही स्थानीय लोगों की एक टीम को यहां की जल पुलिस प्रशिक्षित भी कर रही है। जिसमें 200 से ज्यादा जवान महाकुंभ में स्नान करने वाले संतों और श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था में अपनी जिम्मेदारी निभाने जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में छह लाख से अधिक गर्भवती महिलाओं को मिली मुफ्त अल्ट्रासाउंड की सुविधा

प्रातः किरण संवाददाता

लखनऊ, । उत्तर प्रदेश सरकार ने सोमवार को कहा कि गर्भवती महिलाओं को निजी अल्ट्रासाउंड केंद्रों पर मुफ्त अल्ट्रासाउंड की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है और फरवरी 2023 से अब तक छह लाख से अधिक गर्भवती महिलाएं सुविधा का लाभ उठा चुकी हैं। सोमवार को जारी एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गयी। बयान में कहा गया कि राज्य सरकार गर्भवती महिलाओं को प्रदेश के किसी भी जिले के पैनल के तहत निजी अल्ट्रासाउंड केंद्र पर फ्री अल्ट्रासाउंड की सुविधा उपलब्ध करा रही है ताकि उन्हें भटकना न पड़े। बयान में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) की निदेशक डॉ. पिंकी जोवल के हवाले से बताया गया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश के अनुरूप प्रदेश की गर्भवती महिलाओं को फरवरी 2023 से मुफ्त अल्ट्रासाउंड की सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है। यह सुविधा प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत निजी अल्ट्रासाउंड केंद्रों पर दी जा रही है। मिशन निदेशक ने बताया कि सुविधा का लाभ देने के लिए प्रदेश के 75 जिलों में 1,861 निजी अल्ट्रासाउंड केंद्रों को पैनल में शामिल किया गया है और सरकार अब तक गर्भवती महिलाओं को अल्ट्रासाउंड के लिए 14,50,238 ई-रुपी वाउचर जारी किये जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि गर्भवती महिलाएं 6,81,341 ई-रुपी वाउचर का लाभ उठाया चुकी हैं। गर्भवती महिलाएं एक माह तक जारी ई-रुपी वाउचर का लाभ उठा सकती हैं, इसके बाद यह स्वतः कैंसिल हो जाता है। जोवल ने कहा कि गर्भवती महिलाओं को जिला महिला चिकित्सालय, संयुक्त चिकित्सालय, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) और प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल (पीएचसी) केंद्रों पर हर महीने चार दिन 1, 9, 16 और 24 तारीख को ई-रुपी वाउचर जारी किये जाते हैं। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश के बाद कार्यकर्ता घर-घर जाकर अभियान चला रहे हैं ताकि अधिक से अधिक महिलाओं को इस बहुमूल्य सुविधा के बारे में जानकारी मिल सके।

एकजुटा से पलवल को स्वच्छ जिला बनाने का लें संकल्प : गौरव गौतम

प्रात : किरण संवाददाता

पलवल, । प्रदेश सरकार में खेल, युवा अधिकारिता एवं उद्यमिता, कानून विधायी राज्य मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि स्वच्छता जन-जन से जुड़ा मामला है और एक सामूहिक दायित्व है। यदि सभी जिलावासी मिलकर पलवल को देश का सबसे साफ, स्वच्छ व सुंदर जिला बनाने को संकल्प लें तो पलवल जिला एक दिन अवश्य ही पलवल जिला स्वच्छता व सुंदरता के मामले में देश का अग्रणी जिला होगा। स्वच्छता अभियान में हर एक व्यक्ति की भागीदारी व सहयोग आवश्यक है। राज्य मंत्री गौरव गौतम सोमवार को जिला प्रशासन की ओर से पलवल के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों को साफ-सुथरा और स्वच्छ बनाने के लिए चलाए जा रहे विशेष स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करने उपरांत आमजन से स्वच्छता की अपील कर रहे थे। प्रशासन की ओर से आज आगरा चौक से लेकर न्यू कालोनी तक स्वच्छता अभियान चलाया गया। उन्होंने स्वयं कूड़ा उठाने वाले वाहन को चलाते हुए शहर में जगह-जगह से कचरा एकत्रित किया। अनेक विविधताओं के बाद भी एकजुट रहना हमारे देश की एक विशिष्ट पहचान है। एकता और जन-भागीदारी की ताकत आज हमारे देश के विकास को गति दे रही है। सामूहिक इच्छाशक्ति से किसी क्षेत्र में किस तरह बदलाव लाया जा सकता है, इसका उदाहरण स्वच्छ भारत अभियान है। भारत को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाने के लक्ष्य को पाने और स्थायी एवं सतत विकास को गति देने के लिए स्वच्छ भारत मिशन एक जन आंदोलन बनकर उभरा है। जिला को साफ-सुथरा रखने में जिला प्रशासन का सहयोग करें जिलावासी : उपायुक्त डा. हरीश कुमार वशिष्ठ ने जिलावासियों से आह्वान किया कि वे अपने जिला को साफ-सुथरा रखने में जिला प्रशासन का सहयोग करें। जिला को साफ-स्वच्छ बनाने के लिए जिला प्रशासन के साथ-साथ आम नागरिकों का योगदान बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन की ओर से जिला में विशेष सफाई अभियान चलाया जा रहा है, जिसके तहत प्रतिदिन दोहपर 2 बजे से लेकर सायं 5 बजे तक स्वच्छता अभियान चलाकर चौक-चौराहों, सडकों और गली-मोहल्लों में साफ-सफाई की जाएगी। इस अभियान में सभी नागरिकों को सहयोग करना चाहिए।

यूपी में बनेगा नया एक्सप्रेसवे, नोएडा-बुलंदशहर के 57 गांवों से होकर गुजरेगा

- निर्माण के बाद जेवर एयरपोर्ट से हो जाएगी गंगा एक्सप्रेसवे की कनेक्टिविटी

प्रात : किरण संवाददाता

लखनऊ, । यूपी में एक और नया एक्सप्रेसवे बनाने की योजना तैयार की जा रही है, जो मौजूद एक्सप्रेसवे नेटवर्क को और भी मजबूत प्रदान करेगा। इस प्रस्तावित लिंक एक्सप्रेसवे के निर्माण से जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट की कनेक्टिविटी गंगा एक्सप्रेसवे के साथ हो जाएगी। गंगा एक्सप्रेसवे मेरठ को प्रयागराज से जोड़ता है। यह 83 किलोमीटर लंबा नया एक्सप्रेसवे नोएडा और बुलंदशहर के 57 गांवों से होकर गुजरेगा, जिससे इन क्षेत्रों के लोगों को भी फायदा मिलेगा साथ ही नोएडा से प्रयागराज तक आना-जाना आसान होगा। यूपी सरकार ने राज्य में चार नए लिंक एक्सप्रेसवे बनाने की योजना तैयार की है और यूपी एक्सप्रेसवेज इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट अथॉरिटी (यूपीडा) ने इन एक्सप्रेसवे के लिए एक रिपोर्ट तैयार भी कर ली है। इसके तहत हाल ही में रेडिकान इंडिया द्वारा सर्वे और फिजीबिलिटी स्टडी की गई थी और रिपोर्ट यूपीडा को सौंप दी गई है। अब यूपीडा इस रिपोर्ट पर अपना फैसला लेगा। नोएडा से बुलंदशहर से मेरठ तक बनने वाले इस एक्सप्रेसवे के निर्माण पर करीब चार हजार करोड़ रुपए का खर्च आने का अनुमान है। इस प्रोजेक्ट के लिए एक हजार हेक्टेयर भूमि की जरुरत होगी जो किसानों से खरीदी या अधिग्रहीत की जाएगी। एक्सप्रेसवे के निर्माण से गंगा एक्सप्रेसवे की उपयोगिता और बढ़ जाएगी, खासकर जेवर एयरपोर्ट के साथ जुड़ने के बाद। यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में चार नए लिंक एक्सप्रेसवे बनाने की घोषणा की थी, जिनका उद्देश्य बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करना है। इसके तहत आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे से पूर्वांचल एक्सप्रेसवे तक एक लिंक एक्सप्रेसवे, गंगा एक्सप्रेसवे से आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे तक वाया फरुर्खाबाद एक नया लिंक एक्सप्रेसवे और चित्रकूट लिंक एक्सप्रेसवे बनाने की योजना है।

लोक सेवा आयोग के गेट पर छात्रों का आंदोलन शुरू, भारी पुलिस बल तैनात

प्रात : किरण संवाददाता

प्रयागराज, । उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा प्रांतीय सिविल सेवा (पीसीएस) प्री, समीक्षा अधिकारी व सहायक समीक्षा अधिकारी (आरओ एआरओ) की परीक्षा अलग-अलग तिथियों पर कराने के निर्णय के विरोध में प्रतियोगी छात्र सोमवार को यहां आयोग के गेट पर धरना प्रदर्शन करने पहुंचे, लेकिन पुलिस कर्मियों ने उन्हें खदेड़ दिया। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने एक्स पर एक पोस्ट में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को युवा विरोधी करार देते हुए विद्यार्थियों पर लाठीचार्ज करने का आरोप लगाया और इसकी निंदा की। उन्होंने दावा किया, लोक सेवा आयोग में धांधली को रोकने के लिए अभ्यर्थियों ने मांग बुलंद की तो भ्रष्ट भाजपा सरकार हिंसक हो उठी। हम फिर दोहराते हैं: नौकरी भाजपा के एजेंडे में है ही नहीं ह्व उप्र लोक सेवा आयोग के आसपास भारी संख्या में तैनात पुलिसकर्मियों ने छात्रों को गेट नंबर दो की तरफ आने से रोका, लेकिन छात्र-छात्राओं की भीड़ धक्का मुक्की करते हुए गेट के पास पहुंची और नारेबाजी शुरू की। पुलिस ने छात्रों को तितर बितर करने के लिए उन्हें खदेड़ा, लेकिन आंदोलनरत छात्र फिर से वहां एकत्रित हो गए। पुलिस उपायुक्त (नगर) अभिषेक भारती ने कहा, प्रतियोगी छात्रों को लोकतांत्रिक ढंग से, तय धरना स्थल गिरिजाघर सिविल लाइंस पर जाकर विरोध प्रदर्शन करने का अनुरोध किया गया है। काफी छात्र वहां चले भी गए हैं, लेकिन कुछ छात्र अभी आयोग के सामने धरना प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रतियोगी छात्र अंकित पटेल ने कहा कि छात्र पूर्व की तरह एक ही पाली में परीक्षा चाहते हैं जिसके लिए यह विरोध प्रदर्शन हो रहा है। प्रतियोगी छात्रा मनोरमा सिंह ने कहा कि आयोग द्वारा दो दिन में परीक्षा कराना नियम के खिलाफ है। उनके मुताबिक, अधिसूचना में आयोग ने इस बात का जिक्र नहीं किया था कि परीक्षा दो दिनों में कराई जाएगी तथा छात्र चाहते हैं कि एक ही दिन में परीक्षा संपन्न कराई जाए। आयोग ने पिछले मंगलवार को इन परीक्षाओं की तिथियों की घोषणा की।

जोरावरपुर में पांच घंटों में दो अलग अलग सड़क हादसों में दो की हुई मौत

प्रातः किरण संवाददाता

कारकाट (रोहतास) । कारकाट थाना क्षेत्र के जोरावरपुर गांव के एनएच 120 बिक्रमगंज -डेहरी मुख्य मार्ग पर रविवार को पांच घंटे की अंदर दो अलग अलग सड़क हादसा हो गई । जिसमे दोनो युवक की मौत हो गई। मृतक जोरावरपुर गांव निवासी यमुना शर्मा के 25 वर्षीय पुत्र रितेश कुमार शर्मा बताया जा रहा है। घटना के बारे में बताया गया की रितेश रविवार की रात करीब 8:15 में इटिम्हा बाजार से अपने घर के सामने रोड़ क्रोस कर रहा था की अचानक बिक्रमगंज की तरह से तेज रफ्तार से आ रही ट्रक ने उसे कुचल दिया। जिससे वो पूरी तरह घायल हो गया। जिसके बाद परिजनों और ग्रामीणों की सहयोग से घायल को प्राथमिक उपचार के लिए पास के किसी निजी अस्पताल ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने नाजुक स्थिति बताते हुए हायर सेंटर भेज दिया। परिजन ने घायल की बेहतर इलाज के लिए नारायण मेडिकल अस्पताल जमुहार ले गया जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मौत की पुष्टि होते ही परिजनों में हाहाकार मचा गया और परिजन चीख पुकार मचाते हुए दहाड़ मारकर रोने लगे। मृतक के चार भाई थे जिसमे सांझीले भाई रितेश की सड़क दुर्घटना में मौत हो गया। मृतक गुजरात के किसी निजी कंपनी में काम करता था। दुगार्पूजा की छुट्टी में अपने गांव आया था। एक ही गांव में कुछ ही घंटे की अंदर हुए दो मौत के बाद से पूरे गांव में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है। और लोग घटना के बाद उग्र हो गए और बिक्रमगंज-डेहरी मुख्य मार्ग को सोमवार की सुबह करीब 6 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक सड़क को जाम रखा। गुस्साए ग्रामीणों ने सड़क के बीचों बीच मृतक की शव रखकर मुख्य

सड़क को जाम कर उच्चाधिकारी को घटना स्थल पर बुलाने व मृतक के परिजनों को उचित मुआवजा राशि देने की माग कर रहे थे। घंटो जाम के बाद एनएचआई सहायक अभियंता गाया अनिल कुमार, बीडीओ राहुल कुमार सिंह, सीओ रितेश कुमार, थानाध्यक्ष फूलदेव चौधरी ने परिजनों को समझने-बुझाने और मानने की प्रयास किया लेकिन परिजन अपने शर्तो पर अड़े हुए थे। प्रखंड प्रमुख प्रतिनिधि नारायण पासवान और जिला परिषद रितेश सिंह ने प्रदर्शनकारियों को शांत कराते हुए लिखित रूप से अधिकारियों को ज्ञापन सौंपा। जिसपर एनएचआई सहायक अभियंता ने आश्वासन दिया की 15 से 18 नवंबर तक रंबल स्ट्रिप बना दिया जाएगा और रोहतास डीएम से बालू परिचालन के लिए नो एंट्री लगाने के लिए आग्रह किया जायेगा। जिसपर करीब छह घंटे से अधिक सड़क जाम को खोला गया। परिजनों ने बताया की रविवार की देर रात रोड़ क्रोस करने के दौरान तेज रफ्तार से आ रही टेलर ने रितेश को रौंद दिया जिससे पूरी तरह घायल हो गया। आनन-फानन में उसे किसी निजी अस्पताल पहुंचाया गया । जिसे चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। जिसके बाद से ही परिजनों की रोरोकर बुरा हाल है। सूचना पर स्थानीय पुलिस व बीडीओ, सीओ, घटना स्थल पर पहुंच मृतक के परिजनों को काफी समझने बुझाने की प्रयास किया। लेकिन परिजन उच्चाधिकारी व पथ पर स्पीड ब्रेकर बनाने को लेकर मुख्य मार्ग से हटने की नाम नही ले रहे हैं। दोनो तरह वाहनों की लंबी कतारें लगी हुई थी। अधिकारियों की आश्वासन पर सड़क जाम को खोला गया। थानाध्यक्ष फूलदेव चौधरी ने कहा की शव को पोस्टमार्टम के लिए सासाराम के सदर अस्पताल भेज दिया गया है। घटना को अपजम देने वाले ट्रक का पता लाएगा जा रहा है। अज्ञात के विरुद्ध एफआइआर दर्ज कर आगे की करवाई किया जा रहा है।

अब्दुल अलीम अल्पसंख्यक छात्रावास के सभागार में मनाई गई मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती

प्रातः किरण संवाददाता

मझोआ चकिया मोड पर स्थित अब्दुल अलीम अल्पसंख्यक कल्याण छात्रावास मझवा के सभागार में मौलाना अबुल कलाम आजाद जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय शिक्षा दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्रों द्वारा मौलाना सब की जिंदगी पर प्रकाश डाला गया।अतिथियों का स्वागत होस्टल सुप्रेरेटेंडेंट डॉ मो रेहान आलम मंच संचालन डॉ मो सैफ

धन्यवाद ज्यापन प्रो मो साईद ने किया जबकि समारोह की अध्यक्षता

प्रभारी प्राचार्या डॉ मो इरशाद हुसैन ने की मुख्य अतिथि रतन जी

जिला अल्पसंख्यक कल्याण पदाधिकारी रतन जी अपने सम्बोधन में कहा भारत के पहले शिक्षामंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती के उपलक्ष्य में 11 नवंबर को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाया जाता है। मानव संधान विकास मंत्रालय 11 नवंबर 2008 में शिक्षा जगत मिलकर समर्पण को देखते हुए इस दिन को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस मनाने का फैसला लिया गया

मौलाना अब्दुल कलाम आजाद को मरणोपरांत 1992भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

संबोधन डॉ इरशाद हुसैन ने कहा की कहा की मौलाना अबुल कलाम आजाद के जीवन से सिख लेने की जरुरत है। छात्रों को सफल होने के लिए सुबह उठना चाहिए व्यायाम करना चाहिए और पेपर जरूर पढ़ना चाहिए।

आज के समारोह में सद्दाम,शाहबाब, आजाद इमरोज इत्यादि उपस्थित हुए।

प्रथम दिन पैक्स चुनाव को लेकर अध्यक्ष पद से 21 उमीदवारों ने अपना नामांकन दाखिल किया

अमनौर। प्राथमिक कृषि साख सहयोग समिति (पैक्स)चुनाव को लेकर सोमबार से उमीदवारों का नामांकन शुरू हो गया।प्रथम दिन प्रखंड के अठारह पंचायतों से अलग अलग उमीदवार समर्थको के साथ प्रखंड मुख्यालय पहुँच नामांकन दाखिल कर रहे थे।शांति व्यवस्था बनाये रखने में पुलिस अधिकारी पूर्ण रूप से मुस्तैद थे।प्रथम दिन अमनौर कल्याण पंचायत के पूर्व मुखिया राज कुमार सिंह के पुत्र रोहित कुमार सिंह उर्फ गोलू ने भारी समर्थको के साथ अध्यक्ष पद से अपना नामांकन दाखिल किया।रोहित एक युवा नेता है।जिनका क्षेत्र में काफी लोकप्रिय है समाजसेवा को लेकर।इनकी माँ व पिता भी मुखिया रह चुके है।वही मनोरपुर झखरी से हरि-शंकर राय ढोरलाही पंचायत से अतुल कुमार सिंह रसूलपुर पंचायत से राजेश कुमार सिंह धर्मपुरजाफर से अजित कुमार ने अध्यक्ष पद से नामांकन दाखिल किया है।निर्वाचन पदाधिकारी सह बीडीओ राजीव कुमार सिंह ने बताया कि प्रथम दिन पैक्स अध्यक्ष पद से मात्र 21 उमीदवार ने अपना नामांकन दाखिल किया है।

पहले स्कूल ड्रेस पहनकर आओ, फिर होगी परीक्षाः प्रधानाचार्या ,संध्या सिन्हा

प्रातः किरण संवाददाता

तिलौथू(रोहतास) : जागोडीह, तिलौथू: +2 अमर शहीद जगदेव उच्च विद्यालय, जागोडीह, तिलौथू में विद्यालय के नियमों का पालन न करने वाले 20 विद्यार्थियों को परीक्षा में बैठने से रोक दिया गया। प्रधानाचार्या संध्या सिन्हा ने स्पष्ट रूप से कहा कि सभी छात्रों को एक साल से स्कूल ड्रेस पहनने के लिए निर्देश दिया गया था। परीक्षा से एक माह पहले नोटिस भी जारी किया गया, लेकिन कुछ छात्र इन निदेशों की अनदेखी कर रहे हैं।

प्राचार्या संध्या सिन्हा ने अपनी

नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा, ह्लबच्चे व्हाइट शर्ट तो पहन कर आते हैं, लेकिन बाकी ड्रेस के मामले में लापरवाही बरतते हैं। हाथ में 10 हजार का मोबाइल और बाइक लेकर स्कूल आते हैं, पर 500 रुपये की स्कूल ड्रेस नहीं बनवा सकते। यह दुर्भाग्यपूर्ण है।वहीं, परीक्षा में शामिल होने से वंचित किए गए छात्रों ने विद्यालय के गेट पर खड़े होकर सोशल मीडिया पर अपना विरोध दर्ज कराया और पत्रकारों से विद्यालय की आलोचना की। हालांकि, जांच में सामने आया कि कई विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों ने जानबूझकर ड्रेस न बनवाने का निर्णय लिया।

विद्यालय की प्रधानाचार्या ने बताया कि सभी छात्राओं ने स्कूल ड्रेस का पालन किया है, लेकिन कुछ छात्र निदेशों को नजरअंदाज कर रहे हैं। ऐसे में, छोटे कक्षा के छात्र भी सवाल उठाने लगे हैं कि जब बड़े भाई-बहन उचित ड्रेस में नहीं आते, तो उन्हें क्यों पहननी चाहिए।

शिक्षा में सुधार की दिशा में कदमः

बिहार में शिक्षा सुधार का क्रम लगातार जारी है, और इसमें संध्या सिन्हा जैसी शिक्षकों का विशेष योगदान है। विद्यालय ने सभी छात्रों के लिए स्कूल ड्रेस अनिवार्य की है ताकि अनुशासन बना रहे।

कड़ी सुरक्षा के बीच पैक्स का नामांकन हुआ शुरू

अध्यक्ष पद के लिए सात और सदस्य के लिए 15 ने किया नामांकन

प्रातः किरण संवाददाता

अरवल । कड़ी सुरक्षा के बीच पहले दिन पैक्स नामांकन की प्रक्रिया शुरू हुई इसी कड़ी में जिले के कलेर प्रखंड मुख्यालय परिसर में पहले दिन अध्यक्ष पद के लिए सात लोगों ने नामांकन किया ,जबकि प्रबंध कार्यकारणी पद के लिए 15 लोगों ने नामांकन किया ।अध्यक्ष पद के लिए उत्तरी कलेर पैक्स से आरफीन खान ,रामनाथ राय, तस्लीमुद्दीन, बेलसार पैक्स से मनोज कुमार ,पहलेजा पैक्स से राधिका रमन ,सकरी खुर्द पैक्स से सुषमा देवी ,इंजोर पैक्स से अध्यक्ष पद के लिए सिद्धेश्वर राम ने नामांकन

किया। वहीं प्रबंध कार्यकारिणी सदस्य के लिए उत्तरी कलेर पैक्स से नौ, इंजोर से एक ,जयपुर पैक्स से पांच लोगों ने नामांकन किया।प्रखंड विकास पदाधिकारी मनोज कुमार ने बताया कि नामांकन का कार्य 13 नवंबर तक चलेगा। 14 ,15 एवं 16 नवंबर तक स्कूटनी का कार्य किया जायेगा ।19 नवंबर के दिन नाम वापसी का कार्य किया जायेगा तथा 26 नवंबर को मतदान एवं27 को मतगणना का कार्य संपन्न किया जायेगा ।उन्होंने यह भी बताया कि नामांकन में होने वाले भीड़ को देखते हुए चार काउंटर बनाया गया हैं ।

पैक्स चुनाव के प्रथम दिन 7 ने किया नामांकन दाखिल

बेनीपुर(दरभंगा)। प्रखंड व नगर परिषद में पैक्स चुनाव को लेकर सोमवार से नामांकन दाखिल करने की प्रक्रिया किसान भवन में शुरू हो गई।
निर्वाचन अधिकारी सह बीडीओ प्रवीण कुमार ने बताया कि प्रखंड व नगर परिषद के 7 पैक्सों उफरदाहा-तरौनी, शिवराम, बाथो-रढ़ियाम, माधोपुर, जरिसो, पोहद्दी, सझुआर के चुनाव को लेकर नामांकन पत्र दाखिल करने का कार्य सोमवार से की शुरू कर दी गई है। नामांकन प्रक्रिया 13 नवंबर तक चलेगी। बीडीओ ने बताया कि नामांकन के बाद 14 से 16 नवंबर को नामांकन पत्र की संवीक्षा की जाएगी। नाम वापस लेने और चुनाव चिन्ह आवंटन 19 नवंबर को तथा मतदान 26 नवंबर को होंगे। 27 नवंबर को मतगणना होगी। उधर पैक्स चुनाव को लेकर सरगर्मी तेज हो गई है। चुनाव मैदान में खड़े हो रहे प्रत्याशियों द्वारा वोटरों से मिलना जुलना शुरू है ।

सरस्वती बाल विद्यालय का स्थानांतरित सह उद्घघाटन समारोह का हुआ आयोजन

निजी विद्यालय खुलने से इस क्षेत्र के बच्चों के पठन-पाठन में होगा लाभ : विधायक

प्रातः किरण संवाददाता

करगहर -स्थानीय करगहर में सोमवार को सरस्वती बाल विद्यालय स्थानांतरित होने पर नये भवन का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर व फीता काट कर करगहर विधायक संतोष मिश्र एवं अंचलाधिकारी अजीत कुमार ने समारोह पूर्वक किया। समारोह की अध्यक्षता अरूण दास ने किया। संचालन समाजसेवी धन्नजय पांडेय उर्फ टाईगर बाबा ने किया।समारोह को संबोधित करते विधायक संतोष मिश्र ने कहा कि इस इलाके में विद्यालय का स्थापना होने से शैक्षणिक विकास का द्वार खुलेगा। विद्यालय का स्थापना करने से पिछड़े इस इलाकों में शिक्षा का अलख जगाने के लिए विद्या का मंदिर बनाकर समाज में अच्छा काम किया गया है।इस विद्यालय में सुयोग्य शिक्षकों के द्वारा शिक्षा का संचार होगा।

अंचलाधिकारी अजीत कुमार ने कहा कि आज के परिवेश में निजी विद्यालय के ओर लोग मुखातिब हो रहे हैं। शिक्षक छात्र के भाग्य निमार्ता होते हैं।संचालक के द्वारा इस विद्या के मंदिर का निर्माण कर शैक्षणिक विकास का संकल्प लिया गया। वरिष्ठ पत्रकार सुरेंद्र तिवारी ने कहा कि विद्यालय का उत्तरोत्तर विकास क्षेत्रीय विकास में मददगार होगा। साथ ही कहा कि विद्यालय सुयोग शिक्षक के माध्यम से आने वाले समय में राष्ट्र निमार्ता बनाएंगे। पहलवान मोहन यादव ने कहा इस इलाके में विद्यालय का स्थापना होने इस इलाके में क्षेत्र शिक्षा का अलख जगाया जायेगा।

कार्यक्रम से पहले विधालय के बच्चियों द्वारा आये अतिथियों को स्वागत गीत गाकर स्वागत किया गया। वहीं विधालय के व्यवस्थापक मो०शमशाद आलम व प्रधानाध्यापक अनिल मिश्र के द्वारा सभी अतिथियों को अंगवस्त्र व पुष्पहार से सम्मानित किया गया।मौके पर उपस्थित वरिष्ठ पत्रकार तेज नारायण पांडेय, पत्रकार राजनीकांत पांडेय,जय गोपाल यादव, सुभाष सिंह,श्रीमन नारायण सिंह, काशीनाथ पांडेय, रूस्तम राईन,सत्यम पांडेय, वार्ड सदस्य अजय सिंह,गिरिश तिवारी, वार्ड सदस्य टिंकू पांडेय,कुंडल मिश्र,राम निवास शर्मा, राजेश यादव, पत्रकार अजय सोनी, पत्रकार मैनूद्दीन आलम,दुर्गा सिंह,त्रियोगी नारायण पांडेय, सहित सभी शिक्षक शिक्षिकाओं आदि लोगों मौजूद थे।

स्वर्गीय लड्डू यादव के दूसरा पुण्यतिथि समारोह जयनाथ सिंह के अध्यक्षता में मनाया गया

प्रातः किरण संवाददाता

भोजपुरःउदवंतनगर प्रखंड के बेहरा निवासी समाजसेवी शिक्षक अशोक सिंह एवं प्रमोद कुमार सिंह के पूज्यपिता स्वर्गीय लड्डू यादव के दूसरा पुण्यतिथि समारोह जयनाथ सिंह के अध्यक्षता में मनाया गया ।समारोह के संचालन श्री कृष्ण चेतना समिति के सचिव अजय यादव ने किया समारोह के उद्घाटन श्री कृष्ण चेतना समिति के अध्यक्ष नन्दकिशोर सिंह पूर्व जिला पार्षद मालिक यादवजोगता पंचायत के पूर्व मुखिया प्रतिनिधि संजय मंडल एवं पूर्व प्रमुख प्रतिनिधि भीम यादव ने उनके तैल चित्र पर माल्यार्पण कर किया।अपने सम्बोधन में वक्ताओं ने कहा कि स्वर्गीय लड्डू यादव एक कर्मठ एवं संघर्ष समाजसेवीके साथ एक सफल किसान थे ।वे समाज के बंचित समाज के लोगो के लिए उनके कार्यों एवं दुखदर्द में हमेशा तत्पर रहते थे आज के तिथि के2022में उनकी मृत्यु हो गई थी जो समाज के लिए अपूर्णीय क्षति है ।उनकी अनुपस्थिति से समाज को काफी क्षति हो रही है ।समारोह में उपस्थित लोगों में यादव रामसकल सिंह भोजपुरिया भूपेंद्र मण्डल पप्पू यादव लोजपा नेता ललन यादव अर्जुन यादव बिरेन्द्र सिंह शिक्षक नरेंद्र सिंह शिक्षक मैनेजर यादव शिक्षक सतेंद्र यादव गौतम यादव सरोज यादव विमलेश यादव डॉ संजय सिंह थे आगत अतिथियों के स्वागत स्वर्गीयलड्डू यादव के बड़े पुत्र अशोक सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन उनके छोटे पुत्र प्रमोद कुमार सिंह ने किया।

ससुराल आए युवक का नहर से शव बरामद

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास) : थाना क्षेत्र के भोजपुर रजवाहा से थाना चौक के पास नहर से सोमवार को एक युवक का शव बरामद हुआ। स्थानीय लोगों की सूचना पर जाकर पुलिस ने शव को लेकर अंत्यपरीक्षण के लिए सासाराम भेज दिया है।

मृतक सासाराम नगर थाना क्षेत्र के काजीपुर निवासी स्व सुरेंद्र चौधरी का 30 वर्षीय पुत्र रोहित चौधरी है। उसकी शादी बिक्रमगंज निवासी वर्तमान में सहेजनी निवासी सुनिल चौधरी की पुत्री चांदनी देवी से हुई थी। वह ससुराल छठ पूजा में आया था।

रविवार को वह अपने ससुराल से बाहर घूमने निकला था, जिसका शव सोमवार को नहर से बरामद हुआ। मृतक की पत्नी भी अपने मायके थी। इस घटना के बाद युवक के ससुराल में रुदन क्रंदन होने लगा।

थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि प्रथम दृष्टया युवक की मौत पानी में डूबने से होने जैसा प्रतीत होता है। उसके शरीर पर कोई जख्म का निशान नहीं मिला है। मृतक की पत्नी के बयान पर अप्राकृतिक मौत का मामला दर्ज किया गया है।

विद्युत विभाग के अधिकारियों ने मीटर रीडरों के साथ की बैठक

नटबार(रोहतास) : विद्युत शक्ति उपकेंद्र नटवार मे सहायक विद्युत अभियंता बिक्रमगंज की अध्यक्षता में मीटर रीडरों के साथ एक बैठक की गई। उक्त बैठक मे शीर्ष कंपनी के राजस्व को बढ़ावा के लिए उपभोक्ताओं के परिसर का शत प्रतिशत मीटर पठन करने हेतु निर्देशित की गयी। सहायक विद्युत अभियंता, बिक्रमगंज राज कुमार ने कहा कि सभी मीटर रीडर प्रत्येक दिन सुबह 8 बजे तक लॉगिन करेंगे, प्रत्येक रीडिंग वास्तविक पठन के आधार पर करेंगे, मीटर रीडिंग प्रत्येक माह के 25 तारीख तक पूर्ण करेंगे, मनी रसीद की संख्या में बढ़ोतरी करेंगे जिससे कि लक्ष्य के अनुरूप राजस्व संग्रहण की जा सके। प्रत्येक दिन शत प्रतिशत कलेक्शन हेतु लॉगिन करेंगे, साथ हीं सभी पर्यवेक्षक को निर्देशित किया कि प्रत्येक दिन गुणवत्तापूर्ण मीटर का फोटो जांच करेंगे, मीटर रीडर के द्वारा किए गए बिलिंग में मीटर का फोटो क्रॉप स्वीकार नहीं है, गलत एमआरयू में उपभोक्ता रहने पर अपने पर्यवेक्षक के सहायता से उस उपभोक्ता को सही एमआरयू में टैग कराना सुनिश्चित करेंगे। बैठक में कनीय विद्युत अभियंता दिनारा विकाश कुमार, प्रवेक्षक सहित विद्युत आपूर्ति प्रशाखा दिनारा के सभी मीटर रीडर उपस्थित थे।

पैक्स चुनाव को ले 72 लोगों ने कटवाया एनआर

संझौली(रोहतास) संझौली प्रखंड में पैक्स के चुनाव को लेकर सरगर्मी जोरो पर है। सोमवार की बड़ी संख्या में एनआर कटवाने उम्मीदवार व सदस्य प्रखंड मुख्यालय पहुंचे। इस दौरान बीडीओ प्रभा कुमारी ने बताया की अब तक अध्यक्ष पद के लिए 17 व सदस्य पद के लिए 55 कुल-72 लोगो ने एनआर कटवाया है। अध्यक्ष पद के लिए सामान्य वर्ग के लिए अध्यक्ष पद व सदस्य पद के लिए भी एक हजार रुपये का नामांकन रसीद कटाना होगा। महिलाओं को अध्यक्ष व सदस्य पद के लिए 500 रुपये का ही एनआर कटाना होगा। इसी प्रकार, पिछड़ा वर्ग को अध्यक्ष पद के लिए 500, एससी पुरुष व महिला अध्यक्ष व सदस्य पद के लिए 500 रुपये का एनआर कटाना होगा। उन्होंने बताया कि 13-14 व 16 नवंबर तक नामांकन होगा। इसकी समीक्षा 17-18 व अभीयर्थियता वापसी और प्रतिक आवंटन 20 नवंबर को होगा। वही मतदान तिथि 27 नवंबर को तथा काउंटिंग 28 नवंबर को होगा। मतदाताओं की संख्या पर नजर डाले तो संझौली पंचायत में 2477, मंझौली पंचायत में 3635, करमैनी पंचायत में 1425, चांदी इंग्लिश पंचायत में 1686 व अमेठी पंचायत में 1884 मतदाता है।

नोनहर से दलित परिवार के दो भैसों की हुई चोरी

बिक्रमगंज(रोहतास) : सूर्यपुरा थाना क्षेत्र के नोनहर गांव के एक गौशाला से अज्ञात चोरों ने दो भैस की चोरी कर ली गई है। घटना के संबंध में बताया जाता है कि रविवार की रात में नोनहर गांव में हरिजन कालोनी में स्थित बाबुधन पासी के गौशाला से तीन भैस और एक पाड़ी अज्ञात चोरों द्वारा खोल लिया गया। घटना की जानकारी सुबह में उस समय हुई जब पशुपालक मवेशियों को चारा डालने के लिए गौशाला में गया। पशुपालक ने बताया कि रविवार की शाम सभी मवेशियों को चारा खिलाकर गौशाला में बांधकर सोने के लिए घर चला गया। सुबह में चारा डालने के लिए आया तो सभी मवेशी तीन भैस और एक पाड़ी गायब थी। गायब मवेशियों की खोजबीन शुरू की गई तो एक भैस और पाड़ी बधार में पाई गई। जबकि दो भैस का कोई सुराग नहीं मिल सका है। उन्होंने संभावना व्यक्त की है कि अज्ञात चोरों द्वारा सभी मवेशियों को चोरी की नियत से खोला गया, लेकिन जो कमजोर और कम कीमत की थी। उसे छोड़ दिया। कीमती मवेशियों को लेकर चंपत हो गये है। इस संबंध में सूर्यपुरा पुलिस को सूचना दी गई है। इस घटना से पशुपालक को भारी आर्थिक क्षति हुई है। बताया जाता है कि दोनों मवेशियों की कीमत लगभग एक लाख रुपये से अधिक होगी।

अन्तर विश्वविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता के लिए रवाना हुई कबड्डी टीम

छपरा। जय प्रकाश विश्वविद्यालय की महिला कबड्डी टीम पंडित रवि शंकर शुक्ल विश्विद्यालय, रायपुर में ईस्ट जोन अन्तर्विश्वविद्यालय कबड्डी प्रतियोगिता में भागीदारी हेतु सोमवार को रवाना हुई। 12 सदस्यीय महिला खिलाड़ियों के प्रशिक्षक श्री ऋषिकेश को बनाया गया है जो राज्य स्तरीय प्रशिक्षक हैं। उल्लेखनीय है कि इसी टीम ने हाल में पटना में आयोजित चांसलर ट्राफी में तीसरा स्थान प्राप्त करके विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया था। उसी आत्मविश्वास के साथ टीम अपना पहला मैच वीर वहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर से खेलेगी। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर परमेन्द्र कुमार बाजपेयी, कुलसचिव प्रोफेसर नारायण दास, कुलानुशासक प्रो. विश्वामित्र पांडेय व खेल निदेशक प्रोफेसर राजेश नायक आदि ने खिलाड़ियों को अपनी शुभकामनाएं दी हैं।

ट्रक ने बाइक सवार युवक को कुचला,मौत

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। जिले के आरा-छपरा फोरलेन पर कोईलवर थाना क्षेत्र के झलकू नगर गांव के समीप बेलगाम ट्रक ने बाइक सवार युवक को कुचल दिया। हादसे में वह ट्रक के चक्का के बीच फंस उसकी घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई। वहीं घटना के बाद चालक ट्रक छोड़ मौके से फरार हो गया। घटना को लेकर लोगों के बीच काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही। मिली जानकारी के अनुसार मृतक कोईलवर थाना क्षेत्र के छोटका चंदा गांव निवासी स्व.कुलदीप राय का 36 वर्षीय पुत्र वीर बहादुर राय है। घटना के बाद स्थानीय लोगो का आक्रोश भड़क उठा। जिसके बाद आक्रोशित लोगों ने मुआवजे की मांग को लेकर आरा-छपरा फोर लाइन पर झलकु नगर गांव के समीप सड़क पर उतर गए और शव को सड़क के बीचो-बीच रख सड़क जाम कर दिया। सड़क जाम के दौरान आक्रोशित लोगों द्वारा टायर जलाकर आगजनी भी की गई। आक्रोशित लोगों ने करीब चार घंटे तक आरा-छपरा सड़क को जाम रखा। सड़क जाम होने के कारण सड़क के दोनों तरफ वाहनों की लंबी लाइन लग गई एवं आवागमन पूरी तरह ठप रहा। सड़क जाम की सूचना मिलते ही सदर एसडीपीओ-टू रंजीत कुमार सिंह, कोईलवर थानाध्यक्ष नरोत्तमचंद्र पुलिस बल के साथ वहां पहुंचे और लोगों को समझाने-बुझाने लगे। पुलिस के काफी मशक्कत करने के बाद लोगों को समझा-बूझाकर जाम को हटाया गया। इसके पश्चात पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम सदर अस्पताल में करवाया।

जिला स्तरीय रबी कार्यशाला सह प्रशिक्षण कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

अरवल। कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण (आत्मा), अरवल द्वारा रबी महाभियान-2024 के तहत जिला स्तरीय रबी कर्मशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन संयुक्त कृषि भवन, अरवल के प्रांगण में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ० अनुपमा कुमारी, अपर समाहर्ता, अरवल, जिला कृषि पदाधिकारी-सह-परियोजना निदेशक, आत्मा, अरवल श्री कैलाश नाथ एवं श्री सरफराज असगर, सहायक निदेषक (शष्य), बीज विश्लेषण, बिहार, पटना-सह-नोडल पदाधिकारी, रबी महाभियान, अरवल के द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। मंच का संचालन शिव कुमार गोस्वामी, कृषि समन्वयक के द्वारा किया गया। अपर समाहर्ता, अरवल द्वारा अपने संबोधन में किसानों को खेती के नई तकनीकों को अपनाने की सलाह दी गई। साथ ही अपर समाहर्ता, अरवल एवं अन्य पदाधिकारियों के द्वारा गेहूँ के प्रमाणित

बीज उत्पादन पर चर्चा किया गया। मिट्टी जाँच प्रयोगशाला, अरवल के द्वारा मृदा स्वास्थ्य कार्ड का वितरण अपर समाहर्ता, अरवल के कर कमलों से कराया गया।जिला कृषि पदाधिकारी द्वारा सभी प्रसार कर्मियों को रबी फसल के बीज का पंचायतवार लक्ष्य, उर्वरक का लक्ष्य एवं कृषि यांत्रिकरण योजना से अवगत कराया गया तथा शत्प्रतिशत बीज का उठाव ससमय कराने का निदेश दिया गया। साथ हीं बताया गया कि प्रखण्ड स्तरीय रबी कर्मशाला का आयोजन 13 से 15 नवम्बर, 2024 के बीच जिले के सभी 05 प्रखण्डों में किया जाना है। कृषक बंधु बीज प्राप्त करने हेतु ऑनलाईन आवेदन कर आवश्यकतानुसार बीज प्रतिष्ठान अथवा होम डिलेवरी के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

श्री अमित कुमार, उप परियोजना निदेशक, आत्मा, अरवल के द्वारा बताया गया कि आत्मा द्वारा मोटे अनाज की खेती, सब्जी उत्पादन एवं बीज उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर राज्य के बाहर प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण कराया गया, जिसका भरपूर लाभ कृषक बंधु उठा रहे हैं। डॉ० अनिता कुमारी, वरीय वैज्ञानिक-सह-प्रधान, के०वि० के०, अरवल के द्वारा खरीफ फसलों का अवशेष प्रबंधन, रबी फसलों की बुआई से पूर्व बीजोपचार, गेहूँ के प्रमाणित बीज उत्पादन में बरतने वाली सावधानियों एवं फसलों में लगने वाले कीट व्याधि प्रबंधन पर चर्चा किया गया। श्री मनीष कुमार अनुमण्डल कृषि पदाधिकारी, अरवल के द्वारा बीज उत्पादन योजना के बारे में विस्त त जानकारी दी गई। उक्त कर्मशाला-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम में जिले में कार्यरत सभी प्रखण्ड कृषि पदाधिकरी,प्रखण्ड उद्यान पदाधिकारी, प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, सभी कृषि समन्वयक, सहायक तकनीकी प्रबंधक, किसान सलाहकार एवं सभी अधिकृत बीज विक्रेता (बी.आर.बी.एन.) ने भाग लिया। कार्यक्रम में श्री उपेन्द्र कुमार, सहायक निदेशक (शष्य) भूमि संरक्षण, श्री जय नाथ कुमार झा,अग्रणी बैंक प्रबंधक, जिला गव्य विकास पदाधिकारी, पशुपालन पदाधिकारी, मत्स्य प्रसार पदाधिकारी एवं अन्य कृषि कर्मी उपस्थित रहे।

कृति सेनन ने तेरे इश्क में के लिए शुरू कीं तैयारियां

बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सेनन इन दिनों दो पत्ती में अपनी अदाकारी के लिए मिल रही सराहना का लुत्फ उठा रही हैं। इस थ्रिलर फिल्म में कृति अभिनेत्री काजोल के साथ नजर आई हैं। वहीं, अब बीच अब कृति को लेकर नई जानकारी सामने आई है, जो उनकी नई फिल्म से जुड़ी हुई है। दरअसल, कृति सेनन साउथ सुपरस्टार धनुष के साथ फिल्म तेरे इश्क में नजर आएंगी। अब इस फिल्म को लेकर दिलचस्प अपडेट सामने आया है।

कृति ने फिल्म पर शुरू किया काम

आनंद एल राय द्वारा निर्देशित तेरे इश्क में फिल्म के लिए कृति सेनन बेहद उत्साहित हैं। तेरे इश्क में वह धनुष के साथ स्क्रीन स्पेस साझा करेंगी। इस नई जोड़ी को पर्दे पर देखने के लिए प्रशंसक भी उत्साहित हैं। वहीं, अब खबर आई है कि कृति सेनन ने इस फिल्म के लिए अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं।

किरदार पर गौर फरमा रहीं कृति

फिल्म का निर्माण अक्तूबर 2024 में शुरू होना था और 2025 में इसे सिनेमाघरों में रिलीज करने की योजना थी, इसलिए तेरे इश्क में का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है। हिमांशु शर्मा और नीरज यादव द्वारा लिखित इस फिल्म का निर्माण कलर येलो प्रोडक्शंस के बैनर तले किया जा रहा है। अब कृति अपनी किरदार के लिए खास तैयारियों में जुटी हुई हैं।

रांझणा के बाद फिर साथ काम कर रहे अभिनेता-निर्देशक

2013 में रांझणा की सफलता के बाद निर्देशक आनंद एल राय और अभिनेता धनुष एक बार फिर तेरे इश्क में नाम की एक और रोमांटिक फिल्म के लिए साथ आए हैं। एक साल पहले एक विशेष वीडियो के साथ इसकी घोषणा की गई थी। कृति सेनन और धनुष दोनों पहले भी निर्देशक आनंद एल राय के साथ अलग-अलग फिल्मों में काम कर चुके हैं। बताया जा रहा है कि फिल्म एआर रहमान की म्यूजिकल होगी, जिसके बोल इरशाद कामिल द्वारा लिखे जाएंगे। कृति सेनन ने कुछ महीने पहले आनंद एल राय से कहानी सुनी थी और इस एक्शन लव स्टोरी की दुनिया में उतरने में दिलचस्पी दिखाई है। कहानी के अलावा, अभिनेत्री को अपने किरदार का आर्क और कहानी में उसके बदलने का तरीका भी पसंद आया है। यह फिल्म फिल्म 2025 में रिलीज होगी।

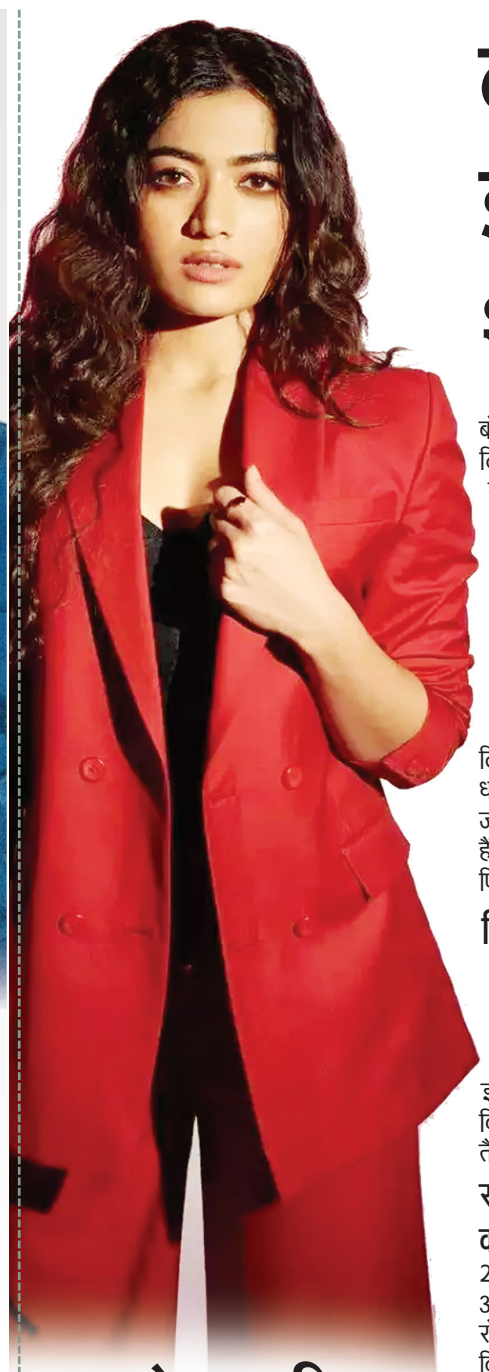

लोकेश कनगराज ने उठाया कुली की रिलीज डेट से पर्दा, फिल्म में आमिर खान के कैमियो पर भी तोड़ी चुप्पी

साउथ फिल्म निर्देशक लोकेश कनगराज इन दिनों अपनी आगामी बहुप्रतीक्षित फिल्म कुली पर काम कर रहे हैं। फिल्म में सुपरस्टार रजनीकांत मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। इस बीच अब लोकेश ने अपनी फिल्म की रिलीज की तैयारियों पर बात की। साथ ही कुली को लेकर दिलचस्प अपडेट भी साझा किया है।

अगले साल रिलीज होगी फिल्म

सुपरस्टार रजनीकांत अभिनीत बहुप्रतीक्षित फिल्म कुली की शूटिंग इन दिनों चेन्नई में चल रही है। निर्देशक लोकेश कनगराज ने हाल ही में बताया कि फिल्म 2025 की गर्मियों में रिलीज होगी। उन्होंने यह भी बताया कि शूटिंग 2025 की शुरुआत तक पूरी होने की उम्मीद है। निर्देशक ने सेट पर रजनीकांत के समर्पण और पेशेवर रवैये की प्रशंसा की, उनकी समय की पाबंदी और तैयारी को उनकी निरंतर सफलता की कुंजी बताया।

आमिर खान के कैमियो पर दी जानकारी

कुली को एक आदर्श अखिल भारतीय फिल्म बताते हुए कनगराज ने वादा किया कि यह एक अभूतपूर्व एक्शन ड्रामा होगी, जो दर्शकों को आश्चर्यचकित कर देगी। उन्होंने पुष्टि की कि यह फिल्म किसी भी फ्रेंचाइजी का हिस्सा नहीं है। निर्देशक ने फिल्म में आमिर खान के कैमियो के बारे में अफवाहों पर भी टिप्पणी की और कहा कि आधिकारिक घोषणा प्रोडक्शन हाउस की ओर से की जानी चाहिए। इस बयान से प्रशंसकों में आमिर खान की संभावित संलिप्तता को लेकर शक की स्थिति पैदा हो गई है।

एलयूसी पर भी दिया अपडेट

कुली के अलावा कनगराज ने लोकेश सिनेमैटिक यूनिवर्स के लिए अपनी योजनाएं भी साझा कीं। उन्होंने बताया कि उनका अगला निर्देशन कैथी 2 होगा, जिसका निर्माण अगस्त 2025 में शुरू होने की संभावना है। निर्देशक ने भविष्य में आमिर खान के साथ संभावित सहयोग का भी उल्लेख किया और कहा कि यदि सब कुछ ठीक रहा तो वह निश्चित रूप से उनके साथ काम करेंगे।

धनुष के साथ फिल्म कुबेर में नजर आएंगी रश्मिका मंदाना

साउथ सुपरस्टार धनुष और अभिनेत्री रश्मिका मंदाना इन दिनों कुबेर को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। फिल्म का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। शेखर कम्मुला द्वारा निर्देशित कुबेर धनुष और सुपरस्टार नागार्जुन के बीच पहला सहयोग है। फिल्म में रश्मिका मंदाना मुख्य नायिका की भूमिका में हैं। रश्मिका के किरदार की झलक पहले ही जारी हो चुकी है, जिसे देख दर्शक उत्साहित हो गए थे। वहीं, अब दर्शकों के इस उत्साह को बढ़ाने के लिए निर्माताओं ने फिल्म से रश्मिका का नया पोस्टर जारी किया है। शेखर कम्मुला की आगामी फिल्म कुबेर के निर्माताओं ने मुख्य अभिनेत्री रश्मिका मंदाना का नया पोस्टर जारी किया है। पोस्टर में मंदाना मुंबई के बांद्रा-वर्ली सी लिंक ब्रिज की पृष्ठभूमि में मुस्कुराते हुए खड़ी हैं। उनके पहनावे से पता चलता है कि वह एक जमीनी जीवन जीने वाले किरदार को निभा रही हैं और उनके कंधों पर लटका बैग उनकी यात्रा के रोमांच की ओर इशारा करता है।

इस दिन जारी होगा फिल्म का टीजर

इससे पहले निर्माताओं ने प्रशंसकों को दिवाली की शुभकामनाएं देते हुए घोषणा पोस्ट साझा किया था, जिसमें टीजर रिलीज के बारे में जानकारी दी गई थी। पोस्ट में लिखा था, शेखर कम्मुला की कुबेर की ओर से आपको शानदार दिवाली की शुभकामनाएं। इंतजार लगभग खत्म हो गया है।

शेखर-धनुष की पहली फिल्म

सुनील नारंग और पुष्कर राम मोहन राव द्वारा निर्मित कुबेर में संगीत देवी श्री प्रसाद ने दिया है और सिनेमैटोग्राफी निकेथ बोम्मी ने की है। प्रोडक्शन डिजाइनर रामकृष्ण सब्बानी और मोनिका निगोत्रे तकनीकी दल का हिस्सा हैं। इस फिल्म के जरिए निर्देशक शेखर कम्मुला और धनुष पहली बार साथ काम कर रहे हैं। कुबेर शेखर कम्मुला द्वारा निर्देशित एक बहुभाषी फिल्म है।

शादी में जरूर आना की रिलीज के सात साल पूरे, कृति खरबंदा ने खास अंदाज में मनाया जश्न

फिल्म शादी में जरूर आना भले ही व्यवसायिक रूप से सफल न रही हो, लेकिन बाद में इस फिल्म को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। सोशल मीडिया पर इस फिल्म से जुड़े क्लिप्स समय-समय पर लोगों का ध्यान आकर्षित करते रहते हैं। इस फिल्म ने आज अपनी रिलीज के सात साल पूरे कर लिए हैं। फिल्म की मुख्य अभिनेत्री कृति खरबंदा ने इस जश्न को खास अंदाज में मनाया है। उन्होंने फिल्म की सातवीं वर्षगांठ पर सोशल मीडिया पर फिल्म से जुड़ी यादें फैंस के साथ साझा कीं। इन पर्दे के पीछे की दृश्यों के साथ उन्होंने पोस्ट में फिल्म के समय को याद किया और प्रशंसकों के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। अपनी पोस्ट में कृति ने लिखा, सबसे अद्भुत टीम और इसके संगीत के जादू के 7 साल! अभी तक यह प्यार जारी रखने के लिए आप सभी का धन्यवाद। मैं हमेशा आभारी रहूंगी। बता दें कि यह फिल्म साल 2017 में रिलीज हुई थी। फिल्म अपनी आकर्षक कहानी और कलाकारों के यादगार अभिनय से दर्शकों के दिलों पर अब तक छाई हुई है।

धार्मिक फिल्में करने को लेकर रोहित शेट्टी ने दी प्रतिक्रिया

बॉलीवुड की पावर जोड़ी अजय देवगन और रोहित शेट्टी वर्तमान में सिंघम अगेन की सफलता का लुत्फ उठा रहे हैं। एक साक्षात्कार के दौरान दोनों ने खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि समय तेजी से बदल गया और दर्शकों की संवेदनशीलता के कारण और धार्मिक फिल्में बनाना मुश्किल हो गया है। दोनों से जब यह पूछा गया कि वे साथ में धार्मिक फिल्म बनाएंगे तो रोहित शेट्टी ने कहा कि वह अभी इसपर निश्चित नहीं हैं, क्योंकि यह एक मार्मिक विषय है। फिल्म निर्देशक रोहित शेट्टी ने कहा, जब आज कोई धार्मिक फिल्म चल रही हो तो आप नहीं जानते कि कौन किस बात पर आपत्ति उठाएगा। किसे क्या बुरा लगे, बहुत परेशानी है। उन्होंने उदाहरण के तौर पर शोले फिल्म का जिक्र करते हुए कहा, शोले में एक सीन है, जहां धर्मेंद्र भगवान शिव की मूर्ति के पीछे खड़े हैं और उनकी आवाज में बोल रहे हैं। आज वो सीन नहीं कर सकते हैं। साक्षात्कार के दौरान रोहित और अजय ने रामायण पर भी खुल कर बात की। रोहित शेट्टी ने कहा, अगर लोगों को यह आपत्तिजनक लगता तो रामायण का एंगल उल्टा पड़ सकता था। हमने बहुत ही नेक इरादे से इसे अपनी कहानी में शामिल किया, इसलिए लोगों को भी यह पसंद आया और वे इसे कहानी से जोड़ सके। अगर इरादे नेक हो तो इसमें कोई परेशानी नहीं होती।

धनुष निर्देशित इडली कढ़ाई इस दिन होगी रिलीज, अभिनेता ने साझा किया फिल्म का पोस्टर

तमिल अभिनेता धनुष अपनी निर्देशित फिल्म इडली कढ़ाई के साथ बड़े पर्दे पर नजर आने वाले हैं। यह धनुष की निर्देशित चौथी फिल्म है। फिल्म में नित्या मेनन सह-भूमिका में नजर आने वाली हैं। फिल्म का शानदार पोस्टर साझा करते हुए धनुष ने फिल्म की रिलीज को लेकर घोषणा की है। उन्होंने बताया कि यह फिल्म 10 अप्रैल, 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म के पोस्टर को उनके प्रशंसक काफी पसंद कर रहे हैं। इससे पहले भी धनुष फिल्म को कुछ पोस्टर साझा कर चुके हैं।

प्रशंसकों ने की फिल्म की तारीफ

धनुष निर्देशित ये फिल्म तमिल भाषा में रिलीज होगी। अभिनेता धनुष ने अपनी फिल्म को लेकर जैसी ही घोषणा की, प्रशंसकों ने इस फिल्म को तेलुगू में रिलीज करने की मांग की। धनुष के प्रशंसक इस फिल्म को देखने के लिए बेहद उत्साहित हैं। धनुष इस पोस्टर में एक झोपड़ी की ओर जाते नजर आ रहे हैं। नीलावुकु एन मेल एन्नाडी कोबाम का भी निर्देशन किया

प्रियंका, धनुष के निर्देशन वाली तीसरी फिल्म नीलावुकु एन मेल एन्नाडी कोबाम में नजर आएंगी। इस फिल्म से अभिनेत्री प्रियंका मोहन का पहला सिंगल गोल्डन स्पैरो अब यूट्यूब पर 50 मिलियन से अधिक व्यूज के साथ धूम मचा रहा है। अब अभिनेत्री ने खुलासा करते हुए बताया है कि कैसे उन्हें ये गाना मिला।

कुबेर को लेकर भी चर्चा में हैं अभिनेता

साउथ सुपरस्टार धनुष इन दिनों फिल्म कुबेर को लेकर चर्चा में बने हुए हैं। शेखर कम्मुला द्वारा निर्देशित कुबेर धनुष और सुपरस्टार नागार्जुन के बीच पहला सहयोग है। फिल्म में रश्मिका मंदाना मुख्य नायिका की भूमिका में हैं। फिल्म का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। निर्माताओं का लक्ष्य 2025 की पहली तिमाही में फिल्म को रिलीज करना है।

मैं दूसरे एक्टर्स की फिल्में देखकर नेगेटिव और बुरा बनने लगा था सोने के लिए यूट्यूब शॉर्ट्स देखता

अर्जुन कपूर की हालिया रिलीज पुलिस ड्रामा फिल्म सिंघम अगेन इन दिनों सिनेमाघरों में परफॉर्म करने के लिए जी जान से जुटी है। अर्जुन कपूर इस फिल्म में नेगेटिव रोल में दिखे हैं और उन्होंने बताया कि जब उन्होंने यह फिल्म साइन की थी, तब वे प्रफेशनली और पर्सनली भी काफी कमज़ोर स्थिति में थे। अर्जुन ने बातचीत में अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर काफी सारी बातें कही।

उन्होंने कहा, मैं फिल्में देखकर उसे इंजॉय करना छोड़ दिया था। और सिर्फ मैं ही ये जानता हूं। मेरी ज़िंदगी बस फिल्मों के ही इर्द-गिर्द रही है। अचानक, मैं दूसरे लोगों का काम देखता और सोचता- क्या मैं ये कर पाऊंगा? क्या मुझे मौका मिलेगा?

मैं ऐसा शख्स बन गया जो सोने के लिए यूट्यूब शॉर्ट्स देखता था

उन्होंने कहा, और मैं कभी भी बुरा या ने नेगेटिव इंसान नहीं था, लेकिन यह मेरे अंदर बहुत ही अजीब तरीके से पनपने लगा। मेरी विश लिस्ट लगातार लंबी होती जा रही थी। मैं ऐसा शख्स बन गया जो सोने के लिए शॉर्ट्स देखता था। यह सही नहीं था। प्रफेशन में सीखने का एकमात्र तरीका देखना, बातचीत करना, खुला होना और लचीला होना है। मैंने फिर से फिल्मों से जुड़ना शुरू कर दिया उन्होंने बताया कि कैसे उन्होंने अपनी अब तक की सबसे बड़ी फिल्म सिंघम अगेन की, जबकि सच ये है कि उन्हें फिल्मों से प्यार नहीं था। मई में फिल्म की शूटिंग खत्म करने के बाद, उन्होंने सिनेमा से फिर से जुड़ना शुरू कर दिया। अर्जुन ने कहा, मैंने फिर से फिल्मों से जुड़ना शुरू कर दिया, मैंने फिर से शोज़ से जुड़ना शुरू कर दिया और मैं फिर से खुद से जुड़ गया ताकि मैं बहुत खुश रह सकूं। मुझे खुश रहना बहुत मुश्किल लग रहा था।

पेंडिंग सीज़न को देखते हुए धीरे-धीरे देखना शुरू किया

उन्होंने हुलु के क्राइम कॉमेडी शो ओनली मर्डर्स इन द बिल्डिंग के लंबे समय से पेंडिंग सीज़न को देखते हुए धीरे-धीरे देखना शुरू किया। उन्होंने विदेश में अकेले मैड मैक्स- फ्यूरियोसा भी देखा, जिसने उन्हें याद दिलाया कि उन्हें पहली बार फिल्मों से प्यार क्यों हुआ था। अर्जुन डेंजर लंका की भूमिका निभा रहे हैं सिंघम अगेन में अर्जुन डेंजर लंका की भूमिका निभा रहे हैं, जो फिल्म के लीड विलन हैं। उन्हें रामायण के आधुनिक युग के रावण के रूप में पेश किया गया है, जिसका मुकाबला अजय देवगन से हुआ है, जिन्हें भगवान राम के रूप में पेश किया गया है। फिल्म में करीना कपूर, दीपिका पादुकोण, रणवीर सिंह, टाइगर श्रॉफ, जैकी श्रॉफ, अक्षय कुमार, रवि किशन और श्वेता तिवारी जैसे कलाकार भी हैं। रिलीज के 6 दिनों के भीतर इसने घरेलू बॉक्स ऑफिस पर 164 रुपये की कमाई की है।

ऋषभ शेट्टी के बाद जय हनुमान में हुई राणा दग्गुबाती की एंट्री, फिल्म को लेकर फैंस उत्साहित

इस साल की शुरुआत में संक्रांति के दौरान सुपरहिट फिल्म देने वाले निर्देशक प्रशांत वर्मा ने हनुमान के सिक्वल जय हनुमान की घोषणा की। इस फिल्म में कन्नड़ स्टार ऋषभ शेट्टी और राणा दग्गुबाती भी काम कर रहे हैं। फिल्म निर्देशक ने दोनों अभिनेताओं के साथ तस्वीरें शेयर करते हुए आने वाली फिल्म को लेकर अपनी उत्सुकता व्यक्त की। उन्होंने पोस्ट में भी लिखा- जय जय हनुमान। इस फिल्म में राणा दग्गुबाती की भूमिका के बारे में जानने के लिए फैंस उत्साहित हैं। हाल ही में सोशल मीडिया पोस्ट पर प्रशांत वर्मा ने खुलासा किया था कि कंतारा में शानदार अभिनय करने वाले ऋषभ शेट्टी भगवान हनुमान के रुप में अपनी भूमिका निभाएंगे। जय हनुमान के लिए ऋषभ का पहला लुक पहले ही रिलीज हो गया है, जिसमें भगवान हनुमान ने भगवान राम की मूर्ति पकड़ रखी है। फैंस अब राणा दग्गुबाती के किरदार के बारे में जानने के लिए उत्सुक हैं। हनुमान स्टार तेजा सज्जा ने मजाकिया अंदाज में कमेंट किया, अभी वहीं रुको, मैं रास्ते में ही हूं। बता दें कि जय हनुमान के लिए बाकी क्रू और कलाकारों के बारे में अभी तक जानकारी नहीं दी गई है।

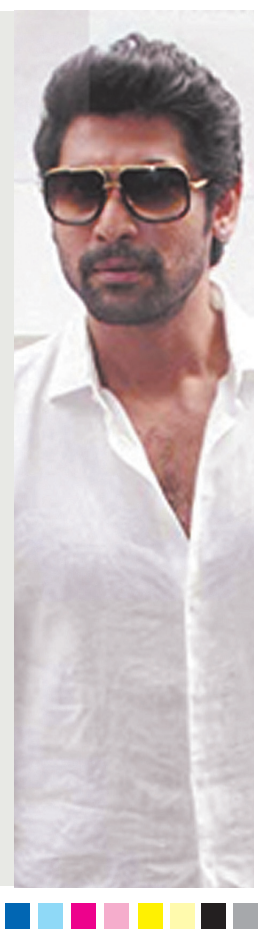

संक्षिप्त समाचार

शेरा एनर्जी ने वित्त वर्ष 25 की प्रथम छमाही में कर बाद लाभ में 57 प्रतिशत वृद्धि की रिपोर्ट दी

मुंबई, एजेंसी। नॉन फेरस मेटल से निर्मित वाइंडिंग वायर्स और स्ट्रिप्स के निर्माण के बिजनेस में लगी हुई, शेरा एनर्जी लिमिटेड वित्त वर्ष 25 की प्रथम छमाही के अपने अनआडिटेड वित्तीय परिणामों की घोषणा की है. शेरा एनर्जी लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर, श्री नसीम शेख ने कहा, शेरा एनर्जी में वित्त वर्ष 25 की प्रथम छमाही जांबिया में हमारा प्रथम अफ्रीकन निर्यात ऑर्डर प्राप्त होने और हमारे प्रोडक्शन क्षमता के व्यूहात्मक विस्तार सहित उल्लेखनीय उपलब्धियां द्वारा रेखांकित की गई है. ये कदम क्वालिटी और टिकाऊ ग्रोथ के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं, जिससे हम दोनों घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में नए सुअवसरों को कैप्चर करने की स्थिति में आए है. हमारे पूर्ण स्वामित्व की सब्सिडियरी राजपूताना इंडस्ट्रीज जो अब पब्लिकली लिस्टेड कंपनी है, हमारी बाजार उपस्थित की फिर से पुष्टि करते हुए हमारे फुटप्रिंट को बढ़ाती है. व्यूहात्मक भागीदारियों के बढ़ते पोर्टफोलियो के साथ, हम विभिन्न क्षेत्रों और भौगोलिक क्षेत्र में उभरते सुअवसरों का दोहन करने के लिए बेहतर स्थिति में है. आगे देखने पर मुझे शेरा एनर्जी की ग्रोथ ट्रांजैक्ट्री में विश्वास है. हमारे विस्तारों, बढ़ी क्षमता और बढ़ी भागीदारी से ग्लोबल नॉन फ़ेरस मेटल उद्योग में एक लीडर बनने के हमारे विजन को सपोर्ट मिलता है. इनोवेशन, क्वालिटी और परिचालन उत्कृष्टता पर फोकस के साथ हम बाजार की उभरती मांग को पूरा करने और हमारे स्टेकधारकों को लास्टिंग वैल्यू डिलीवर करने के लिए तैयार है. भविष्य में भारी संभावना है और हम टिकाऊ ग्रोथ और उद्योग लीडरशिप के लिए इस मोमेंटम पर निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध है.

राजपूताना इंडस्ट्रीज ने ने 81 प्रतिशत ग्रोथ के साथ 258 करोड की कुल आय अर्जित की

मुंबई, एजेंसी। कॉपर, अल्युमिनियम, ब्रास और विभिन्न अलॉयस से निर्मित प्रोडक्ट में सुविज्ञता रखने वाली नान फेरस मेटल रीसाइकलिंग के क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी, राजपूताना इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने वित्त वर्ष 25 की प्रथम छमाही के अपने अनआडिटेड वित्तीय परिणामों की घोषणा की है. प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए, राजपूताना इंडस्ट्रीज लिमिटेड की चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर, श्रीमती शिवानी शेख ने कहा, वित्त वर्ष 25 की हमारे प्रथम छमाही का परिणाम नॉन मेटल रीसाइकलिंग क्षेत्र में राजपूताना इंडस्ट्रीज की मजबूत स्थिति की फिर से पुष्टि करते हुए पब्लिकली लिस्टेड कंपनी के तौर पर एक अपवादात्मक शुरुआत को दर्शाता है. यह सकारात्मक वित्तीय प्रदर्शन हमारी टीम की प्रतिबद्धता और समर्पण द्वारा चालित हमारे व्यूहात्मक अप्रोच और ऑपरेशनल लचीलेपन पर रोशनी डालता है. गौरतलब है कि हमने इस प्रथम छमाही में हाई कास्ट डेट में उल्लेखनीय कमी की है, जिससे हमारा वित्तीय फाउंडेशन मजबूत होता है तथा हमारे टिकाऊ ग्रोथ उद्देश्यों के अनुरूप ये प्रयास जिम्मेदार बिजनेस पद्धतियों पर हमारे फोकस पर जोर देता है, जो हमारे दीर्घकालीन विजन पर केंद्रित बने हुए हैं. आगे देखने पर, हम दूसरी छमाही में हमारे ऑपरेशन को बढ़ाने के तौर पर दोनों टॉप लाइन और बॉटम लाइन में सुधार के साथ जोरदार प्रदर्शन की उम्मीद करते हैं, हमारे हाल के केबल प्लांट विस्तार ने इस अवधि में मैनपॉवर कास्ट में वृद्धि करते समय अभी तक अपना पूर्ण आय प्रभाव नहीं दर्शाया है

बजट- खुदरा महंगाई 14 माह में सबसे अधिक रहने की आशंका! अक्टूबर में 6 प्रतिशत के पार जाने का अनुमान, अभी राहत नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी। खाने-पीने की वस्तुओं की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी और उच्च आधार प्रभाव के खत्म होने से अक्टूबर, 2024 में खुदरा महंगाई एक बार फिर आरबीआई के तय दायरे से बाहर निकलकर 6 फीसदी के पार पहुंच सकती है। अगर ऐसा हुआ तो इससे न सिर्फ आम आदमी के घर का बजट बिगड़ जाएगा, बल्कि रेपो दर में हालिया कटौती की संभावनाएं भी धूमिल हो जाएंगी।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की ताजा रिपोर्ट में दावा किया गया है कि उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) महंगाई अक्तूबर में बढ़कर 6.15 फीसदी के स्तर पर पहुंच जाएगी। यह अगस्त, 2023 के बाद इसका 14 महीने का उच्च स्तर होगा। उस समय खुदरा महंगाई 6.83 फीसदी रही थी, जबकि जुलाई, 2023 में बढ़कर 15 महीने के उच्च स्तर 7.44 फीसदी पर पहुंच गई थी।

खाद्य कीमतों में वृद्धि के कारण खुदरा महंगाई सितंबर में भी बढ़कर 9 महीने के उच्च स्तर 5.49 फीसदी पर पहुंच गई थी, जबकि अगस्त में यह 3.65 फीसदी रही थी। इस दौरान खाद्य वस्तुओं की महंगाई दर भी अगस्त के 5.66 फीसदी से बढ़कर सितंबर में 9.24 फीसदी के स्तर पर पहुंच गई थी।

सब्जियां और खाद्य तेल में उछाल

रिपोर्ट के मुताबिक, सितंबर के बाद अक्तूबर में भी खाद्य वस्तुओं की कीमतों में उछाल आया है। इसकी मुख्य वजह सब्जियां और खाद्य तेल हैं। देश में नीति निर्माताओं के लिए खाद्य कीमतें अब भी एक चुनौती बनी हुई हैं, जो खुदरा महंगाई को स्थायी तौर पर चार फीसदी तक लाना चाहते हैं। खाद्य आपूर्ति में व्यवधान (अगर कोई हो), खाद्य तेलों पर आयातित मूल्य दबाव और डोनाल्ड ट्रंप की अगुवाई वाली सरकार में व्यापार शुल्क वृद्धि के प्रभाव जैसे कारकों से महंगाई पर जोखिम बना हुआ है। इन पर कड़ी नजर रखने की जरूरत है।

मार्च तिमाही में मिल सकती है राहत

रिपोर्ट में कहा गया है कि सबकी निगाहें खरीफ सीजन में कटाई और रबी फसल की बुवाई की प्रगति पर होंगी। सबकुछ ठीक रहा तो चालू वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही यानी जनवरी-मार्च तक खाद्य महंगाई में कमी आने की उम्मीद है।

दिसंबर में भी नहीं घटेगी रेपो दर

आरबीआई ने मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) की पिछली बैठक में भी अक्तूबर में महंगाई को लेकर चिंता जताई गई है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास भी हाल ही में अक्तूबर में खुदरा महंगाई के और तेजी से बढ़ने का संकेत दे चुके हैं। साथ ही, स्पष्ट कहा था कि दिसंबर के पहले सप्ताह में एमपीसी की होने वाली बैठक में दो साल से यथावत रेपो दर में कोई कटौती नहीं होगी। -यूनियन बैंक की रिपोर्ट में रेपो दर में फरवरी, 2025 से 50 आधार अंकों की कटौती का चक्र शुरू होने का संकेत दिया गया है।

टमाटर के दाम 120 फीसदी बढ़े

क्रिसिल का हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, अक्तूबर में टमाटर की कीमतें एक साल पहले की समान अवधि के 29 रुपये से 120.68 फीसदी बढ़कर 64 रुपये प्रति किलोग्राम पहुंच गई है। बारिश के कारण टमाटर की आवक प्रभावित हुई है। प्याज की कीमतें सालाना आधार पर 46 फीसदी बढ़ी हैं। आलू की कीमतों में 51 फीसदी की तेजी दर्ज की गई है।

दिव्यांगों को मिलेंगी और बेहतर सुविधाएं, लतिका और एचएबी फार्मास्यूटिकल्स की साझेदारी से मिशन होगा मजबूत

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में करीब 40-90 मिलियन (चार से नौ करोड़) लोग किसी न किसी कारणवश दिव्यांग हैं। दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार यानी आपी2डी अधिनियम, 2016 में 21 प्रकार के दिव्यांगों को सूचीबद्ध किया गया है, जिनमें बौद्धिक विकलांगता, दृश्य हानि, श्रवण हानि, चलने-फिरने में अक्षमता, बोलने की समस्या, सेरेब्रल पाल्सी (मस्तिष्क पक्षाघात) और बौनापन शामिल है। ये सभी स्थितियां क्वालिटी ऑफ लाइफ को प्रभावित करने वाली हो सकती हैं।

ऐसे लोगों को सशक्त बनाने और दिव्यांगों के जीवन को सुलभ बनाने के लिए गैर-लाभकारी संगठन (एनजीओ) लतिका निरंतर काम कर रही है। हाल ही में लतिका ने एचएबी फार्मास्यूटिकल्स के साथ साझेदारी की है ताकि दिव्यांगों के लिए और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकें। एचएबी फार्मास्यूटिकल्स ने लतिका एनजीओ के सेंटर ऑफ इंफ्लूयंस एंड इंक्ल्यूजन के लिए पूरी तरह से सुसज्जित डॉक्टर्स रूम तैयार किया है। इस बारे में लतिका के एक सदस्य ने कहा, हम इस

समर्थन के लिए एचएबी फार्मास्यूटिकल्स के बहुत आभारी हैं। ये योगदान हमें दिव्यांगों को सुलभ वातावरण में आवश्यक चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने में काफी मदद करेगा। इसका दिव्यांगजनों और उनके परिवार के जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ेगा। गौरतलब है कि लतिका का सेंटर ऑफ इंफ्लूयंस एंड इंक्ल्यूजन विकलांग बच्चों और वयस्कों तथा उनके परिवारों को बचपन से लेकर बुढ़ापे तक सेवाएं प्रदान करता है। एचएबी फार्मास्यूटिकल्स के इस सहयोग से मिशन को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। एचएबी फार्मा एक अग्रणी दवा कंपनी है, जो देहरादून और वसई में स्थित है। ये जाइडस और एल्केम सहित कई प्रतिष्ठित कंपनियों के लिए दवा निर्माण करती है।

12 नवंबर को बंद रहेंगे सभी बैंक

नईदिल्ली, एजेंसी। देश में सभी बैंक कल मंगलवार को बंद रहेंगे। 12 नवंबर को सभी पब्लिक और प्राइवेट सेक्टर बैंक बंद रहने वाले हैं। ईगास-बग्वाल के कारण देश के कुछ राज्यों में बैंक बंद रहने वाले हैं। ऐसे में ग्राहकों को बैंक छुट्टी को ध्यान में रखकर अपना काम निपटाना होगा। यहां उन राज्यों की लिस्ट दी है जहां मंगलवार को बैंक बंद रहेंगे। चेक करें आरबीआई ने क्यों दी है छुट्टी।

मंगलवार 12 नवंबर को उत्तराखंड में सभी बैंक बंद रहने वाले हैं। उत्तराखंड में 12 नवंबर को ईगास-बग्वाल त्योहार मनाया जाएगा। ईगास, जिसे बग्वाल भी कहा जाता है, उत्तराखंड का एक पारंपरिक त्योहार है। ईगास बग्वाल दिवाली के 11 दिन बाद मनाया जाता है। यह पर्व विशेष रूप से गढ़वाल क्षेत्र में धूमधाम से मनाया जाता है और इसके साथ कई लोक परंपराएं जुड़ी हुई हैं। माना जाता है कि भगवान राम के अयोध्या लौटने की सूचना पहाड़ों में थोड़ी देरी से मिली थी, इसलिए स्थानीय लोग दिवाली के कुछ दिन बाद इसे दीप पर्व के रूप में मनाते हैं। इस दिन घरों और मंदिरों में दीप जलाए जाते हैं, भक्ति गीत गाए जाते हैं और भैलो खेला जाता है, जो लकड़ी की मशाल जलाकर मनाए जाने वाला एक पारंपरिक खेल है। ईगास-बग्वाल के दिन ग्रामीण इलाकों में विशेष पकवान बनाए जाते हैं, जैसे कि उरद की पकोड़ी, भट के पकौड़े और कई तरह की मिठाइयां। इस दिन सामूहिक नृत्य, गीत-संगीत और लोक नाट्य का आयोजन भी होता है, जिसमें स्थानीय लोग पारंपरिक परिधानों में सजधज कर भाग लेते हैं। उत्तराखंड सरकार ने इस पर्व की महत्ता को समझते हुए राज्य में इसे सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है, ताकि लोग अपनी सांस्कृतिक धरोहर को मनाने के लिए अपने गांव और परिवारों में जा सकें। ईगास-बग्वाल केवल एक त्योहार नहीं है, बल्कि यह उत्तराखंड के लोगों की संस्कृति और परंपरा का प्रतीक है, जो उन्हें अपनी जड़ों से जोड़े रखता है।

यहां खुले रहेंगे बैंक

उत्तराखंड के अलावा देश के अन्य राज्यों में बैंक खुले रहेंगे। हालांकि, बैंक बंद होने के बावजूद लोग इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग और एटीएम के जरिए फाइनेंशियल ट्रांजेक्शन कर सकेंगे।

नारियल ने बदल दी किस्मत, नौकरी छोड़कर शुरू किया कारोबार, आज सालाना करोड़ों रुपये की कमाई

नई दिल्ली, एजेंसी। केरल की सुमिला जयराज ने कभी नहीं सोचा था कि नारियल का कारोबार उनकी किस्मत बदल कर रख देगा। कभी नौकरी करने वालीं सुमिला आज नारियल के बने कई प्रोडक्ट बनाती हैं। इनकी ग्रीनौरा इंटरनेशनल नाम की कंपनी दुनियाभर में इनके प्रोडक्ट बेचती है। अपने कारोबार से सुमिला का रेवेन्यू सालाना करोड़ों रुपये है।

केरल के त्रिशूर की रहने वालीं सुमिला ने कभी नहीं सोचा था कि वह नारियल के कारोबार में उतरेंगी। सुमिला अपनी शादी के बाद मुंबई चली गई थीं। कुछ समय बाद ही वह जुड़वा बच्चों की मां बन गईं। उनका पूरा समय घर और बच्चों की देखभाल में निकल जाता था। 6 साल बाद उनके पति काम के सिलसिले में दुबई चले गए। बच्चे पढ़ाई में व्यस्त हो गए। ऐसे में उन्होंने जॉब करने के बारे में सोचा। सुमिला ने जब तय कर लिया कि वह नौकरी करेंगी तो वह वापस केरल आ गईं। यहां उन्होंने वर्जिन नारियल तेल बनाने वाली एक कंपनी में नौकरी शुरू कर दी। वह यहां ग्राहकों की कॉल अटेंड करती थीं और ईमेल आदि का काम देखती थीं। यहां जॉब करते हुए उन्हें वर्जिन नारियल तेल के कारोबार में दिलचस्पी पैदा हुई।

निवेश मंत्रः छोटे शहरों की जमीन में निवेश पर बेहतर रिटर्न; उप्र में उत्तम अवसर, महाराष्ट्र-गोवा में 36 प्रतिशत तक फायदा

नई दिल्ली, एजेंसी। देश के बड़े शहरों में जमीनों के भाव इतने ऊपर चले गए हैं कि उनमें तेजी की गुंजाइश कम है। एक तो इन शहरों में साफ टाइटल वाली जगह मिलना भी मुश्किल है। दूसरा, इन शहरों में जमीनें इतनी महंगी होती हैं कि उसे खरीदना भी कठिन है। ऐसे में उन छोटे शहरों में जमीनें खरीदने में बेहतर रिटर्न मिल सकता है, जहां पर अभी धार्मिक, इन्फ्रास्ट्रक्चर, हिल स्टेशन, पर्यटन, नए कारोबारी केंद्र या फिर कोई महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट आ रहे हैं। उदाहरण के तौर, पर मुंबई से अहमदाबाद बुलेट ट्रेन की घोषणा के बाद जमीनों के भाव आसमान पर पहुंच गए हैं। हालांकि, बुलेट ट्रेन के शुरू होने में अभी बहुत समय है।

उत्तर प्रदेश अन्य राज्यों की तुलना में आकर्षण का केंद्र है। यहां धार्मिक, पर्यटन और नए कारोबारी केंद्रों के साथ बुनियादी ढांचे पर भी सरकार का जोर है। अयोध्या में

राम मंदिर के बनने से यहां जमीनों के दाम 15 गुना बढ़े हैं। जो जमीन पहले 50 लाख रुपये एकड़ थी, अब पांच करोड़ रुपये एकड़ हो गई है। हाउस ऑफ अभिनंदन लोढ़ा के चेयरमैन बताते हैं, 2021 में उन्होंने 50 लाख के भाव से जमीन ली थी। इस साल जो उन्होंने अंतिम बिक्री की, वह पांच करोड़ रुपये थी। उनका मानना है, यूपी में अभी वृंदावन, वाराणसी, हिमाचल में शिमला और पंजाब में अमृतसर ऐसे शहर हैं, जहां जमीनों में निवेश के अपार मौके हैं। आंकड़े बताते हैं कि महाराष्ट्र के छोटे शहरों और गोवा में भी जमीनों पर अच्छा फायदा मिला है। उदाहरण के तौर पर महाराष्ट्र के दापोली में जनवरी 2023 से लेकर अब तक जमीनों पर 24 फीसदी रिटर्न मिला है। यहीं पर एक अन्य स्थान पर मई, 2021 से लेकर अब तक 29 फीसदी का रिटर्न मिला है। अलीबाग में पिछले साल अप्रैल से लेकर अब तक जमीनों के दाम 29 फीसदी तक बढ़ गए हैं। गोवा में अक्तूबर, 2022 से लेकर अब तक 36 फीसदी तक का लाभ मिला है।

जानकार बताते हैं कि जमीन खरीदते समय सावधानी बरतनी जरूरी है। आप किसी ब्रांडेड बिल्डर से जगह या प्रोजेक्ट लेते हैं तो आपको उसमें स्पष्ट टाइटल की जगह मिलेगी। साथ ही, सारी प्रक्रिया भी आसानी से और जल्दी होती है। आजकल डिजिटल का जमाना है तो बहुत सारे प्रोजेक्ट अब डिजिटली भी जांच किए जा सकते हैं।

अपना पैसाः बचत के 50-30-20 नियम से बजट बनाने में मिलेगी मदद, कमाई और खर्च के बीच संतुलन बनाने में काफी कारगर

नई दिल्ली, एजेंसी। भविष्य के वित्तीय लक्ष्यों के हासिल करने के लिए अपनी कमाई के अनुसार बजट बनाना हर व्यक्ति के लिए जरूरी है। इससे पता चलता है कि आप अपनी कमाई का कितना हिस्सा खर्च करते हैं और कितनी रकम बचाते हैं। बचत से आपकी वित्तीय सेहत का भी पता चलता है। इसके लिए खर्च और बचत के नियम 50-30-20 को समझना आवश्यक है। नियम के मुताबिक, हर व्यक्ति को अपनी कमाई का 50 फीसदी हिस्सा जरूरी चीजों पर खर्च करना चाहिए। 30 फीसदी हिस्सा लग्जरी या इच्छाओं पर खर्च किया जाना चाहिए। 20 फीसदी हिस्से का इस्तेमाल बचत या कर्ज चुकाने में किया जाना चाहिए। मान लीजिए, आपकी मासिक कमाई 80,000 रुपये है। इसे 50-30-20 नियम के मुताबिक तीन हिस्सों में बांट लें। 50 फीसदी हिस्से यानी 40,000 रुपये को घर के जरूरी खर्चों के लिए अलग रख दें।

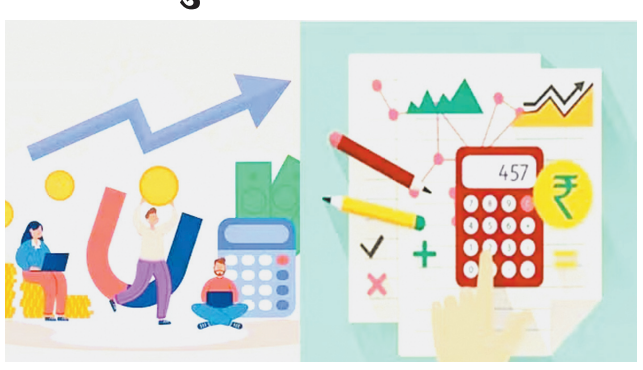

मैरिंगो सीआईएमएस हॉस्पिटल ने किया प्रोस्टेट कैंसर जागरूकता माह का आयोजन

अहमदाबाद । मैरिंगो सीआईएमएस हॉस्पिटल ने प्रोस्टेट कैंसर जागरूकता माह के उपलक्ष्य में प्रोस्टेट की अच्छी सेहत, शुरुआती चरण में पहचान और इलाज के अत्याधुनिक विकल्पों की अहमियत को उजागर किया, और समुदाय को पुरुषों की, खास तौर पर 60 साल से ज़्यादा उम्र के पुरुषों की सेहत से जुड़ी इस बड़ी समस्या से अवगत कराने के अपने संकल्प को और मजबूत किया है। प्रोस्टेट कैंसर जागरूकता माह के आरंभ होने के बाद से ही, मैरिंगो सीआईएमएस हॉस्पिटल ने प्रोस्टेट कैंसर के बारे में लोगों को बड़े पैमाने पर जागरूक करने और पुरुषों को अपनी सेहत के लिए एहतियाती कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित करने की मुहिम शुरू कर दी है। प्रोस्टेट कैंसर दुनिया भर में पुरुषों को अपनी चपेट में लेने वाले कैंसर के सबसे सामान्य प्रकारों में से एक है

फिनो बैंक ने घरेलू बचत को बढ़ावा देने के लिए गुल्लक बचत खाते का अनावरण किया

भोपाल । बैंकिंग को आसान सरल और सुविधाजनक बनाने के बाद फिनो पेमेंट्स बैंक अब ग्राहकों की बचत बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। ग्राहकों के लिए अधिक मूल्य बनाने के अपने प्रयासों को जारी रखते हुए फिनो बैंक ने आज गुल्लक नामक एक नया बचत खाता का अनावरण करने की घोषणा की है, जो ग्राहकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कई लाभ प्रदान करता है और उनकी बचत को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया है।

कोई भी व्यक्ति फिनो बैंक के मध्य प्रदेश राज्य में फैले लगभग 87000 मर्चेंट पॉइंट्स पर जाकर गुल्लक खाता खोल सकता है और इसके लाभों का आनंद ले सकता है। केवल 1000 रुपये के न्यूनतम बैलेंस के साथ गुल्लक खाताधारक को कोई वार्षिक योजना शुल्क नहीं देना होगा उन्हें नकद जमा करने पर कोई चार्ज नहीं लगेगा, गैर.मेट्रो स्थानों में 7 मुफ्त एटीएम ट्रांजेक्शन का लाभ मिलेगा और रुपे डेबिट कार्ड पर विशेष ऑफ़र मिलेंगे।

सार समाचार

मैच गंवाकर बोले सूर्यकुमार यादव
अभी 2 गेम बाकी हैं, बहुत सारा मनोरंजन बाकी है

गक्बेरहा (एजेंसी)। भारतीय टीम ने गक्बेरहा के मैदान पर दूसरा टी20 मुकाबला 7 विकेट से गंवा लिया। दक्षिण अफ्रीका के ट्रिस्टन स्टब्स और जेराल्ड ने अंतिम ओवरों में साझेदारी कर भारत के जबड़े से जीत छीन ली। इसी के साथ भारत की 11 मैचों से चल रही विजयी स्ट्रीक भी टूट गई। भारत ने टी20 विश्व कप में लगातार मुकाबले जीते थे। इसके बाद बांग्लदेश के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज में 3-0 से जीतने के बाद उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टी20 में जीत से ही शुरूआत की थी। सूर्यकुमार की टी20 में बतौर कप्तान यह केवल तीसरी हार ही है।

मैच गंवाने के बाद भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने कहा कि आपको जो भी कुल मिलता है उसका हमेशा समर्थन करना होता है। बेशक, टी20 मैच में आप 125 या 140 का स्कोर नहीं बनाना चाहते, लेकिन हमारे लड़कों ने जिस तरह से गेंदबाजी की, उस पर मुझे गर्व है। वरुण चक्रवर्ती की परफार्मेंस पर उन्होंने कहा कि यह टी20 गेम में 125 रन का बचाव करते मिले बेस्ट 5 विकेट है। यह अविश्वसनीय है। उन्होंने अपने खेल पर वास्तव में कड़ी मेहनत की। वह इस चरण का इंतजार कर रहे थे और सभी ने इसका आनंद लिया। उनका प्रदर्शन शानदार रहा है। अभी दो गेम बाकी हैं, बहुत सारा मनोरंजन बाकी है और जो-बर्ग में मजा आएगा।

महिला एसीटी हॉकी

अपनी धरती पर खिताब बरकरार रखने उतरेगी भारतीय टीम

राजगीर (बिहार) (एजेंसी)। पूरे साल खराब फॉर्म से जूझती रही भारतीय महिला हॉकी टीम नए ओलंपिक सत्र की शुरूआत अपनी धरती पर एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी (एसीटी) खिताब जीतकर करना चाहेगी और सोमवार को उसका पहला मुकाबला निचली रैंकिंग वाली मलेशियाई टीम से होगा। भारत ने अब तक सात बार हुए टूर्नामेंट में से सिंगापुर (2016) और रांची (2023) में खिताब जीते हैं। पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने में नाकाम रहने के बाद भारतीय टीम ने इस साल एफआईएच प्रो लीग में 16 में से 13 मैच गंवाए और सिर्फ दो जीते जबकि एक ड्रॉ रहा। भारत ने सलीमा टेटे की कप्तानी में मिली जुली टीम उतारी है जिसमें युवा और अनुभवी खिलाड़ी दोनों हैं। स्ट्राइकर नवनीत कौर उपकप्तान होंगी। भारत को मौजूदा ओलंपिक रजत पदक विजेता चीन, जापान, कोरिया, मलेशिया और थाईलैंड से चुनौती मिलेगी। भारतीय डिफेंस की कमान उदिता, ज्योति, इशिका चौधरी, सुशीला चानू और वैष्णवी विट्ठल फाल्के के हाथ में होगी।

मिडफील्ड में कप्तान टेटे के अलावा नेहा, शर्मिला देवी, मनीषा चौहान, सुनेलिटा टोप्पो और लालरेम्सियामी जिम्मा संभालेंगी। फॉरवर्ड पंक्ति में नवनीत , संगीता कुमारी, दीपिका , प्रीति दुबे और ब्यूटी डुंगडुंग पर जिम्मेदारी होगी। गोलकीपिंग में पूर्व कप्तान सविता और युवा बिछू देवी खारीबम पर नजरें रहेंगी। सुशीला और ब्यूटी फिटनेस समस्याओं से उबरकर टीम में वापसी कर रहीं हैं।

भारतीय टीम विश्व रैंकिंग में छठे स्थान पर काबिज चीन के साथ खिताब की प्रबल दावेदार के रूप में उतरेगी। दक्षिण कोरिया ने तीन बार और जापान ने दो बार खिताब जीते हैं। पेरिस ओलंपिक के लिये क्वालीफाई करने में नाकाम रही भारतीय महिला हॉकी टीम के लिये यह नई शुरूआत है। कोच हरेंद्र सिंह ने मैच से पूर्व प्रेस कांफ्रेंस में कहा, 'पेरिस ओलंपिक नहीं खेल पाना अब अतीत की बात है। हम उससे आगे निकलकर अब लॉस एंजिलिस 2028 ओलंपिक की तैयारी कर रहे हैं और उसके लिये यह पहला कदम है। काफी महत्वपूर्ण टूर्नामेंट है और हम जीत के साथ आगाज करना चाहेंगे।

वरुण टी-20 में 5 विकेट लेने वाले 5वें भारतीय गेंदबाज

अर्शदीप भारत के तीसरे टॉप विकेट टेकर, संजू चौथी बार शून्य पर आउट; रिकॉर्ड्स

गक्बेरहा (एजेंसी)। साउथ अफ्रीका ने दूसरे टी-20 में भारत को 3 विकेट से हराकर 4 टी-20 की सीरीज 1-1 से बराबर कर ली। मैच में एक समय भारत जीत के करीब पहुंच गया था, लेकिन ट्रिस्टन स्टब्स (47) और जेराल्ड कूट्जी के 19 रन की मदद से टीम ने मुकाबला अपने नाम किया।

मैच में कई रिकॉर्ड्स बने। संजू टी-20 इंटरनेशनल में भारतीय विकेटकीपर के तौर पर सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले बल्लेबाज बने, अर्शदीप ने विकेट के मामले में जसप्रीत बुमराह की बराबरी की।अभिषेक शर्मा अपनी आखिरी 8 में से 7 इनिंग के पावरप्ले में ही पवेलियन लौट गए। पिछली 3 इनिंग में उन्होंने 15 रन बनाए।वरुण चक्रवर्ती ने टी-20 में साउथ अफ्रीका के हेनरिक क्लासेन और ऐडन मार्करम को 3-3 बार आउट किया।

टी-20 में शून्य पर आउट होने वाले भारतीय विकेटकीपर

टी-20 इंटरनेशनल में किसी भी भारतीय विकेटकीपर के सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने के मामले में संजू सैमसन पहले नंबर पर पहुंच गए हैं। वे 16 इनिंग में 4 बार शून्य पर आउट हो चुके हैं। उनके बाद ऋषभ पंत हैं, जो 54 परियों में 4 बार शून्य पर आउट हुए। पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी 85 इनिंग में सिर्फ एक बार शून्य पर आउट हुए।

टी-20i में भारतीय गेंदबाजों के बेस्ट बॉलिंग

प्लेयर	परफॉरमेंस	खिलाफ	साल
युजवेंद्र चहल	6/25	इंग्लैंड	2017
कुलदीप यादव	5/17	साउथ अफ्रीका	2023
वरुण चक्रवर्ती	5/17	साउथ अफ्रीका	2024

भारतीय बल्लेबाज का टी-20 में सबसे कम स्ट्राइक रेट

हार्दिक ने किसी भी भारतीय बल्लेबाज ने 40 से ज्यादा बॉल खेलकर सबसे कम स्ट्राइक रेट से बैटिंग की। उन्होंने केबेरा में 45 बॉल पर नाबाद 39 रन बनाए। पारी में उनका स्ट्राइक रेट 86.67 रहा। इस मामले में पहले नंबर पर ईशान किशन हैं, उन्होंने 2022 में वेस्टइंडीज के खिलाफ 42 बॉल पर 35 रन बनाए थे। इस पारी में उनका स्ट्राइक रेट 83.33 रहा था।

अर्शदीप ने बुमराह की बराबरी की

भारत के लिए टी-20 इंटरनेशनल में सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में लेफ्ट आर्म पेसर अर्शदीप सिंह ने जसप्रीत बुमराह की बराबरी कर ली। बुमराह के 70 मैच में 89 विकेट हैं, जबकि अर्शदीप को 58 मैच में 89 विकेट मिले। पहले नंबर पर 96 विकेट के साथ ??स्पिनर युजवेंद्र चहल तो दूसरे नंबर पर 90 विकेट के साथ भुवनेश्वर कुमार हैं।

- **टी-20 में भारतीय गेंदबाजों की बेस्ट बॉलिंग** – वरुण चक्रवर्ती ने केबेरा में 17 रन देकर पांच विकेट लिए। वह टी-20 इंटरनेशनल में भारत के लिए बेस्ट बॉलिंग के मामले में दूसरे नंबर पर हैं। उनसे पहले कुलदीप यादव हैं, जिन्होंने साउथ अफ्रीका के ही खिलाफ 2023 में 17 रन देकर 5 विकेट लिए थे। पहले नंबर पर युजवेंद्र चहल हैं, जिन्होंने 2017 में इंग्लैंड के खिलाफ 25 रन देकर 6 विकेट लिए थे।
- **भारत के लिए टी-20 इंटरनेशनल में पांच विकेट** – वरुण चक्रवर्ती भारत के लिए टी-20 इंटरनेशनल में पांच विकेट लेने वाले सातवें गेंदबाज बन गए हैं। उनसे पहले युजवेंद्र चहल, भुवनेश्वर कुमार (दो बार), कुलदीप यादव (दो बार) और दीपक चाहर ने पांच विकेट लिए हैं।
- **टी-20 2024 में सबसे ज्यादा जीत** – भारत 2024 में टी-20 इंटरनेशनल मुकाबले में सबसे ज्यादा मैच जीतने वाली टीम है। इस साल टीम इंडिया ने 24 मैच खेले, जिसमें उन्हें 20 में जीत और 2 में हार मिली। दूसरे नंबर पर जापान है, जिन्होंने 25 मैच में 18 मुकाबले जीते हैं, जबकि उन्हें 6 में हार मिली।

क्रिकेटर संजय बांगड़ के बेटे ने कराया जेंडर चेंज

आर्यन से अयाना बना, लिखा- ताकत खो रहा हूं, पर खुशी मिल रही है

मुंबई (एजेंसी)। पूर्व भारतीय ऑलराउंडर संजय बांगड़ के बेटे आर्यन (अब अनाया) ने सोमवार को जेंडर चेंज (हार्मोनल ट्रांसफॉर्मेशन) का अनुभव साझा किया है। आर्यन ने 11 महीने पहले हार्मोन रिप्लेसमेंट थैरेपी कराई थी।

23 साल के आर्यन ने सोमवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा- ताकत खो रहा हूं, लेकिन खुशी पा रहा हूं। शरीर बदल रहा है, डिस्फोरिया (अवसाद, खुशी न होना जैसी स्थिति) कम हो रहा है... अभी भी लंबा रास्ता तय करना है, लेकिन हर कदम मुझे अपने जैसा लगता है।

आर्यन (अनाया) भी क्रिकेटर हैं। वे बाएं हाथ के बल्लेबाज है, जो एक लोकल क्रिकेट क्लब, इस्लाम जिमखाना के लिए क्रिकेट खेलते हैं। वे लीस्टरशायर में हिंकले क्रिकेट क्लब के लिए भी काफी रन बना चुके हैं।

ईसीबी के नियम से खत्म हुआ करियर – इंग्लिश एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड ने 20 अक्टूबर को ट्रांसजेंडर विमेंस को महिलाओं के प्रोफेशनल क्रिकेट से बैन कर दिया था। इसके चलते आर्यन (अनाया) अब विमेंस क्रिकेट में हिस्सा नहीं ले पाएंगे। आर्यन (अनाया) ने 27 अक्टूबर को ईसीबी की एडवाइजरी का स्क्रीनशॉट भी शेयर किया था।

इससे पहले उन्होंने एक पोस्ट में लिखा था- मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे उस खेल को छोड़ना पड़ेगा, जो मेरा जुनून और मेरा प्यार रहा है। लेकिन यहां मैं एक दर्दनाक वास्तविकता का सामना कर रही हूं। हार्मोन रिप्लेसमेंट थैरेपी कराकर एक ट्रांस महिला बनने के बाद मेरे शरीर में बहुत ज्यादा बदलाव आया है। मैं अपनी मांसपेशियों, ताकत, मांसपेशियों की याददाश्त और एथलेटिक क्षमताओं को खो रही हूं, जिन पर मैं कभी निर्भर थी। जिस खेल से मैं इतने लंबे समय से प्यार करती थी, वह मुझसे दूर होता जा रहा है।

हार्मोन रिप्लेसमेंट थैरेपी क्या है – इस प्रक्रिया में महिला या पुरुष के हार्मोंस में बदलाव करके उनके जेंडर में बदलाव किया जाता है। इसमें प्लास्टिक सर्जरी का सहारा भी लिया जाता है। भारत में इसे 2014 में मान्यता मिली थी। जेंडर चेंज सर्जरी की पूरी प्रक्रिया में कम से चार डॉक्टर, मनोरोग विशेषज्ञ, सर्जन, गाइनेकोलॉजिस्ट और एक न्यूरो सर्जन रहता है। डॉक्टर बताते हैं कि ये सर्जरी 21 साल से ज्यादा उम्र के लोगों पर ही की जाती है। इससे कम उम्र में माता-पिता की ओर से लिखित में सहमति लेने के बाद ही ऑपरेशन किया जाता है।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी पर गंभीर बोले

मैं दबाव में नहीं

पोंटिंग ऑस्ट्रेलिया देखें, इंडियन क्रिकेट से उन्हें क्या लेना-देना; रोहित-कोहली वापसी करेंगे

मुंबई (एजेंसी)। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले टीम इंडिया के कोच ने किसी तरह के दबाव से इनकार किया है। रिकी पोंटिंग के बयान पर उन्होंने कहा कि वे अपने क्रिकेट पर ध्यान दें। गंभीर ने टीम के ऑस्ट्रेलिया रवाना होने से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस की। गंभीर ऐसे समय में मीडिया के सामने थे, जब टीम इंडिया घर में ही न्यूजीलैंड से 3-0 से टेस्ट सीरीज हार चुकी है। गंभीर ने कहा, मैं किसी दबाव में नहीं हूं। टीम के सीनियर्स बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में वापसी करेंगे। अगर रोहित पर्थ टेस्ट में अवेलेबल नहीं रहते तो बुमराह कप्तानी कर सकते हैं। टीम इंडिया ऑस्ट्रेलिया में 5 टेस्ट मैच की सीरीज खेलेगी। शुरुआत पर्थ में 22 नवंबर से होगी। आखिरी टेस्ट 3-7 जनवरी के बीच खेला जाएगा।

5 चुनौतियों पर गंभीर के जवाब

1. विराट-रोहित पर कहा इनमें रनों के लिए गजब की भूख बाकी है – रोहित शर्मा और विराट कोहली ने न्यूजीलैंड के खिलाफ 3 मैचों की सीरीज में कुछ खास प्रदर्शन नहीं किया। न्यूजीलैंड ने क्लीन स्वीप किया। रोहित शर्मा ने 3 मैचों में टोटल 91 रन बनाए। कोहली का आंकड़ा 93 रन था। गंभीर ने कहा, इन दोनों में अभी परफॉर्मेंस और रनों के लिए गजब की भूख बाकी है। ऑस्ट्रेलिया में दोनों वापसी करेंगे। हमारे ड्रेसिंग रूम में कई शानदार प्लेयर्स हैं, जिन्होंने शानदार क्रिकेट खेली है।

2. रिकी पोंटिंग-पोंटिंग ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट पर ध्यान दें – ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने हाल में कोहली की फॉर्म पर कहा कि वे पिछले 5 साल में 2 शतक ही बना सके हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि टीम इंडिया बीजीटी में अच्छा खेल नहीं दिखा पाएगी और सभी मैच हारेगी। इस पर गौतम गंभीर ने कहा कि पोंटिंग ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट पर ध्यान दें, उन्होंने भारतीय क्रिकेट से क्या लेना-देना है।

3. न्यूजीलैंड से हार और प्रेशर – न्यूजीलैंड से टेस्ट सीरीज हार के बाद कुछ रिपोर्ट्स में यह दावा किया गया कि बीजीटी में गंभीर पर काफी दबाव होगा। अगर उन्होंने अच्छे नतीजे नहीं दिए तो उन्होंने भारतीय कोच पद से हटाया जा सकता है। दबाव के सवाल पर गंभीर ने कहा, मैं किसी दबाव में नहीं हूं। हम आलोचनाओं का सामना कर रहे हैं। हम इसे खुले तौर पर स्वीकारकर रहे हैं। हमें आगे बढ़ने की जरूरत है। ऑस्ट्रेलिया में हम नई सीरीज खेलने जा रहे हैं।

4. ऑस्ट्रेलियाई कंडीशन– कोच गंभीर ने कहा कि मैं खिलाड़ियों के ऑस्ट्रेलिया के माहौल में ढलने के बारे में नहीं सोच रहा हूं। ना ही टीम के ट्रांजिशन फेज के बारे में सोच रहा हूं। परिवर्तन हो या ना हो, मैं 5 टेस्ट मैच के बारे में सोच रहा हूं। हमारे ड्रेसिंग रूम में कुछ मजबूत किरदार हैं, जिनमें अच्छा करने की भूख है।

5. रोहित शर्मा – आशंका है कि निजी कारणों से रोहित शर्मा पर्थ में हो रहा पहला टेस्ट ना खेल पाएं। इस पर गंभीर ने कहा कि अगर रोहित नहीं खेलते हैं तो जसप्रीत बुमराह कप्तानी करेंगे। वे टीम के वाइस कैप्टन हैं। इस कंडीशन में रोहित की जगह केएल राहुल और अभिमन्यु ईश्वरन ओपनिंग कर सकते हैं।

पाकिस्तान की गेंदबाजी ने ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाजी की खामियों को उजागर किया : जेसन गिलेस्पी

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया में 22 साल बाद वनडे सीरीज जीतने के बाद पाकिस्तान के अंतरिम व्हाइट-बॉल हेड कोच जेसन गिलेस्पी ने कहा कि उनके गेंदबाजों ने मेजबान टीम की बल्लेबाजी लाइन-अप की कुछ खामियों को उजागर किया है। पर्थ में सीरीज के निर्णायक मैच में पाकिस्तान ने ऑस्ट्रेलिया को 140 रन पर ढेर कर दिया और फिर आठ विकेट शेष रहते हुए लक्ष्य हासिल कर सीरीज 2-1 से जीत ली।

गिलेस्पी ने कहा, हमने इस सीरीज में जो देखा, वह यह है कि हमारी गेंदबाजी ने ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजी की कुछ खामियों को उजागर किया। मुझे यकीन है कि ऑस्ट्रेलियाई कुछ गलतियों को सुधारने और कुछ चीजों में सुधार करने की कोशिश करेंगे। यही अच्छे खिलाड़ी और अच्छी टीमें करती हैं, आप सीखते हैं और खुद को ढालते हैं और अगली चुनौती के लिए तैयार रहते हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि पाकिस्तान को पता था कि पर्थ में उसके जीतने की प्रबल संभावना है, क्योंकि ऑस्ट्रेलिया ने कप्तान पैट कमिंस, जोश हेजलवुड, मिशेल स्टार्क, स्टीव स्मिथ और मार्नस लैबुशेन को आराम दिया था, ताकि वे तरोताजा होकर बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी की तैयारी कर सकें। उन्होंने कहा, %हमें पता था कि शायद कुछ बदलाव होने जा रहे हैं, क्योंकि हम जानते थे कि ऑस्ट्रेलिया के सामने क्या होने वाला है। आपके दिमाग में हमेशा यह बात रहती थी कि क्या वे पर्थ में 50 ओवर का मैच खेलने के लिए बड़े तेज गेंदबाजों को भेजेंगे। हमने इसकी उम्मीद की थी, और आधुनिक क्रिकेट की यही प्रकृति है और यह चयनकर्ताओं और कोचों पर निर्भर करता है कि वे अपने खिलाड़ियों को यथासंभव बेहतर तरीके से प्रबंधित करें।

उन्होंने कहा, ऑस्ट्रेलिया ने ऐसा करने का फैसला किया। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि तीन मैचों की यह एकदिवसीय श्रृंखला ऑस्ट्रेलिया के लिए सर्वोच्च प्राथमिकताओं में नहीं थी। पाकिस्तान के रूप में हम बस इतना कर सकते हैं कि हम सामने मौजूद विपक्षी टीम के खिलाफ खेलें और हमने यह वास्तव में अच्छा किया। ऑस्ट्रेलिया को हराना न केवल सुखद था, बल्कि उन्हें बहुत आसानी से हराना भी था। वास्तविकता यह है कि हमें पहला गेम भी जीतना चाहिए था।

पाकिस्तान अब ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन टी20 मैच खेलेगा और गिलेस्पी ने इस बात पर सहानुभूतिपूर्वक टिप्पणी की कि मेजबान टीम भारत के खिलाफ महत्वपूर्ण बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले अपने खिलाड़ियों के कार्यभार का प्रबंधन कैसे कर रही है। उन्होंने कहा, अपने खिलाड़ियों की यथासंभव प्रभावी ढंग से देखभाल और प्रबंधन करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि आप चाहते हैं कि वे जितना संभव हो उतना अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के लिए फिट और सक्रिय रहें, और कभी-कभी आपको कुछ खिलाड़ियों का प्रबंधन करना पड़ता है।

दूसरे टी-20 में तीन विकेट से हारा भारत

स्पिन फ्रेंडली ट्रैक पर स्पिनर के ओवर बचे रह गए, हारी हुई बाजी जीता साउथ अफ्रीका

केबेरा (एजेंसी)। साउथ अफ्रीका ने दूसरे टी-20 इंटरनेशनल में भारत को 3 विकेट से हरा दिया। टीम इंडिया ने टॉस गंवाकर पहले बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट पर 124 रन बनाए। साउथ अफ्रीका ने 125 रन का टारगेट 19 ओवर में 7 विकेट खोकर हासिल कर लिया। ट्रिस्टन स्टब्स ने नाबाद 47 रन की पारी खेली। वे इस लो-स्कोरिंग मुकाबले के टॉप रन स्कोरर रहे।

एक समय अफ्रीकी टीम 86 रन के स्कोर पर 7 विकेट गंवाकर स्ट्रगल कर रही थी। पिच से स्पिनर्स को मदद मिल रही थी और वरुण चक्रवर्ती ने 5 विकेट ले चुके थे। इसके बावजूद कप्तान सूर्यकुमार यादव ने डेथ ओवर्स तेज गेंदबाजों से बॉलिंग कराने का फैसला लिया। यह फैसला टीम पर भारी पड़ गया और स्टब्स और जेराल्ड कूट्जी (9 बॉल पर 19 रन) ने 8वें विकेट के लिए 20 बॉल पर 42 रन की नाबाद साझेदारी कर डाली। यहां भारतीय स्पिनर अक्षर पटेल के तीन ओवर बाकी रह गए।जेराल्ड कूट्जी ने 17वें ओवर में अर्शदीप सिंह के खिलाफ छक्का लगाकर मोमेंटम साउथ अफ्रीका की ओर मोड़ दिया।

स्टब्स की पारी ने भारत से छीना मैच – 125 रन का टारगेट चेज कर रही साउथ अफ्रीका ने संभलकर शुरुआत की। टीम ने 5 ओवर के बाद 32 रन के स्कोर पर एक ही विकेट गंवाया था। यहां से वरुण चक्रवर्ती ने 5 विकेट लिए और साउथ अफ्रीका को बैकफुट पर भेज दिया। यहां मेजबान टीम का स्कोर 66/6 हो गया। लेकिन, नंबर-4 पर बैटिंग करने उतरे ट्रिस्टन स्टब्स एक एंड पर खड़े हो गए, वे आखिर तक टिके रहे और 47 रन बनाकर टीम को जीत दिला दी। इस प्रदर्शन के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला।

हार के कारण – टॉप ऑर्डर का फेल होना- टॉस हारकर पहले बैटिंग करने उतरी टीम इंडिया का टॉप ऑर्डर बुरी तरह फ्लॉप रहा। संजू सैमसन खाता भी नहीं खोल सके, वहीं अभिषेक शर्मा और कप्तान सूर्यकुमार यादव 4-4 रन बनाकर आउट हो गए। टीम ने शुरुआती 3 विकेट 15 रन के स्कोर पर ही गंवा दिए थे।

6 विकेट गिरने के बाद ही टेल शुरू – शुरुआती विकेट जल्दी गिरने के बाद तिलक वर्मा, अक्षर पटेल और हार्दिक पंड्या ने पारी को संभाला। 87 रन पर भारत ने 6 विकेट गंवा दिए, यहां अर्शदीप सिंह बैटिंग करने उतरे, जिन पर हार्दिक भरोसा नहीं कर सके। उन्होंने कई सिंगल छोड़े, जिस कारण आखिरी 4 ओवर में टीम 31 रन ही बन सके। यहां हार्दिक आखिर में अकेले पड़ गए।

सूर्या की कमजोर कप्तानी – छोटे टारगेट के बावजूद भारत ने मैच में वापसी कर ली थी। टीम ने 16 ओवर में 88 रन पर साउथ अफ्रीका के 7 विकेट गिरा दिए थे। यहां स्पिनर अक्षर पटेल के 3 ओवर बाकी थे, जिन्होंने पहले ओवर में स्टब्स के खिलाफ 2 ही रन दिए थे। अक्षर की जगह सूर्या ने पेसर्स से गेंदबाजी करवाई गई।

गेमचेंजर ऑफ द मैच – 16वें ओवर में साउथ अफ्रीका ने 7वां विकेट गंवाया, यहां जेराल्ड कूट्जी बैटिंग करने आए। उन्होंने अर्शदीप सिंह और आवेश खान के खिलाफ 2 चौके और एक छक्का लगा दिया। उनकी बैटिंग ने नॉन-स्ट्राइकर एंड पर खड़े स्टब्स का काम आसान कर दिया। कूट्जी ने 9 गेंद पर 19 रन बनाए। उन्होंने पहली पारी में हार्दिक के खिलाफ आखिरी 2 ओवरों में महज 11 रन खर्च किए थे।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के ऑन करें
www.pratahkiran.com | epaper.pratahkiran.com
@Pratahkiran | @Pratahkiran

संक्षिप्त समाचार

भारत में इस्कोन को बैन कर देना चाहिए : मातृ प्रसाद मिश्रा

पुरी, एजेंसी। ह्युस्टन में 9 नवंबर को इस्कोन ने रथयात्रा का आयोजन किया था। इस रथयात्रा को लेकर इस्कोन की आलोचना हो रही है। दरअसल पहले ही इस्कोन ने ओडिशा सरकार और पुरी के गजपति महाराज को आश्वासन दिया था कि तय समय के अलावा रथयात्रा का आयोजन नहीं किया जाएगा। अमेरिका के ह्युस्टन में रथयात्रा निकाली गई जिसमें भगवान जगन्नाथ के नंदीघोष विराजमान थे। इसें भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियां नहीं रखी गई थीं। इस्कोन के फेस्टिवल ऑफ ब्लिस के दौरान ऐसा किया गया था। इसके बाद ओडिशा सरकार और श्रद्धालुओं ने भी इस कार्यक्रम की आलोचना की है। पुरी के गोवर्धन पीठ के प्रवक्ता मातृ प्रसाद मिश्रा ने कहा कि यह कार्यक्रम धर्म विरुद्ध था। उन्होंने कहा कि भारत में इस्कोन को बैन कर देना चाहिए। मिश्रा ने कहा, ह्युस्टन में इस्कोन ने लिखित में आश्वासन दिया था कि वे असमय रथ यात्रा का आयोजन नहीं करेंगे। उन्होंने हमारे धर्म के साथ साजिश की है। ओडिशा के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने कहा कि इस मामले में श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन ही कोई फैसला करेगा। हालांकि मंदिर जो भी निर्णय लेगा राज्य की सरकार उसका समर्थन करेगी। वहीं ह्युस्टन इस्कोन की तरफ से वेबसाइट पर बयान दिया गया कि पहले मंदिर ने प्रतिमाओं के साथ में रथ यात्रा करने का विचार किया था। हालांकि जब स्थानीय लोगों ने भी इसपर चिंता जाहिर की तो इस योजना में परिवर्तन किया गया। बयान में कहा गया कि उत्सव में आने वाले श्रद्धालु भगवान जगन्नाथ के दर्शन करना चाहते हैं। वहीं परंपरा का भी सम्मान करना जरूरी है। बयान में कहा गया, अगले महीने भारत में इस्कोन और पुरी के पदाधिकारोंयि के बीच में बैठक होगी और जो भी सहमति बनेगी उसके अनुसार कार्य किया जाएगा। पारंपरिक कैलेंडर और श्रद्धालुओं की इच्छा दोनों का ध्यान देते हुए कोई रास्ता निकाला जाना चाहिए।

करणी सेना का ऐलान - अनमोल बिश्नोई पर एक करोड़, तो गोल्डी बरार को मारने पर 51 लाख रुपये

अहमदाबाद, एजेंसी। राष्ट्रवादी कांग्रेस नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या के बाद लॉरेंस बिश्नोई पर नकद पुरस्कार की घोषणा करने वाले करणी सेना के अध्यक्ष राज शेखावत ने एक बार फिर बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि वह लॉरेंस के खिलाफ घोषित की गई नकद पुरस्कार राशि देने के फैसले पर आज भी अडिग हैं। राज शेखावत ने अपने एक्स अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है। उन्होंने कहा है, अतंकवादी अनमोल बिश्नोई, गोल्डी बरार, रोहित गोदारा, संपत नेहरा और वीरेंद्र चारण पर नकद पुरस्कार की घोषणा। आतंकी लॉरेंस की पुरस्कार राशि पर हम आज भी कायम है और आगे भी कायम रहेंगे। अनमोल बिश्नोई, गोल्डी बरार, रोहित गोदारा, संपत नेहरा और वीरेंद्र चारण की। इन आतंकवादियों पर भी नकद पुरस्कार की घोषणा क्षत्रिय करणी सेना द्वारा की जाती है। उन्होंने इनामी राशि की घोषणा करते हुए बताया, अनमोल बिश्नोई पर 1,00,00,000 रुपये- (एक करोड़), गोल्डी बरार पर 51,00,000 रुपये- (51 लाख), रोहित गोदारा पर 51,00,000 रुपये- (51 लाख), संपत नेहरा पर 21,00,000 रुपये- (21 लाख) और वीरेंद्र चारण पर 21,00,000 रुपये- (21 लाख)। राज शेखावत ने आगे कहा, अमर शहीद सुखदेव सिंह गोगामेड़ी के हत्यारों, साजिशकर्ताओं को ठोका जाएगा।

पश्चिम रेलवे चलाएगा विशेष किराये पर चार शीतकालीन स्पेशल ट्रेनें

वडोदरा, एजेंसी। ट्रेन में सफर करने वाले यात्रियों के लिए खुशखबरी है। पश्चिम रेलवे ने यात्रियों की सुविधा और अतिरिक्त भीड़ को संभालने के लिए विशेष किराये पर चार शीतकालीन स्पेशल ट्रेनें चलाने का फैसला किया है। यह ट्रेनें बांद्रा टर्मिनस-भुज, बांद्रा टर्मिनस-भुज-वलसाड, बांद्रा टर्मिनस-भुज तथा बांद्रा टर्मिनस-हिसार के बीच दौड़ेंगी। मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी विनीत अभिषेक द्वारा शनिवार को यहां जारी बयान के अनुसार, इन स्पेशल ट्रेनों की डिटेल इस प्रकार है। ट्रेन संख?या 09037/09038 बांद्रा टर्मिनस- भुज सुपरफास्ट स्पेशल [06 फेरे]; ट्रेन संख्या 09037 बांद्रा टर्मिनस-भुज सुपरफास्ट स्पेशल मंगलवार, गुरुवार और रविवार को बांद्रा टर्मिनस से रात 11:45 बजे रवाना होगी और अगले दिन 1:05 बजे भुज पहुंचेगी। यह ट्रेन 12, 14 और 17 नवंबर को चलेगी।

इसी तरह ट्रेन संख्या 09038 भुज-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल बुधवार, शनिवार और सोमवार को भुज से शाम 7 बजे रवाना होगी और

अगले दिन सुबह 9:45 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन 13, 16 और 18 नवंबर को चलेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, सूरत, वडोदरा, अहमदाबाद, हलवद, सामाख?याली और गांधीधाम स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास और द्वितीय श्रेणी के सामान्य डिब्बे होंगे।

ट्रेन संख?या 09029/09030 बांद्रा टर्मिनस- भुज - वलसाड सुपरफास्ट स्पेशल [02 फेरे]: ट्रेन संख्या 09029 बांद्रा टर्मिनस-भुज सुपरफास्ट स्पेशल बुधवार, 13 नवंबर को बांद्रा टर्मिनस से रात 11:25 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन दोपहर 2:30 बजे भुज पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09030 भुज-वलसाड सुपरफास्ट स्पेशल गुरुवार, 14 नवंबर को भुज से शाम 7 बजे चलेगी और अगले दिन सुबह 6:45 बजे वलसाड पहुंचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सूरत, वडोदरा, अहमदाबाद, हलवद, सामाख?याली और गांधीधाम स्टेशनों पर रुकेगी। ट्रेन संख्या 09029 का बोरीवली और वापी स्टेशनों पर अतिरिक्त ठहराव होगा। इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास और द्वितीय श्रेणी के सामान्य डिब्बे होंगे।

ट्रेन संख?या 09471/09472 बांद्रा टर्मिनस- भुज सुपरफास्ट स्पेशल [02 फेरे]: ट्रेन संख्या 09471 बांद्रा टर्मिनस-भुज सुपरफास्ट स्पेशल सोमवार, 18 नवंबर को बांद्रा टर्मिनस से दोपहर 12:45 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन सुबह 03:30 बजे भुज पहुंचेगी। इसी तरह, ट्रेन संख्या 09472 भुज-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल रविवार 17 नवंबर को भुज से शाम को 7 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन सुबह 9:45 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, सूरत, वडोदरा, अहमदाबाद, हलवद, सामाख?याली और गांधीधाम स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन में फर्स्ट एसी, एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास और द्वितीय श्रेणी के सामान्य डिब्बे होंगे।

हिमाचल के शिमला में बड़ा हादसा, धूं-धूं कर जलने लगे गांव के कई घर

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश में सर्दियों के मौसम में अग्निकांड की घटनाएं कोहराम मचाने लगी हैं। शिमला जिला के रोहडू उपमण्डल के स्मरकोट इलाके के सेरी गांव में भीषण अग्निकांड हुआ है। सोमवार तड़के करीब चार बजे गांव के एक घर में आग लग गई। आसमान चूमती लपटों ने देखते ही देखते साथ लगते घरों को जलाकर राख कर दिया। घरों की रसोई में रखे सिलेंडरों के ब्लास्ट होने से आग और भड़क गई।

आग से कपड़े, बिस्तर, बर्तन, खाद्यान्न समेत गृहस्थी का सारा सामान भी राख हो गया। लकड़ी के बने घरों से उठती आसमान चूमती लपटें देख पूरे गांव में हाहाकार मच गया। घरों में मौजूद लोगों ने भागकर जान बचाई। आग की जद में आये घरों के बगल के एक घर में शादी का आयोजन चल रहा था। आग ने पशुशालाओं को भी अपने आगोश में ले लिया।

इस घटना में एक गाय की जिंदा जलने से मौत हो गई। घंटों जूझने के बाद दमकल कर्मी आग पर काबू पा सके। दमकल की चार गाड़ियों को आग बुझाने में करीब साढ़े तीन घंटे लग गए। रोहडू से दो और चिड़गांव व जुब्बल से एक-एक दमकल वाहन ने आग पर काबू पाकर पूरे गांव को खाक होने से बचाया। आग में सब कुछ गंवा देने से कई परिवार अब खुले आसमान के नीचे आ गए हैं। आग लगने की वजह शार्ट सर्किट मानी जा रही है। प्रभावितों में कैलाश पुत्र शिव सरण, मोहन लाल पुत्र सोहन लाल और दो अन्य शामिल हैं। रोहडू के फायर ऑफिसर संजीव वर्मा ने बताया कि आग बुझाने के लिए तीन दमकल केंद्रों से चार दमकल वाहन बुलाए गए और आग को नियंत्रित कर लिया गया है। रोहडू के डीएसपी रविन्द्र नेगी ने बताया कि अग्निकांड की इस घटना में चार घर पूरी तरह से राख हुए हैं। हालांकि किसी तरह की जनहानि नहीं हुई है। पशुशाला में बंधी एक गाय की भी जिंदा जलने से मौत हुई है।

असदुद्दनी ओवैसी का फडणवीस पर हमला, बोले- हमारे पूर्वज अंग्रेजों से लड़े, आपके प्रेम पत्र लिख रहे थे

मुंबई, एजेंसी। ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने 'वोट जिहाद-धर्मयुद्ध' संबंधी टिप्पणी को लेकर भारतीय जनता पार्टी और महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पर रविवार को निशाना साधा और आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री मोदी का 'एक हैं तो 'सेफ' हैं' नारा भारत की विविधता के खिलाफ है। ओवैसी ने बीजेपी के आदर्श नेताओं पर इनडायरेक्ट करते हुए कहा कि फडणवीस के (वैचारिक) पूर्वजों ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के बजाय उन्हें 'प्रेम पत्र' लिखे थे।

फडणवीस ने 20 नवंबर को होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए प्रचार करते हुए शनिवार को कहा था कि 'वोट जिहाद' का जवाब मतों के 'धर्मयुद्ध' से दिया जाना चाहिए। ओवैसी ने चुनाव में एआईएमआईएम उम्मीदवार इम्तियाज जलील (औरंगाबाद पूर्व) और नासिर सिद्दीकी (औरंगाबाद मध्य) के समर्थन में छत्रपति संभाजीनगर के जिंसी इलाके में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, 'हमारे पूर्वजों ने अंग्रेजों के खिलाफ जिहाद किया था और फडणवीस अब हमें जिहाद के बारे में सिखा रहे हैं। नरेन्द्र मोदी, अमित शाह और देवेंद्र फडणवीस मिलकर भी मुझे बहस में नहीं हरा सकते।' ओवैसी ने कहा कि 'धर्मयुद्ध-जिहाद' संबंधी टिप्पणी चुनाव आचार संहिता का उल्लंघन है। हैदराबाद के सांसद ने कहा, 'लोकतंत्र में वोट जिहाद और धर्मयुद्ध कहां से आ गया? आपने विधायक खरीदे, क्या हम आपको चोर कहें?' उन्होंने कहा, 'फडणवीस जहां वोट जिहाद की बात करते हैं, वहीं उनके नायक अंग्रेजों को प्रेम पत्र लिख रहे थे, जबकि हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने विदेशी शासकों से कोई समझौता नहीं किया।' ओवैसी ने कहा, 'हमने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने का तरीका बताया। जब उन्हें (भाजपा को) मालेगांव में (लोकसभा चुनाव के दौरान) वोट नहीं मिले तो उन्होंने (फडणवीस) वोट जिहाद की बात की। जब उन्हें वोट नहीं मिलते।

महाराष्ट्र में क्या है 62 सीट वाला दांव, जिस पर भाजपा और कांग्रेस दोनों की नजर, होगी टाइट फाइट

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र की 288 विधानसभा सीटों में विदर्भ की भूमिका अहम होती है। राज्य में आम मान्यता है कि विदर्भ जिस ओर रुख करता है, सत्ता उसकी ही हो जाती है। यही वजह है कि कांग्रेस और भाजपा दोनों ही इस इलाके में जोर लगा रही हैं। भाजपा इस इलाके में मजबूत है तो वहीं महाविकास अघाड़ी के दलों में कांग्रेस का यहां जनाधार माना जाता है। फिर भी यहां चुनौती यह है कि इस इलाके की 62 सीटों में से 40 पर कांग्रेस और भाजपा के बीच सीधा मुकाबला है। इस तरह सीधे मुकाबले वाली ये सीटें काफी हद तक विदर्भ और पूरे महाराष्ट्र के ही नतीजे तय कर सकती हैं।

भाजपा के विदर्भ में जनाधार से पहले यहां कांग्रेस ही मजबूत दल हुआ करती थी। यह चुनाव तब हो रहा है, जब कांग्रेस ने इस इलाके की कई ऐसी लोकसभा सीटों पर जीत हासिल की है, जिन्हें भाजपा का गढ़ माना जाता था। अब यदि लोकसभा नतीजों को देखें तो इस इलाके की 42 सीटों पर कांग्रेस और उसके एमवीए गठबंधन को जीत मिली थी। कांग्रेस, शरद पवार और उद्धव सेना को उम्मीद होगी कि लोकसभा चुनाव वाला परिणाम इस क्षेत्र में दोहरा लिया जाए। खासतौर पर मुंबई-ठाणे क्षेत्र और विदर्भ पर महाविकास अघाड़ी की नजर होगी। ये इलाके भाजपा और शिंदे सेना के गढ़ हैं। ऐसे में यहां यदि एमवीए को बढ़त मिली तो नतीजा उसके पक्ष में हो सकता है।

विदर्भ वह क्षेत्र है, जो महाराष्ट्र ही नहीं बल्कि पूरे देश की वैचारिक दिशा तय करता है। एक तरफ महात्मा गांधी का सेवाग्राम वर्धा यहीं है तो नागपुर में संघ मुख्यालय है, जो हिंदुत्व की राजनीति का केंद्र बिंदु भी है। इसके अलावा यहीं पर भीमराव आंबेडकर की दीक्षाभूमि है, जो दलित और बौद्ध समाज के लिए श्रद्धा का केंद्र है। भाजपा के दो दिग्गज नेता नितिन गडकरी और देवेंद्र फडणवीस यहीं से आते हैं। इसके अलावा महाराष्ट्र कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले भी यहीं के रहने वाले हैं। इसलिए भी यहां टाइट फाइट के आसार हैं। इस क्षेत्र के परिणाम कई बड़े नेताओं की साख का सवाल भी बन सकते हैं।

हालांकि कांग्रेस के आगे चैलेंज बागी नेताओं का है। रविवार रात को ही कांग्रेस ने कुल 22 कैंडिडेट्स को बाहर का रास्ता दिखाया था, जो बागी होकर लड़ रहे हैं। विदर्भ में बागियों की बात करें तो कांग्रेस के सामने नागपुर सेंट्रल, कामटी, रालेगाव, सवनेर और वर्धा में चुनौती है। भाजपा के आगे भी इस इलाके में बागियों से लड़ने की चुनौती है।

सगाई टूटी तो अंगूठी पर किसका हक अमेरिका की कोर्ट ने पलटा 60 साल पुराना फैसला

मैसाचुसेट्स, एजेंसी। सगाई टूटी तो अंगूठी कौन रखे इस बेहद पेचीदा सवाल का जवाब अमेरिका में मैसाचुसेट्स की सबसे बड़ी अदालत ने दिया है। यहां की कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान इस पर अपना फैसला सुनाया है। मामले की सुनवाई के दौरान विवाद के केंद्र में 70,000 डॉलर यानी लगभग 60 लाख रुपए की एक अंगूठी थी। कोर्ट ने फैसला सुनाया है कि सगाई की अंगूठी पर इसके खरीदने वाले का हक है और उसे वापस कर दी जानी चाहिए। इससे पहले तक कोर्ट को यह पहचानने की कोशिश करनी पड़ती थी कि रिश्ते के अंत के लिए कौन जिम्मेदार है। इसके बाद अंगूठी को लेकर फैसला किया जाता था। अब कोर्ट ने 60 साल बाद यह नियम बदल दिया है। यह मामला ब्रूस जॉनसन और कैरोलिन सेटिनो से जुड़ा था। उन्होंने 2016 में डेटिंग शुरू की थी। इसके बाद वे पूरे अमेरिका और इटली में एक साथ घूमे। इस दौरान जॉनसन ने छुट्टियों का खर्च उठाया और सेटिनो को गहने, कपड़े, जूते और हैंडबैग भी दिए। जॉनसन ने कुछ दिनों बाद 70,000 डॉलर की हीरे की अंगूठी खरीदी और अगस्त

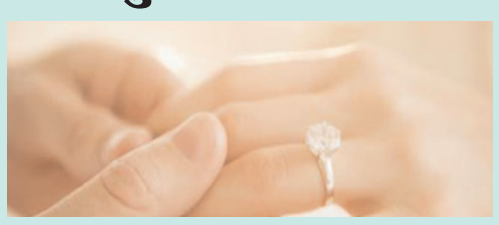

2017 में सेटिनो के पिता से उससे शादी करने की बात की। जॉनसन ने बताया कि उन्हें ऐसा लगा कि उसके बाद से सेटिनो लगातार उससे दूरी बनाने लगी। जॉनसन के मुताबिक जब उन्हें प्रोस्टेट कैंसर का पता चला तो वह उनके साथ इलाज के लिए अस्पताल भी नहीं जाती थी। इसके बाद जॉनसन को पता चला कि सेटिनो उन्हें धोखा दे रही थी। इस सब के बाद जॉनसन ने सगाई तोड़ दी। हालांकि अंगूठी को लेकर असमंजस की स्थिति थी। ट्रायल जज ने शुरुआत में यह निष्कर्ष निकाला कि सेटिनो सगाई की अंगूठी रखने का हकदार था। कोर्ट ने यह तर्क दिया कि जॉनसन ने सेटिनो पर उसे धोखा देने का गलत आरोप लगाया।

ट्रंप के जीतते ही शेख हसीना का बड़ा दांव, सड़कों पर उतरी आर्मी

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार को गिरे हुए लगभग तीन महीने हो चुके हैं। लेकिन आज भी वहां के हालात कमोबेश वैसे ही हैं। पहले कट्टरपंथियों ने देशभर में बवाल किया। उसके बाद बीएमपी के हजारों कार्यकर्ताओं ने देश की राजधानी में रैली निकाली और नए सिरे से चुनाव कराने व त्वरित सुधारों की मांग की। शेख हसीना की पार्टी आवामी लीग अंतरिम सरकार के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन करने की तैयारी में है। देखा जाए तो बांग्लादेश में तख्तापलट के बाद से ही हलचल मची हुई है। ढाका में तो आवामी लीग के कार्यकर्ताओं व समर्थकों पर पुलिस ने सख्ती भी बरती है। बांग्लादेश की सेना ने उनके प्रदर्शन से पहले सैकड़ों कार्यकर्ताओं को हिरासत में भी लिया है। कार्यकर्ताओं को रोकने के लिए बांग्लादेश की सेना-पुलिस स्कूल, कॉलेज और यूनिवर्सिटी के छात्रों ने कई इलाकों में बड़ा जमावड़ा किया हुआ है। बीएनपी और जमात ने घोषणा की है कि वो आवामी लीग को प्रदर्शन की अनुमति नहीं देंगे। ढाका पुलिस ने उन्हें विरोध रैली आयोजित करने की अनुमति नहीं दी है। देशभर में सेना की 191 टुकड़ियां तैनात की गई है। वहीं इस बीच सरकार के विभिन्न हलकों ने चेतावनी भी दी है कि आवामी लीग को विरोध मार्च आयोजित करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। अवामी लीग को फासीवादी करार देते हुए बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने कहा कि वह अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना की पार्टी को नियोजित रैली आयोजित करने की अनुमति नहीं देगी। मुख्य सलाहकार मुहम्मद यूनुस के प्रेस सचिव शफीकुल आलम ने एक फेसबुक पोस्ट में कहा कि अंतरिम सरकार देश में किसी भी हिंसा या कानून व्यवस्था को तोड़ने के किसी भी प्रयास को बर्दाश्त नहीं करेगी।

यूएस की कानूनी आव्रजन प्रणाली चरमरायी, अवैध शरणार्थियों को भेजेंगे उनके देश- रामास्वामी

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शीर्ष भारतीय-अमेरिकी सहयोगी विवेक रामास्वामी ने अवैध शरणार्थियों को उनके देश वापस भेजने की योजना का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि देश में कानूनी आव्रजन प्रणाली चरमरा गई है। अब समय आ गया है कि इसे ठीक किया जाए। उन्होंने कहा कि अमेरिका में प्रवेश करते वक्त कानून तोड़ने वाले लोगों को यहां रहने का कोई अधिकार नहीं है और उन्हें वापस अपने देश जाना होगा। उद्यमी से नेता बने रामास्वामी ने एबीसी न्यूज को दिए साक्षात्कार में कहा, 'क्या हमारे पास एक चरमरायी हुई कानूनी आव्रजन प्रणाली है हां, ऐसा ही है। मुझे लगता है कि पहला कदम कानून व्यवस्था बहाल करना होगा। इसे बहुत ही व्यावहारिक तरीके से करना होगा।' उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में जो लोग आए हैं, उन्होंने देश में जड़ें नहीं जमाई हैं। जिन लोगों ने भी अपराध किया है, उन्हें इस देश से बाहर जाना चाहिए। यानी कि लाखों की संख्या में। यह अपने आप में सबसे बड़ा सामूहिक प्रत्यर्पण होगा। रामास्वामी ने कहा कि सभी अवैध शरणार्थियों के लिए सरकारी सहायता बंद की जाएगी। आप देखेंगे कि लोग खुद देश छोड़कर चले जाएंगे। 5 नवंबर को हुए राष्ट्रपति चुनाव में ट्रंप की शानदार जीत के बाद पहली बार रामास्वामी रविवार को कई मीडिया कार्यक्रमों में दिखाई दिए। उन्होंने बताया कि वह प्रशासन में अपनी भविष्य की भूमिका को लेकर उच्च स्तर पर बातचीत कर रहे हैं। रिपब्लिकन पार्टी के प्राइमरी चुनाव में ट्रंप के प्रतिद्वंद्वी रहे रामास्वामी अब उनके कटु समर्थक व विश्वासपात्र बनकर उभरे हैं। रामास्वामी ने कहा, 'मुझे लगता है कि डोनाल्ड ट्रंप देश को एकजुट करने के बारे में सोचते हैं। मुझे लगता है कि यही ट्रंप का प्रमुख उद्देश्य है। उन्होंने पहले कार्यकाल से भी काफी कुछ सीखा है। मुझे लगता है कि वह दूसरे कार्यकाल में उन कुछ चीजों को नई ऊंचाइयों तक ले जाने जा रहे हैं जिन्हें वह पहले कार्यकाल में हासिल नहीं कर पाए थे। उन्होंने कहा कि इसे देखकर मुझे लगता है कि यह एक अच्छी बात होगी।

पाकिस्तानी सीमा पर खूनी जंग; आतंकी हमले में 5 बलूच ईरानी सैनिकों की मौत

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान में आतंकी हमलों की बढ़ती घटनाओं के बीच रविवार को पाकिस्तानी सीमा के पास हुए आतंकवादी हमले में 5 ईरानी सैनिकों की मौत हो गई है। ईरान की सरकारी न्यूज एजेंसी आईआरएनए ने अपनी एक रिपोर्ट में बताया कि मारे गए जवान अर्धसैनिक बल रिवोल्यूशनरी गार्ड के स्वयंसेवी बासिज बल के बलूच सदस्य थे। रिपोर्ट के मुताबिक हमला सिस्तान और बलूचिस्तान प्रांत के सरवन शहर में हुआ है। अब तक किसी भी समूह ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। इससे पहले ईरान ने बताया था कि रिवोल्यूशनरी गार्ड बलों ने एक सैन्य अभियान में तीन आतंकवादियों को मार गिराया था और नौ आतंकियों को गिरफ्तार किया था। रिपोर्ट में यह नहीं बताया गया कि संदिग्ध किस समूह से जुड़े हुए थे।

गौरतलब है कि पिछले महीने अज्ञात

बंदूकधारियों ने इलाके में यहां रिवोल्यूशनरी गार्ड के प्रमुख सहित चार लोगों की हत्या कर दी थी। इससे पहले सितंबर में दो अलग-अलग हमलों में सिस्तान और बलूचिस्तान प्रांत में चार सैनिकों की मौत हो गई थी। इन हमलों की जिम्मेदारी आतंकवादी समूह जैश अल-अदल ने ली थी। ये समूह जातीय बलूच अल्पसंख्यक के लिए अधिकारों की मांग करता है।

सरवन शहर ईरान की राजधानी तेहरान से लगभग 1,400 किलोमीटर दूर स्थित है। अफगानिस्तान और पाकिस्तान की सीमा पर स्थित इस इलाके में आतंकवादी समूहों, ड्रग तस्करों और ईरानी सुरक्षा बलों के बीच अक्सर झड़प होते हैं। वहीं यह ईरान के सबसे कम विकसित भागों में से एक है। यहां रहने वाले सुन्नी मुस्लिम और ईरान के शिया मुस्लिमों के बीच संबंध लंबे समय से तनावपूर्ण रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129